

नेपालपञ्चाङ्गनिर्णायकसमितिनिर्णीतगणितव्रतपर्वदिसहितम्

शररसाभनेत्र २०६५ मितविक्रमाब्दस्य नेपालदेशीय हिमाल-पञ्चाङ्गम्

राजा - चन्द्रः

श्रीशालिवाहनीयशकः १९३०

ईसवीय सन् २००८-०९

प्लवनाम संवत्सरः ३५



मन्त्री - सूर्यः

श्रीनेपालसंवत् १९२८-१९२९

कलेर्गताब्दाः ५१०९

पञ्चाङ्ग स्थापिताब्दाः ५५

श्री
पञ्चनाभ
२०४७

पञ्चाङ्गकर्ता- पं. प्राणनाथतनुज-

पञ्चनाभ त्रिपाठी सि.ज्यो.आचार्य

पोखरा-अर्घौ, लेखनाथ नगर-

पालिका वार्ड नं. ३ बुद्धी बजार

जि. कास्की, ग. अ. (नेपाल)

फोन नं. : ०६१-५६०१९४ (पोखरा)

०१-२०५०४५३ (काठमाण्डौ)

-: श्रीपञ्चनाभ तनुज :-

विश्वनाथ त्रिपाठीफलित ज्योतिषाचार्येण-सम्पादितम् ।

सन्तोष त्रिपाठीशर्मणा- प्रकाशितम् ।

श्रद्धापुष्पम्

येनाऽहं बहुपाठितोऽनवरतं त्रिस्कन्धकं ज्योतिषं-

पञ्चाङ्गं प्रचलत्यदो बहुदिनाद्येनैव संस्थापितम् ॥

स्वयति पितरि प्रसिद्धगणके श्रीप्राणनाथाभिधे

श्रद्धापुष्पसमर्पणं प्रकुरुते श्रीपञ्चनाभः सुतः ॥

मुद्रक : ज्योतिष प्रकाश प्रेस, भैलखाँ

तरना, वाराणसी, नं. ९९३५५००१७५

सूचना - पञ्चाङ्ग खरिदगर्दा यसमा टाँसिएको सरस्वतीको

चित्र भएको बहुरंगी होलोग्राम स्टिकर अवश्य हेर्नुहोला ।

पोखरा अर्घौ कालिका गा.वि.स. निवासि स्व. पं. प्राणनाथ-तनुज-पं.पञ्चनाभ त्रिपाठीशर्मणा-विरचितम्

मूल्य : रु. २०/-

नेपालदेशीय २४°१७'१३९" अयनांशीया निरयण प्रथमलग्नसारिणी, काष्ठमण्डपनगर्याः।

यत्राक्षांशाः २७°१४२', पलभा ६।१८ परमक्रान्तिः २३°१२६'१८" २०६५

| अंशाः | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| मेघः | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ० | ४९ | ५७ | ४ | १२ | १९ | २७ | ३४ | ४२ | ५० | ५७ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३६ | ४४ | ५२ | ० | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४१ | ५० | ५८ | ७ | १५ | २४ | ३२ | ४१ |
| वृषः | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| १ | ५० | ५९ | ७ | १६ | २५ | ३४ | ४४ | ५३ | २ | ११ | २१ | ३० | ३९ | ४९ | ५९ | ६ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५७ | ६ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५९ | ९ | १९ | ३० |
| मिथुनः | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| २ | ४१ | ५१ | २ | १३ | २३ | ३४ | ४५ | ५६ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५१ | ६ | १४ | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ६ | १८ | २९ | ४० | ५१ | ६ |
| कर्कटः | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ३ | १८ | २९ | ४१ | ५३ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ |
| सिंहः | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| ४ | ८ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ |
| कन्या | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| ५ | ५० | १ | १२ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ |
| तुला | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० |
| ६ | २९ | ४० | ५२ | ६ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ |
| वृश्चिकः | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| ७ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ |
| धनुः | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ |
| ८ | २ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० |
| मकरः | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| ९ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ० | १ | १८ | २७ | ३६ | ४५ | ५४ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ६ | १६ | २८ |
| कुम्भः | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ |
| १० | ३२ | ४० | ४८ | ५५ | ६ | ११ | १८ | २६ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ६ | ११ | १८ | २६ | ३३ | ४० | ४८ | ५५ | ६ | ११ | १८ | २६ | ३३ | ४० | ४८ | ५५ | ६ | ११ |
| मीनः | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| ११ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ६ | १० | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४६ | ५३ | ० | ७ | १५ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५१ | ५८ | ६ | १२ | २० | २७ | ३४ | ४२ |
| अंशाः | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |

अथ शुक्लपक्षे अग्निवास सारिणी

| ति. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| आ. | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व |
| सो. | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा |
| मं. | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू |
| बु. | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू |
| बृ. | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व |
| शु. | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा |
| श. | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू |

अथ कृष्णपक्षे अग्निवास सारिणी

| ति. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| आ. | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू |
| सो. | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व |
| मं. | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा |
| बु. | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू |
| बृ. | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू |
| शु. | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व |
| श. | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा | भू | भू | स्व | पा |

भू = भूमौ फलम् = सौख्यम् । पा = पाताले फलम् = धननाशः । स्व = स्वर्गे फलम् = प्राणनाशः ।

लग्न ल्याउदा :

कुनै ठाउँको इष्ट, समयको स्थानीय समय १ स्पष्ट सूर्य र २ स्पष्ट सूर्योदय ल्याए मात्र सामान्यतः स्वदेशीय लग्न सारिणीबाट इष्ट लग्न ल्याउनु पर्छ ।

वेलान्तरको सामान्य तालिका

यसमा कोष्ठ भित्र दिएको बेला अन्तर हो ।

(क) वैशाख ३ गते (± ०'०") देखि ज्येष्ठ २ गते (-३'४५")

(ख) आषाढ १ गते (± ०'०") देखि श्रावण ११ गते (+६'२५")

(ग) भाद्र १७ गते (± ०'०") देखि कार्तिक १५ गते (-१६'२३")

(घ) पौष ११ गते (०'०") देखि माघ २९ गते (+ १४'२१")

इष्ट दिन को वेलान्तर = (वेलान्तर को अन्तर) × (०'०")

वेला अन्तर को दिनदेखि इष्ट दिनसम्मको गन्ति) उपरोक्त

तालिकाको कुनै एक पंक्ति को कुल (Total) दिन गन्ति:

१. स्थानीय समय = स्ट्याण्डर्ड समय + (स्वदेशान्तर स्ट्याण्डर्ड समय देशान्तर)

२. स्पष्ट सूर्योदय = मध्यम सूर्योदय ± वेलान्तर।

विशेष द्रष्टव्यः

इष्ट वेलान्तर ± उक्त तालिका अनुसार हुनेछ।

श्री वि.सं. २०६५ श्री शाके १९३० ने.सं. ११२८ चैत्रशुक्लपक्षः (चौलाख्य) पा. पुन. ९ म. पूफा. (अप्रैल ४ सन् २००८) उत्तरायणं वसन्तर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः

| | ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|-----|----|-----|-----|-------|---------|------|------|---------|-----|-------|------|-------|-------|-------|---------|-------|-------|------|----|
| वै | १ | आ | ८ | २५/४९ | दि | ४/३ | पु | १५/४ | दि | ११/४५ | सु | १६/२८ | बा | ५३/४९ | ध्वजः | ०/४४ | ३१/४९ | ५/४३ | 13 |
| | २ | सो | ९ | २२/४ | दि | २/३२ | ति | १२/५८ | दि | १०/५४ | धृ | १०/३२ | तै | ५०/३२ | घाता | क | ३१/५३ | ५/४२ | 14 |
| | ३ | मं | १० | १९/१८ | दि | १/२५ | अ | ११/५० | दि | १०/२५ | शू | ५/२३ | व | ४८/१८ | आनन्दः | ११/५० | ३१/५७ | ५/४१ | 15 |
| | ४ | बु | ११ | १७/३९ | दि | १/२४ | म | ११/४७ | दि | १०/२३ | गं | १५/२४ | व | ४७/१५ | चरः | सिं | ३२/१ | ५/४० | 16 |
| श्र | ५ | वृ | १२ | १७/१३ | दि | १/२३ | पू | १२/५५ | दि | १०/४९ | ध्रु | ५५/२४ | कौ | ४७/२८ | गदः | २८/२३ | ३२/५ | ५/३९ | 17 |
| | ६ | शु | १३ | १८/४ | दि | १/२२ | उ | १५/१८ | दि | ११/४६ | व्या | ५४/५ | ग | ४८/५७ | शुभः | कं | ३२/८ | ५/३८ | 18 |
| | ७ | श | १४ | २०/११ | दि | १/२१ | ह | १८/५५ | दि | ११/२२ | ह | ५३/४२ | भ | ५१/४० | मृत्युः | ५१/९ | ३२/१२ | ५/३७ | 19 |
| र | ८ | आ | १५ | २३/२७ | दि | २/५ | चि | २३/४० | दि | ३/४ | व | ५४/१९ | बा | ५५/२७ | पदाः | तु | ३२/१६ | ५/३६ | 20 |

१३ भौमः ५०, घनिष्ठायाराहुरश्लेषायां कृतुः मकरेराहुः १
चैत्राष्टमीव्रतं (चैतेदशी), गोरखकालीपूजा, अशोककलिका १
श्रीरामनवमीव्रतं, त्रिशूलोरामयात्रा, श्रीरामजयन्ती, भ.पु. महा १
म. ४८/१८ उ. भ.पु. ब्रह्माणीयात्रा, १० काली महालक्ष्मीयात्रा
म. १७/३९ या., कामदा ११ व्रतं, भ.पु. छुमागणेशयात्रा,
प्रदोषव्रतं, भ.पु. भैरवभद्रकालीयात्रा, अश्विन्यां २ रविः १, पुनर्वसौ २ १
महावीरजयन्ती, १० मकरेगुरुः ३६/४५, वृषेसायनांकः २७,
म. २०/११ उ. ५१/४० या., पूर्णिमाव्रतं, भरण्यांबुधः ५३, उषायां २ १
देवीपूर्णिमा, देवीयात्रा, मन्वादिः, श्रीहनुमज्जयन्ती, वैशाख १

अथ श्रीशुभसंवत् २०६५ शक १९३०
श्रावणकृष्ण ३० तिथौ श्रावण १७ गते
शुक्रवासरे (१ अगस्त सन् २००८)
खण्डग्रासः मूर्यं ग्रहणम् ॥ तिष्यनक्षत्रे
कर्कटराशौ जातानामति कष्टम् ॥

स्पर्शादिकालाः
स्पर्शः ४/२२ वादने दिवा
मध्यः ५/२० " " "
मोक्षः ६/१३ " " "
सर्वपर्वः १ चं. ५१ मि.

अथ श्रीशुभसंवत् २०६५ शक १९३० श्रावणशुक्ल १५
तिथौ श्रावण ३२ गते शनि वासरे (१६-१७ अगस्त सन्
२००८) रात्रौ खण्डग्रासश्चन्द्रग्रहणम् ॥ धनिष्ठानक्षत्रे
मकरकुम्भराशौ जातानामतिकष्टम् ॥

१० एप्रान्नं, भवान्युत्पत्तिः, अश्विन्यां १ मेघेऽर्कः ३६/२४,
वैशाखसंक्रान्तिः, नववर्षारंभः, भ.पु. विश्वध्वजपातनं, रेवत्यां शुक्रः ५०,
श्रीमत्स्येन्द्रनाथस्नानं, रथयात्रा, (जवयात-खायुसल्लु)
१० कर्कटेकृतुः ४३/२९,
१० स्नानारंभः, बालाज्युमेला (ल्हुतिस्नानं, ल्हुतिपुन्हि), लमजुङ्ग
युलुङ्गपोखरीमेला, अश्विन्यां ३ रविः २६,

यो ग्रहणका
चित्रहरुमा
तत्कामा
जस्तै पूर्व
पश्चिम रहेको
छ।

श्रावण १६ गते रात्रि ४/२२ बजेवाट भोजनादि निषेध

॥ ग्रहण फलम् ॥

| मे | ४ | व्यथा | मे | १० | सुखम् |
|-----|----|-------------|-----|----|-------------|
| वृ | ३ | श्रीप्रातिः | वृ | ९ | माननाशः |
| मि | २ | क्षतिः | मि | ८ | कष्टम् |
| क | १ | घातः | क | ७ | स्त्रीपीडा |
| सिं | १२ | हानिः | सिं | ६ | सौख्यम् |
| कं | ११ | लाभः | कं | ५ | चिन्ता |
| तु | १० | सुखम् | तु | ४ | व्यथा |
| वृ | ९ | माननाशः | वृ | ३ | श्रीप्रातिः |
| घ | ८ | कष्टम् | घ | २ | क्षतिः |
| म | ७ | स्त्रीपीडा | म | १ | घातः |
| कुं | ६ | सौख्यम् | कुं | १२ | हानिः |
| मी | ५ | चिन्ता | मी | ११ | लाभः |

॥ ग्रहण फलम् ॥

स्पर्शादिकालाः
स्पर्शः १/२१ वादने रात्रौ
मध्यः २/५५ " " "
मोक्षः ४/२९ " " "
सर्वपर्वः ३ चं. ८ मि.

पापांशाः - श ३, रा ७ के १,
मं १, १ ग सू १, ५ गते सू २ मं
२, ५ ग रा ६ के १२, ८ ग सू ३,
वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा अ पू,
बृ मा उ, शु मा उ पू, श व उ
ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ ग सू १, ५ ग रा
१० के ४, ७ ग बु १०,

सामान्यतया सूर्यग्रहणमा ४ प्रहर अर्थात् १२ घण्टा तथा चन्द्रग्रहणमा ३ प्रहर अर्थात् ९ घण्टा
पूर्वदिशि ग्रहणको सूतक वार्नु पर्दछ। तर बाल, वृद्ध तथा विरामीमा यो नियम लागु नगर्दा
पनिहुन्छ, पथ्याहार लिन हुन्छ। ग्रहणकालमा भोजन, शयन, हास्यविनोद, मूर्तिस्पर्श सर्वथा निषेध
छ। अर्थात् समयमा देवपूजन, तर्पण, श्राद्ध, जप, होमादि गर्नु। छोडदै गएपछि यथाशक्ति दान,
छोडि कपडि शुद्धिस्नान तथा दान गर्नु पर्दछ।

| १ | सू. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| वै | ० | २ | ० | ८ | ११ | ४ | १० |
| १ | ० | २१ | १ | २९ | १६ | ८ | ० |
| ग | ० | १५ | ५२ | ३१ | २३ | ४९ | १३ |
| १ | ० | ७ | २५ | २७ | १७ | ११ | ६ |
| ३६ | ५८ | २८ | ११० | ५ | ७४ | २ | ३ |
| २४ | ४३ | ५२ | ६ | २१ | २४ | २२ | ११ |

| | | |
|------|---------|-------|
| २ | १२ | शु |
| ३ म | सू १ बु | ११ रा |
| ४ | १० | |
| के ५ | ७ | ९ बु |
| श | ६ | ८ |

१६ श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं. ११२८ वैशाखकृष्ण पक्षः (चौलागा) पा. वि. अं. मू. २२,२३ ध.भ. (अप्रैल ४ मई ५ सन् २००८) उत्तरायण वसंतर्तुः प्लवनामक संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|------|-------|------|-------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|
| १ | सो | १ | २७।४१ | दि | ४।४० | स्वा | २९।२१ | सा | ५।२० | सि | ५५।१५ | तै | ६०।० | छत्रः | तु | ३२।२० | ५।३५ | 21 |
| १० | मं | २ | ३२।३६ | सा | ६।३७ | वि | ३५।४० | रा | ७।५१ | व्य | ५६।४५ | तै | ०।६ | श्रीवत्सः | १९।३ | ३२।२४ | ५।३५ | 22 |
| ११ | बु | ३ | ३७।४९ | रा | ८।४१ | अ | ४२।१६ | रा | १०।२८ | व | ५८।२१ | व | ५।१३ | सौम्यः | वृ | ३२।२७ | ५।३४ | 23 |
| १२ | बु | ४ | ४२।५२ | रा | १०।४१ | ज्ये | ४८।४१ | रा | १।१ | प | ५९।४५ | ब | १०।२४ | कालः | ४८।४१ | ३२।३१ | ५।३३ | 24 |
| १३ | शु | ५ | ४७।२२ | रा | १२।२८ | मू | ५४।३२ | रा | ३।२१ | शि | ६०।० | कौ | १५।१४ | स्थिरः | घ | ३२।३५ | ५।३२ | 25 |
| १४ | श | ६ | ५०।५९ | रा | १।५४ | पू | ५९।३१ | रा | ५।१९ | शि | ०।४१ | ग | १९।१९ | मातङ्गः | घ | ३२।३८ | ५।३१ | 26 |
| १५ | आ | ७ | ५३।२९ | रा | २।५४ | उ | ६०।० | | समस्त | सि | ०।५२ | भ | २२।२४ | अमृतः | १५।३८ | ३२।४२ | ५।३० | 27 |
| १६ | सो | ८ | ५४।४५ | रा | ३।२३ | उ | ३।२७ | प्रा | ६।५२ | सा | ०।१३ | बा | २४।१८ | काणः | म | ३२।४५ | ५।२९ | 28 |
| १७ | मं | ९ | ५४।४४ | रा | ३।२२ | श्र | ६।७ | दि | ७।५५ | शु | ५५।५० | तै | २४।५६ | लुम्बः | ३६।५८ | ३२।४९ | ५।२८ | 29 |
| १८ | बु | १० | ५३।२८ | रा | २।५१ | घ | ७।३३ | दि | ८।२८ | ब्रं | ५२।१२ | व | २४।१६ | मित्रः | कुं | ३२।५२ | ५।२७ | 30 |
| १९ | बु | ११ | ५१।२ | रा | १।५१ | श | ७।४५ | दि | ८।३३ | ऐ | ४७।३७ | ब | २२।२४ | वज्रः | ५२।९ | ३२।५६ | ५।२७ | 1 |
| २० | शु | १२ | ४७।३३ | रा | १२।२७ | पू | ६।५१ | दि | ८।१० | वै | ४२।१३ | कौ | १९।२६ | ध्वांक्षः | मी | ३२।५९ | ५।२६ | 2 |
| २१ | श | १३ | ४३।१२ | रा | १०।४२ | उ | ४।५७ | दि | ७।२४ | वि | ३६।४ | ग | १५।२९ | धूम्रः | मी | ३३।३ | ५।२५ | 3 |
| २२ | आ | १४ | ३८।७ | रा | ८।३९ | रे | ३।१४ | प्रा | ६।१८ | प्री | २९।२० | भ | १०।४५ | वर्द्धः | २।१४ | ३३।६ | ५।२४ | 4 |
| २३ | सो | ३० | ३२।३१ | सा | ६।२४ | भ | ५५।० | रा | ३।२३ | आ | २२।९ | च | ५।३३ | चरः | मे | ३३।९ | ५।२३ | 5 |

[७] आमाको मुखहेर्नेदिन, भरण्यांशुकः २४,
 ल.पु. श्रीमत्स्येन्द्रनाथस्थानं (वुगन्हवं) विशालनगरे, [८] अश्विन्यां ४ रविः ५२,
 त्रिपुष्करः ३२।३६ या., [९] श्रीवैष्णवीदेवीयात्रा, [१०] श्रीवैष्णवीदेवीयात्रा,
 पुनर्वसौ ३ भौमः २५, अश्विन्यां १ मेषेशुकः ३६।१८ [११] भौमः ५०।२८
 [१२] १ रविः १८, कृत्तिकायां बुधः ३५, पश्चिमोदितो बुधः ३१,
 भ.५०।५९ उ., त्रिपुष्करः ५९।३१ उ., [१३] श्रीवैष्णवीदेवीयात्रा,
 भ.२२।२४ या., रवि ७ ब्र., त्रिपुष्करः ५३।२९ या., भरण्यां [१४] अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, [१५] भरण्यां ३ रविः ११,
 धनिष्ठापञ्चकप्रवृत्तिः ३६।५८, कृत्तिकायां वृषेबुधः ३७।४४,
 भ.२४।१६ उ. ५३।२८ या., भरण्यां २ रविः ४४, पुनर्वसौ ४ कर्कटे [१६] वरुथिनी ११ व्रतं, (मई ५ ता. ३१), श्रमदिवसः, [१७] शुकः ५९,
 [१८] हलोबाने, चांगुनारायण छिन्नमस्ताकिलेश्वरमूलरथयात्रा, [१९] भ.४३।१२ उ., शनिप्रदोषव्र. विश्वप्रेसस्वतंत्रतादिवसः, पूर्वास्तः [२०] भ.१०।४५ या., (माताति चः हेपूजा), घ.पञ्चकनिवृत्तिः २।१४, [२१] दर्शश्राद्धं, सोमवतीअमावास्या, मातृतीर्थस्थानं, निशी तथा [२२]

ग्रहशुभस्थानपूज्यस्थाननिन्दितस्थानचक्रम्
 ग्रह शुभस्थान पूज्यस्थान निन्दितस्थान
 सूर्य ३।६।१०।११ १।२।५।७।९ ४।८।१२
 चन्द्र २।५।७।९।११ १।२।५।९ ४।८।१२
 गुरु २।५।७।९।११ १।३।१०।६ ४।८।१२
 विवाहव्रतबन्धमा सूर्य-चन्द्र-बृहस्पति-जुराउँदा-
 व्रतबन्धगर्दा सूर्य-चन्द्र-गुरु जुराउने तरिका कर्मगरिने कुमार,
 वर, कन्याको राशिबाट गणना गर्नु पर्छ। कन्यालाई बृहस्पति
 कुमारलाई व्रतबन्धमा बृ.र.सू.जुराउनु। विवाहमा वर लाई
 बृ.जुराउनु पर्दैन सूर्यजुरे हुन्छ।
 चन्द्रमा सबैमा जुराउनु पर्छ ४।१२

पापांशाः - श ३, रा ६ के १२, ११
 ग सू ४, १२ ग मं ३, १५ ग सू ५,
 १८ ग सू ६ मं ४, २२ ग सू ७
 बक्रमागोदयास्तः - मं. सा. उ.,
 बु.मा.१५ उ.प., बु. मा.उ., शु.
 मा. २१ अ.पू., श. व. उ.
 ग्रहाणां राशिप्रवेशः
 १८ ग मं. ४, १२ गते
 शु. १, १७ ग. बु. २,

| | |
|-----------------------|---|
| पंचांग प्राप्ति स्थान | लक्ष्मी पुस्तक पसल अमरपथ, बुटवल ओजन बुक्स एण्ड स्टेशनर्स महेन्द्रपुल, पोखरा मनकामना बुक्स एण्ड स्टेशनर्स महेन्द्रपुल, पोखरा गणेश पुस्तक भण्डार सिलीगुडी, प० बंगाल (भारत) |
|-----------------------|---|

| ३ | सू. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. | ४ | सू. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| वै | ० | २ | ० | ९ | ० | ४ | ९ | वै | ० | ३ | १ | ९ | ० | ४ | ९ |
| १५ | १३ | २८ | २६ | ० | ३ | ८ | २९ | २२ | २० | २ | ७ | ० | १२ | ८ | २९ |
| ग | ३८ | १८ | ४२ | २७ | ४३ | २३ | २८ | ग | २५ | ० | ३८ | ४१ | २२ | १९ | ६ |
| १ | ४२ | ५१ | ४९ | ३६ | २१ | ५० | ३३ | १ | २७ | ० | १० | २९ | ३० | २१ | १६ |
| ३६ | ५८ | ३० | ९८ | २ | ७४ | ० | ३ | ३७ | ५७ | ३१ | ८५ | १ | ७४ | ० | ३ |
| ५८ | १२ | ५६ | २८ | ४८ | १५ | ५५ | ११ | १२ | ५८ | ४६ | ४२ | २७ | ९ | ८ | ११ |

| | | | | |
|------|---|---------|----------|----|
| ३ मं | २ | १ सू बु | १२ | ११ |
| ४ के | १ | शु | रा १० बु | |
| ५ श | ७ | | | ९ |
| ६ | | | | ८ |

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.११२८ वैशाखशुक्लपक्षः (वछलाध्व) पा. ति.अ.९ म.१६ वि.अ. (मई ५ सन् २००८) उत्तरायण वसन्तर्तुः, ग्रीष्मर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः १७

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|---------------|---------|--------------|------|---------|-------|-------|-------|---------------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|
| २४ | मं | १ | २६।३३ | दि | ४।० | कृ | ५०।५४ | रा | १।४४ | सौ | १४।३८ | बा | ५३।२९ | यदः | ९।१ | ३३।१३ | ५।२३ | 6 |
| २५ | बु | २ | २०।२७ | दि | १।३३ | रो | ४६।४५ | रा | १२।४ | शो | ६।५९ ५९।३८ | तै | ४७।२३ | शुभः | वृ | ३३।१६ | ५।२२ | 7 |
| २६ | वृ | ३ | १४।२४ | दि | ११।७ | मृ | ४२।४७ | रा | १०।२८ | सु | ५१।४९ | च | ४१।२७ | मृत्युः | १४।४५ | ३३।१९ | ५।२१ | 8 |
| २७ | शु | ४ | ८।३७ | दि | ८।४८ | आ | ३९।१० | रा | ९।१ | घृ | ४४।४१ | ब | ३५।५३ | पदाः | मि | ३३।२२ | ५।२१ | 9 |
| २८ | श | ५ | ३।१८ ५८।३६ | आ | ६।३५ ४।४६ | पु | ३६।७ | रा | ७।४७ | शू | ३८।१ | कौ | ३०।५२ | छत्रः | २१।४९ | ३३।२५ | ५।२० | 10 |
| २९ | आ | ७ | ५४।४४ | रा | ३।१३ | ति | ३३।४९ | सा | ६।५१ | गं | ३१।५८ | ग | २६।३४ | श्रीवत्सः | क | ३३।२८ | ५।१९ | 11 |
| ३० | सो | ८ | ५१।५१ | रा | २।३ | अ | ३२।२५ | सा | ६।१७ | वृ | २६।४० | भ | २३।१० | सौम्यः | ३२।२५ | ३३।३१ | ५।१९ | 12 |
| ३१ | मं | ९ | ५०।४ | रा | १।२० | म | ३२।५ | दि | ६।८ | घृ | २२।१३ | बा | २०।५० | कालः | सिं | ३३।३४ | ५।१८ | 13 |
| १ | बु | १० | ४९।३१ | रा | १।६ | पू | ३२।५६ | दि | ६।२८ | व्या | १८।४२ | तै | १९।३९ | स्थिरः | ४८।२० | ३३।३७ | ५।१७ | 14 |
| २ | वृ | ११ | ५०।१३ | रा | १।२२ | उ | ३५।१ | रा | ७।१७ | ह | १६।११ | व | १९।४३ | मातङ्गः | कं | ३३।४० | ५।१७ | 15 |
| ३ | शु | १२ | ५२।१२ | रा | २।९ | ह | ३८।२० | रा | ८।३६ | व | १४।४१ | व | २१।४ | अमृतः | कं | ३३।४३ | ५।१६ | 16 |
| ४ | श | १३ | ५५।२० | रा | ३।२४ | चि | ४२।४९ | रा | १०।२३ | सि | १४।९ | कौ | २३।३८ | काणः | १०।२७ | ३३।४५ | ५।१६ | 17 |
| ५ | आ | १४ | ५९।२६ | रा | ५।२ | स्वा | ४८।१७ | रा | १२।३४ | व्य | १४।२८ | ग | २७।१७ | लुम्बः | तु | ३३।४८ | ५।१५ | 18 |
| ६ | सो | १५ | ६०।० | | समस्त | वि | ५४।२८ | रा | ३।२ | व | १५।२९ | भ | ३१।४६ | मित्रः | ३७।५३ | ३३।५१ | ५।१५ | 19 |
| ७ | मं | १५ | ४।१४ | प्रा | ६।५६ | अ | ६०।० | समस्त | प | १६।५८ | बा | ३६।४६ | वज्रः | वृ | ३३।५३ | ५।१४ | 20 | |

| | | | | | |
|-------------------|-------------|--------------------------|---------------------|---------------|--------|
| श्रा. | लूमू | श्रीमहालक्ष्मीभैरवयात्रा | कानूनदिवसः | वि.रेडक्रसदि. | |
| चन्द्रोदयः | ल.पु.श्री | मत्स्येन्द्रनाथ | स्थारोहणं | ७ | |
| श्रीपरशुरामजयन्ती | भरण्यां | ४ | रविः ३८ | तिथे १ | भौमः ७ |
| भ.४१।२७उ. | अक्षयतृतीया | त्रेतायुगादिः | धर्मघटादिदानं | युगादि | ७ |
| भ.८।३७ | या. | ल.पु. | श्रीमत्स्येन्द्रनाथ | रथयात्रारंभः | ७ |
| वक्रौगुरुः | ५२ | ७ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | कृतिकायां | ३ | रविः २ |
| कृतिकायां | ३ | रविः २ | | | |

॥ श्री. लूभूश्रीमहालक्ष्मी भैरवयात्रा. कानूनदिवसः. वि. रेडक्रसदि., चन्द्रोदयः, ल. पु. श्री मत्स्येन्द्रनाथ स्थापरोहणं, ७ श्रीपरशुरामजयन्ती, भरण्यां ४ रविः ३८, तिथ्ये १ भौमः ७, भ. ४१।२७उ., अक्षयतृतीया, त्रेतायुगादिः धर्मघटादिदानं युगादि ७ भ. ८।३७ या., ल. पु. श्रीमत्स्येन्द्रनाथ रथयात्रारंभः, ७ वक्रोगुरुः ५२, ॥ १ ॥ कृत्तिकायां ३ रविः २, कृत्तिकायां २ वृषेशुक्रः ५४।४३, भ. ५४।४४ उ., रवि ७ व्रत, श्रीगङ्गोत्पत्तिः ७, गङ्गासप्तमी १ भ. २३।१० या., अष्टमीव्रतं गोरखकालीपूजा, श्रीपशुपतेर्दमनार्पणं, ७ श्रीसीताजयन्ती, तिथ्ये २ भौमः १६, ॥ १ ॥ कृत्तिकायां १ रविः ६, कृत्तिकायां २ वृषेशुक्रः ३३।३४, ज्येष्ठसंक्रान्तिः, ॥ २ ॥ अगस्त्यास्तः ५४, भ. १९।४३उ. ५०।१३ या., मोहिनी ११ व्रतं, विश्वपरिवारदिवसः, कोकाकौशिकी संगममा मत्स्यदर्शनं, कृत्तिकायां शुक्रः १२, शनिप्रदोषव्रतं, विश्वदूरसंचारदिवसः, ॥ ३ ॥ पर्व (किरातसमूहको), भ. ५९।२६उ., श्रीनृसिंहजयन्ती, स्याङ्गा लसर्घा आलमदेवीपूजा, ७ भ. ३१।४६ या., पूर्णिमाव्रतं कुर्मजयन्ती, तिथ्ये ३ भौमः १९, उभौली ७ चण्डीपूर्णमा, गौतमबुद्धजयन्ती, वन्दिकापुरे ७

अथ वैशाखशुक्लतृतीयायां कर्त्तव्य-विचारः -यसमा स्नान, दान जप-तप जो गरिन्ध त्यसको अक्षयफल हुन्छ, यसैले अक्षय तृतीया नाम रहेको हो। पितृतर्पण युगादि श्राद्ध यवाचन यवदान यव (जौ) को सत्तु व्यंजनादि गर्मीयाममा हितकर-क्षत्र उपानह दण्ड कमण्डल खराँऊ इत्यादि दान गर्नाले स्वर्ग मिल्दछ। वैशाखमासे नियमाः -वैशाखमा एकभक्त वा नक्त अयाचित कुनै नियमले भोजन, प्रातः स्नान दान पिपल-दर्शन पूजन प्रदक्षिणा जलार्पण, गौ सेवा गर्नाले पापनाशभै कुलको उद्धार हुन्छ।

- ॥ १ ॥ (वृंगद्यः रथय् लैगुं), किराँतसमाजसुधारदिवसः, त्रिपुष्करः २६।३३ उ. ५०।५४ या., रोहिण्यांबुधः १८, मार्गी शनिः ४१,
- ॥ २ ॥ श्रीआद्यशंकराचार्यजयन्ती, रामानुजजयन्ती,
- ॥ ३ ॥ चण्देश्वरीरथयात्रा, वैशाखस्नानसमाप्तिः (स्वाशुपुन्ति), घाटुनृत्यविसर्जन, मृगशीर्षेबुधः ४६, मिथुनेसायनाऽर्कः ३०,

पार्षाणाः -श ३, रा ६ के १२, २५ ग सू ८ मं ५, २९ ग सू ९, ३१ ग मं ६, १ सू १०, ५ ग सू ११, ६ ग मं ७

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा उ प, बु २८ गते व उ, शु मा अ पू, श २४ मा उ, ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ ग सू २, ५ ग सू २

| ५ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| वै | ० | ३ | १ | ९ | ० | ४ | ९ |
| २९ | २७ | ५ | १६ | ० | २१ | ८ | २८ |
| ग | १० | ४६ | ३६ | ४५ | १ | २० | ४४ |
| १ | ३६ | १५ | ३२ | २६ | १ | ३१ | ० |
| ३७ | ५७ | ३२ | ६५ | ० | ७४ | ० | ३ |
| २४ | ४३ | ३१ | १ | ३ | ४ | ३८ | ११ |

| ६ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| ज्ये | १ | ३ | १ | ९ | ० | ४ | ९ |
| ५ | ३ | ९ | २२ | ० | २९ | ८ | २८ |
| ग | ५४ | ३७ | २५ | ३९ | ३८ | २७ | २१ |
| १ | १५ | १ | ३० | १८ | ५३ | २० | ४४ |
| ३७ | ५७ | ३३ | ३२ | १ | ७३ | १ | ३ |
| ३४ | ३२ | १० | ५३ | २२ | ५९ | २४ | ११ |

| | | |
|---------|---------|----|
| २ बु | १२ | ११ |
| ३ | सू १ शु | ११ |
| मं ४ के | बु १० | रा |
| ५ श | ७ | ९ |
| ६ | ८ | |

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.११२८ ज्येष्ठकृष्णपक्षः (वछलागा) पा. अनु.ज्ये.अभि. २२,२३ ध.भ.रो. (मई ५ जून ६ सन् २००८) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|------|-------|------|-------|-------|-------|---------|-------|-------|------|----|--|
| ८ | बु | १ | १२० | दि | ८।५८ | अ | १।२ | प्रा | ५।३९ | शि | १८।३७ | तै | ४१।५१ | सौम्यः | वृ | ३३।५६ | ५।१४ | 21 | कृत्तिकायां ४ रविः ३१, |
| ९ | बु | २ | १४।१८ | दि | १०।५७ | ज्ये | ७।३१ | प्रा | ८।१४ | सि | २०।८ | व | ४६।३५ | कालः | ७।३१ | ३३।५८ | ५।१३ | 22 | भ. ४६।३५ उ., |
| १० | शु | ३ | १८।४३ | दि | १२।४२ | मू | १३।३० | दि | १०।३७ | सा | २१।१३ | ब | ५०।३७ | स्थिरः | घ | ३४।१ | ५।१३ | 23 | भ. १८।४३ या., वक्राबुधः ३७, |
| ११ | श | ४ | २२।१७ | दि | २।७ | पू | १८।४२ | दि | १२।४१ | शु | २१।३७ | कौ | ५३।३९ | मातङ्गः | ३४।५० | ३४।३ | ५।१३ | 24 | रोहिण्यां १ रविः ५९, |
| १२ | आ | ५ | २४।४५ | दि | ३।६ | उ | २२।५० | दि | २।२० | शु | २१।११ | ग | ५५।३१ | अमृतः | म | ३४।५ | ५।१२ | 25 | तिष्ये ४ भौमः १७, [७] अश्लेषायां १ भौमः १०, |
| १३ | सो | ६ | २५।५९ | दि | ३।३५ | श्र | २५।४६ | दि | ३।३० | ब्रं | १९।४७ | भ | ५६।६ | सिद्धिः | ५६।४६ | ३४।७ | ५।१२ | 26 | भ. २५।५९ उ. ५६।६ या., घ.पं.प्र.५६।४६, पश्चिमास्तोबुधः २४, [७] |
| १४ | मं | ७ | २५।५६ | दि | ३।३४ | घ | २७।२७ | दि | ४।११ | ऐं | १७।२३ | बा | ५५।२५ | उत्पातः | कुं | ३४।९ | ५।१२ | 27 | भौमाष्टमीव्रतं, द्विपुष्करः २५।५६ या., रोहिण्यां शुक्रः २, [७] |
| १५ | बु | ८ | २४।३७ | दि | ३।२ | श | २७।५५ | दि | ४।२१ | वै | १३।५९ | तै | ५३।३१ | मानसः | कुं | ३४।११ | ५।११ | 28 | गोरखकालीपूजा, रोहिण्यां २ रविः २९, [७] रोहिण्यांबुधः २८, |
| १६ | बु | ९ | २२।९ | दि | २।३ | पू | २७।१४ | दि | ४।५ | वि | १३।८ | व | ५०।३१ | मुद्गरः | १२।३० | ३४।१३ | ५।११ | 29 | भ. ५०।३१ उ., [७] सौरात् शुभकृत्तमकसंवत्सरः प्रवेशः १५, |
| १७ | शु | १० | १८।३९ | दि | १२।३८ | उ | २५।३२ | दि | ३।२४ | प्री | ४।२५ | ब | ४६।३३ | ध्वजः | मी | ३४।१५ | ५।११ | 30 | भ. १८।३९ या., [७] रोहिण्यां ३ रविः ५८, [७] |
| १८ | श | ११ | १४।१५ | दि | १०।५३ | रे | २२।५८ | दि | २।२२ | सौ | ५१।५१ | कौ | ४१।४६ | घाता | २२।५८ | ३४।१७ | ५।११ | 31 | अपरा ११ व्रतं, घ.पं.नि.२२।५८, विश्वधूम्रपानरहितदिवसः, [७] |
| १९ | आ | १२ | ९।८ | दि | ८।४९ | अ | १९।४२ | दि | १।३ | शो | ४४।४५ | ग | ३६।२१ | आनन्दः | मे | ३४।१९ | ५।१० | 1 | प्रदोषव्रतं, पुनः उषायां १ धनुर्षिगुरुः ३।५१, (जून ६ ता. ३०), |
| २० | सो | १३ | ३।२८ | प्रा | ६।३३ | भ | १५।५६ | दि | ११।३३ | अ | ३७।२० | भ | ३०।२९ | चरः | २९।५६ | ३४।२० | ५।१० | 2 | भ. ३।२८ उ. ३०।२९ या., (सिथिचहेपूजा), |
| २१ | मं | ३० | ५।१६ | रा | १।४० | कृ | ११।५२ | दि | ९।५५ | सु | २९।४२ | च | २४।२२ | गदः | वृ | ३४।२२ | ५।१० | 3 | दर्शश्राद्धं, निशीबार्ने एवं हलोबार्ने, वटसावित्री ३० व्रतम्, |

वटसावित्री व्रत - ज्येष्ठकृष्ण त्रयोदशीबाट प्रारम्भ भएर अमावास्यामा पूरा हुन्छ। यसमा सावित्री-सत्यवान्को मूर्ति बनाई बेसार, चन्दन, अक्षता, फूल, ताम्बूल, कुंकुम र सिन्दूरले पूजा गरी वरको वृक्षलाई काँचो धागोले एकसय आठ वा सात वा पाँचपटक बेरी प्रदक्षिणा गर्दै यो मन्त्र पढ्नु - जगत्पूज्ये जगन्मातः सावित्री पतिदेवते। पत्यासहावियोगं मे वटस्थे कुरुते मम॥ त्यसपछि यो स्तोत्र पाठ गर्नु - वटमूले स्थितो ब्रह्म वटमध्ये जनार्दनः। वटाग्रे तु शिवो देवो सावित्री वटसंश्रिता॥ (यो व्रत गर्नाले वैधव्य दोष निवारण हुन्छ भन्ने शास्त्रीय वचन र परम्परा रहँदै आएको छ)। कुनै पनि अमावास्याको रात्रिमा भोजन नगर्नु, उक्तञ्चः दशजन्मानि गृह्ण्य द्वादशी जन्म शूकरः॥ सप्तजन्मानि धानश्च ह्यमायां निशिभोजनात्। तर बाबुआमा हुनेहरूले औसो बार्नु पर्दैन।

पापांशः - श ३, रा ६ के १२, ८ ग सू १२, ११ ग सू १, १२ ग मं ८, १७ ग सू २, १८ गते सू ३ मं ९, वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु १० व १३ अ प, बु व उ, शु मा अ पू, श मा उ, ग्रहाणां राशिप्रवेशः - १९ ग बु ९

| पंचांग प्राप्ति स्थान | साजन स्टोर्स बुटवल | मंजूश्री इन्टरप्राइजेज कोहलपुर | ज्ये | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. | ज्ये | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|--|-------------------------------|---|------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| जगन्निधि आचार्य दुर्गामन्दिर, मोरह, मनिपुर | तेजप्रसाद शर्मा बयलपाटा, अछाम | विद्या कुटिरे उर्लावारी, मोरङ्ग | १ | ३ | १ | ९ | १ | ४ | ९ | १२ | १० | १३ | २३ | ० | ८ | ८ | २७ | १९ |
| दिव्यज्योति पुस्तक पसल राममन्दिर, बुटवल | | लक्ष्मीभक्त रामजी श्रेष्ठ शीलगाढी, डोटी | ३६ | ३१ | २३ | २३ | १६ | २९ | ५९ | १ | ३१ | ४५ | ३७ | १३ | ५ | ४४ | २८ | १ |
| | | | ३७ | ५७ | ३३ | ९ | २ | ७३ | २ | ३ | ३७ | ५७ | ३४ | ४० | ४ | ७३ | २ | ३ |
| | | | ४२ | २१ | ४५ | ३६ | ४५ | ५३ | ९ | ११ | ४६ | ११ | १६ | ५४ | ३ | ४८ | ५३ | ११ |

| | | | |
|------|---|----|-------|
| के ४ | ३ | १ | १२ |
| मं | ५ | ११ | १० रा |
| ६ | ८ | ९ | बु |
| ७ | | | |

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.११२८ ज्येष्ठशुक्लपक्षः (तछलाख) पा. रो.श्ले.९ म. वि. अनु. (जून ६ सन् २००८) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः

१९

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|--------------|-------|------------|------|--------------|-------|---------------|-----------|-------|-------|-----|----|
| २२ | बु | १ | ४५८ | रा | १११३३ | रो | ७४१ | दि | ८१४ | धृ | २२३ | किं | १८११ | शुभः | ३५३७ | ३४१२३ | ५१० | 4 |
| २३ | बु | २ | ३९१६ | रा | ८५२ | मृ | ३३७ ५९१५३ | प्रा | ६३७ ५१७ | शू | १४३३ | बा | १२१० | मृत्युः | मि | ३४१२५ | ५१० | 5 |
| २४ | शु | ३ | ३३५१ | रा | ६४२ | पु | ५६४० | रा | ३४९ | गं | ७१२१ | तै | ६३० | लुम्बः | ४२१२४ | ३४१२६ | ५१० | 6 |
| २५ | श | ४ | २९१३ | सा | ४४७ | ति | ५४१९ | रा | २४९ | वृ | ०३५ ५४१२५ | व | ११२३ ५६१५७ | मित्रः | क | ३४१२७ | ५१० | 7 |
| २६ | आ | ५ | २५४ | दि | ३११ | अ | ५२३० | रा | २१० | व्या | ४८१५८ | कौ | ५३१२५ | वज्रः | ५२३० | ३४१२८ | ५१० | 8 |
| २७ | सो | ६ | २२१२ | दि | १५८ | म | ५१५४ | रा | १५५ | ह | ४४१२१ | ग | ५०५६ | ध्वांक्षः | सिं | ३४३० | ५१० | 9 |
| २८ | मं | ७ | २०७ | दि | ११२ | पू | ५२१२६ | रा | २१८ | व | ४०३९ | भ | ४९३६ | धूम्रः | सिं | ३४३१ | ५१० | 10 |
| २९ | बु | ८ | १९१२४ | दि | १२५५ | उ | ५४१२२ | रा | २५० | सि | ३७५७ | बा | ४९३१ | वर्द्धः | ७४६ | ३४३१ | ५१० | 11 |
| ३० | बु | ९ | १९१५७ | दि | १८ | ह | ५७१३३ | रा | ४३ | व्य | ३६१६ | तै | ५०४३ | रक्षः | कं | ३४३२ | ५१० | 12 |
| ३१ | शु | १० | २१४६ | दि | १५२ | चि | ६०१० | समस्त | व | ३५३३ | व | ५३७ | मुसलः | २९११ | ३४३३ | ५१० | 13 | |
| ३२ | श | ११ | २४४५ | दि | ३४ | चि | १२५ | प्रा | ५४४ | प | ३५४४ | व | ५६३८ | काणः | तु | ३४३४ | ५१० | 14 |
| ३ | आ | १२ | २८४३ | दि | ४३९ | स्वा | ६४० | दि | ७४९ | शि | ३६३९ | कौ | ६०१० | लुम्बः | ५६७ | ३४३४ | ५१० | 15 |
| ४ | सो | १३ | ३२१२३ | सा | ६३१ | वि | १२४१ | दि | १०१४ | सि | ३८५ | कौ | ०५९ | मित्रः | वृ | ३४३५ | ५१० | 16 |
| ५ | मं | १४ | ३८१२४ | रा | ८३१ | अ | १९१९ | दि | १२५० | सा | ३९४५ | ग | ५५३ | वज्रः | वृ | ३४३५ | ५१० | 17 |
| ६ | बु | १५ | ४३१९९ | रा | १०१२९ | ज्ये | २५४० | दि | ३१२६ | शु | ४१२० | भ | १०५४ | ध्वांक्षः | २५४० | ३४३५ | ५१० | 18 |

अथदशहरास्नानम्-यो प्रतिपदादेखि दशमोसम्म दशहरा हुन्छ, यसमा प्रतिदिन असमर्थ भयेमा दशमीमा मात्र भए पनि गंगा नदी वा जलाशयमा स्नान गरी गंगापूजा गर्नु। तन्मन्त्रः-नमोभगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै ते नमोनमः॥ औषधी सेवन मन्त्रः-अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चारणभेषजात्। नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्। धन्वन्तरिर्वृकोदासः काशिराजश्च वीर्यवान्।
नकुलः सहदेवश्च पञ्चैते व्याधिघातकाः॥ शरीरञ्च नवच्छिद्रं व्याधिगस्तं कलेवरम्।
औषधिर्जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः॥ ज्येष्ठ पूर्णिमाका दिन दक्षिणासहित तिलदान गरे अश्वमेध यज्ञ समान फल मिल्ने शास्त्रमा बताइएको छ।

पापांशाः-श ३, रा ६ के १२, २२ ग सू ४, २३ ग मं १०, २५ ग सू ५, २९ ग सू ६, मं ११, ३२ ग सू ७, ३ ग मं १२, ४ ग सू ८, ४ ग श ४, ५ ग उ, ६ ग अ, ७ ग इ, ८ ग ए, ९ ग औ, १० ग आ, ११ ग इ, १२ ग ए, १३ ग औ, १४ ग आ, १५ ग इ, १६ ग ए, १७ ग औ, १८ ग आ, १९ ग इ, २० ग ए, २१ ग औ, २२ ग आ, २३ ग इ, २४ ग ए, २५ ग औ, २६ ग आ, २७ ग इ, २८ ग ए, २९ ग औ, ३० ग आ, ३१ ग इ, ३२ ग ए, ३३ ग औ, ३४ ग आ, ३५ ग इ, ३६ ग ए, ३७ ग औ, ३८ ग आ, ३९ ग इ, ४० ग ए, ४१ ग औ, ४२ ग आ, ४३ ग इ, ४४ ग ए, ४५ ग औ, ४६ ग आ, ४७ ग इ, ४८ ग ए, ४९ ग औ, ५० ग आ, ५१ ग इ, ५२ ग ए, ५३ ग औ, ५४ ग आ, ५५ ग इ, ५६ ग ए, ५७ ग औ, ५८ ग आ, ५९ ग इ, ६० ग ए, ६१ ग औ, ६२ ग आ, ६३ ग इ, ६४ ग ए, ६५ ग औ, ६६ ग आ, ६७ ग इ, ६८ ग ए, ६९ ग औ, ७० ग आ, ७१ ग इ, ७२ ग ए, ७३ ग औ, ७४ ग आ, ७५ ग इ, ७६ ग ए, ७७ ग औ, ७८ ग आ, ७९ ग इ, ८० ग ए, ८१ ग औ, ८२ ग आ, ८३ ग इ, ८४ ग ए, ८५ ग औ, ८६ ग आ, ८७ ग इ, ८८ ग ए, ८९ ग औ, ९० ग आ, ९१ ग इ, ९२ ग ए, ९३ ग औ, ९४ ग आ, ९५ ग इ, ९६ ग ए, ९७ ग औ, ९८ ग आ, ९९ ग इ, १०० ग ए, १०१ ग औ, १०२ ग आ, १०३ ग इ, १०४ ग ए, १०५ ग औ, १०६ ग आ, १०७ ग इ, १०८ ग ए, १०९ ग औ, ११० ग आ, १११ ग इ, ११२ ग ए, ११३ ग औ, ११४ ग आ, ११५ ग इ, ११६ ग ए, ११७ ग औ, ११८ ग आ, ११९ ग इ, १२० ग ए, १२१ ग औ, १२२ ग आ, १२३ ग इ, १२४ ग ए, १२५ ग औ, १२६ ग आ, १२७ ग इ, १२८ ग ए, १२९ ग औ, १३० ग आ, १३१ ग इ, १३२ ग ए, १३३ ग औ, १३४ ग आ, १३५ ग इ, १३६ ग ए, १३७ ग औ, १३८ ग आ, १३९ ग इ, १४० ग ए, १४१ ग औ, १४२ ग आ, १४३ ग इ, १४४ ग ए, १४५ ग औ, १४६ ग आ, १४७ ग इ, १४८ ग ए, १४९ ग औ, १५० ग आ, १५१ ग इ, १५२ ग ए, १५३ ग औ, १५४ ग आ, १५५ ग इ, १५६ ग ए, १५७ ग औ, १५८ ग आ, १५९ ग इ, १६० ग ए, १६१ ग औ, १६२ ग आ, १६३ ग इ, १६४ ग ए, १६५ ग औ, १६६ ग आ, १६७ ग इ, १६८ ग ए, १६९ ग औ, १७० ग आ, १७१ ग इ, १७२ ग ए, १७३ ग औ, १७४ ग आ, १७५ ग इ, १७६ ग ए, १७७ ग औ, १७८ ग आ, १७९ ग इ, १८० ग ए, १८१ ग औ, १८२ ग आ, १८३ ग इ, १८४ ग ए, १८५ ग औ, १८६ ग आ, १८७ ग इ, १८८ ग ए, १८९ ग औ, १९० ग आ, १९१ ग इ, १९२ ग ए, १९३ ग औ, १९४ ग आ, १९५ ग इ, १९६ ग ए, १९७ ग औ, १९८ ग आ, १९९ ग इ, २०० ग ए, २०१ ग औ, २०२ ग आ, २०३ ग इ, २०४ ग ए, २०५ ग औ, २०६ ग आ, २०७ ग इ, २०८ ग ए, २०९ ग औ, २१० ग आ, २११ ग इ, २१२ ग ए, २१३ ग औ, २१४ ग आ, २१५ ग इ, २१६ ग ए, २१७ ग औ, २१८ ग आ, २१९ ग इ, २२० ग ए, २२१ ग औ, २२२ ग आ, २२३ ग इ, २२४ ग ए, २२५ ग औ, २२६ ग आ, २२७ ग इ, २२८ ग ए, २२९ ग औ, २३० ग आ, २३१ ग इ, २३२ ग ए, २३३ ग औ, २३४ ग आ, २३५ ग इ, २३६ ग ए, २३७ ग औ, २३८ ग आ, २३९ ग इ, २४० ग ए, २४१ ग औ, २४२ ग आ, २४३ ग इ, २४४ ग ए, २४५ ग औ, २४६ ग आ, २४७ ग इ, २४८ ग ए, २४९ ग औ, २५० ग आ, २५१ ग इ, २५२ ग ए, २५३ ग औ, २५४ ग आ, २५५ ग इ, २५६ ग ए, २५७ ग औ, २५८ ग आ, २५९ ग इ, २६० ग ए, २६१ ग औ, २६२ ग आ, २६३ ग इ, २६४ ग ए, २६५ ग औ, २६६ ग आ, २६७ ग इ, २६८ ग ए, २६९ ग औ, २७० ग आ, २७१ ग इ, २७२ ग ए, २७३ ग औ, २७४ ग आ, २७५ ग इ, २७६ ग ए, २७७ ग औ, २७८ ग आ, २७९ ग इ, २८० ग ए, २८१ ग औ, २८२ ग आ, २८३ ग इ, २८४ ग ए, २८५ ग औ, २८६ ग आ, २८७ ग इ, २८८ ग ए, २८९ ग औ, २९० ग आ, २९१ ग इ, २९२ ग ए, २९३ ग औ, २९४ ग आ, २९५ ग इ, २९६ ग ए, २९७ ग औ, २९८ ग आ, २९९ ग इ, ३०० ग ए, ३०१ ग औ, ३०२ ग आ, ३०३ ग इ, ३०४ ग ए, ३०५ ग औ, ३०६ ग आ, ३०७ ग इ, ३०८ ग ए, ३०९ ग औ, ३१० ग आ, ३११ ग इ, ३१२ ग ए, ३१३ ग औ, ३१४ ग आ, ३१५ ग इ, ३१६ ग ए, ३१७ ग औ, ३१८ ग आ, ३१९ ग इ, ३२० ग ए, ३२१ ग औ, ३२२ ग आ, ३२३ ग इ, ३२४ ग ए, ३२५ ग औ, ३२६ ग आ, ३२७ ग इ, ३२८ ग ए, ३२९ ग औ, ३३० ग आ, ३३१ ग इ, ३३२ ग ए, ३३३ ग औ, ३३४ ग आ, ३३५ ग इ, ३३६ ग ए, ३३७ ग औ, ३३८ ग आ, ३३९ ग इ, ३४० ग ए, ३४१ ग औ, ३४२ ग आ, ३४३ ग इ, ३४४ ग ए, ३४५ ग औ, ३४६ ग आ, ३४७ ग इ, ३४८ ग ए, ३४९ ग औ, ३५० ग आ, ३५१ ग इ, ३५२ ग ए, ३५३ ग औ, ३५४ ग आ, ३५५ ग इ, ३५६ ग ए, ३५७ ग औ, ३५८ ग आ, ३५९ ग इ, ३६० ग ए, ३६१ ग औ, ३६२ ग आ, ३६३ ग इ, ३६४ ग ए, ३६५ ग औ, ३६६ ग आ, ३६७ ग इ, ३६८ ग ए, ३६९ ग औ, ३७० ग आ, ३७१ ग इ, ३७२ ग ए, ३७३ ग औ, ३७४ ग आ, ३७५ ग इ, ३७६ ग ए, ३७७ ग औ, ३७८ ग आ, ३७९ ग इ, ३८० ग ए, ३८१ ग औ, ३८२ ग आ, ३८३ ग इ, ३८४ ग ए, ३८५ ग औ, ३८६ ग आ, ३८७ ग इ, ३८८ ग ए, ३८९ ग औ, ३९० ग आ, ३९१ ग इ, ३९२ ग ए, ३९३ ग औ, ३९४ ग आ, ३९५ ग इ, ३९६ ग ए, ३९७ ग औ, ३९८ ग आ, ३९९ ग इ, ४०० ग ए, ४०१ ग औ, ४०२ ग आ, ४०३ ग इ, ४०४ ग ए, ४०५ ग औ, ४०६ ग आ, ४०७ ग इ, ४०८ ग ए, ४०९ ग औ, ४१० ग आ, ४११ ग इ, ४१२ ग ए, ४१३ ग औ, ४१४ ग आ, ४१५ ग इ, ४१६ ग ए, ४१७ ग औ, ४१८ ग आ, ४१९ ग इ, ४२० ग ए, ४२१ ग औ, ४२२ ग आ, ४२३ ग इ, ४२४ ग ए, ४२५ ग औ, ४२६ ग आ, ४२७ ग इ, ४२८ ग ए, ४२९ ग औ, ४३० ग आ, ४३१ ग इ, ४३२ ग ए, ४३३ ग औ, ४३४ ग आ, ४३५ ग इ, ४३६ ग ए, ४३७ ग औ, ४३८ ग आ, ४३९ ग इ, ४४० ग ए, ४४१ ग औ, ४४२ ग आ, ४४३ ग इ, ४४४ ग ए, ४४५ ग औ, ४४६ ग आ, ४४७ ग इ, ४४८ ग ए, ४४९ ग औ, ४५० ग आ, ४५१ ग इ, ४५२ ग ए, ४५३ ग औ, ४५४ ग आ, ४५५ ग इ, ४५६ ग ए, ४५७ ग औ, ४५८ ग आ, ४५९ ग इ, ४६० ग ए, ४६१ ग औ, ४६२ ग आ, ४६३ ग इ, ४६४ ग ए, ४६५ ग औ, ४६६ ग आ, ४६७ ग इ, ४६८ ग ए, ४६९ ग औ, ४७० ग आ, ४७१ ग इ, ४७२ ग ए, ४७३ ग औ, ४७४ ग आ, ४७५ ग इ, ४७६ ग ए, ४७७ ग औ, ४७८ ग आ, ४७९ ग इ, ४८० ग ए, ४८१ ग औ, ४८२ ग आ, ४८३ ग इ, ४८४ ग ए, ४८५ ग औ, ४८६ ग आ, ४८७ ग इ, ४८८ ग ए, ४८९ ग औ, ४९० ग आ, ४९१ ग इ, ४९२ ग ए, ४९३ ग औ, ४९४ ग आ, ४९५ ग इ, ४९६ ग ए, ४९७ ग औ, ४९८ ग आ, ४९९ ग इ, ५०० ग ए, ५०१ ग औ, ५०२ ग आ, ५०३ ग इ, ५०४ ग ए, ५०५ ग औ, ५०६ ग आ, ५०७ ग इ, ५०८ ग ए, ५०९ ग औ, ५१० ग आ, ५११ ग इ, ५१२ ग ए, ५१३ ग औ, ५१४ ग आ, ५१५ ग इ, ५१६ ग ए, ५१७ ग औ, ५१८ ग आ, ५१९ ग इ, ५२० ग ए, ५२१ ग औ, ५२२ ग आ, ५२३ ग इ, ५२४ ग ए, ५२५ ग औ, ५२६ ग आ, ५२७ ग इ, ५२८ ग ए, ५२९ ग औ, ५३० ग आ, ५३१ ग इ, ५३२ ग ए, ५३३ ग औ, ५३४ ग आ, ५३५ ग इ, ५३६ ग ए, ५३७ ग औ, ५३८ ग आ, ५३९ ग इ, ५४० ग ए, ५४१ ग औ, ५४२ ग आ, ५४३ ग इ, ५४४ ग ए, ५४५ ग औ, ५४६ ग आ, ५४७ ग इ, ५४८ ग ए, ५४९ ग औ, ५५० ग आ, ५५१ ग इ, ५५२ ग ए, ५५३ ग औ, ५५४ ग आ, ५५५ ग इ, ५५६ ग ए, ५५७ ग औ, ५५८ ग आ, ५५९ ग इ, ५६० ग ए, ५६१ ग औ, ५६२ ग आ, ५६३ ग इ, ५६४ ग ए, ५६५ ग औ, ५६६ ग आ, ५६७ ग इ, ५६८ ग ए, ५६९ ग औ, ५७० ग आ, ५७१ ग इ, ५७२ ग ए, ५७३ ग औ, ५७४ ग आ, ५७५ ग इ, ५७६ ग ए, ५७७ ग औ, ५७८ ग आ, ५७९ ग इ, ५८० ग ए, ५८१ ग औ, ५८२ ग आ, ५८३ ग इ, ५८४ ग ए, ५८५ ग औ, ५८६ ग आ, ५८७ ग इ, ५८८ ग ए, ५८९ ग औ, ५९० ग आ, ५९१ ग इ, ५९२ ग ए, ५९३ ग औ, ५९४ ग आ, ५९५ ग इ, ५९६ ग ए, ५९७ ग औ, ५९८ ग आ, ५९९ ग इ, ६०० ग ए, ६०१ ग औ, ६०२ ग आ, ६०३ ग इ, ६०४ ग ए, ६०५ ग औ, ६०६ ग आ, ६०७ ग इ, ६०८ ग ए, ६०९ ग औ, ६१० ग आ, ६११ ग इ, ६१२ ग ए, ६१३ ग औ, ६१४ ग आ, ६१५ ग इ, ६१६ ग ए, ६१७ ग औ, ६१८ ग आ, ६१९ ग इ, ६२० ग ए, ६२१ ग औ, ६२२ ग आ, ६२३ ग इ, ६२४ ग ए, ६२५ ग औ, ६२६ ग आ, ६२७ ग इ, ६२८ ग ए, ६२९ ग औ, ६३० ग आ, ६३१ ग इ, ६३२ ग ए, ६३३ ग औ, ६३४ ग आ, ६३५ ग इ, ६३६ ग ए, ६३७ ग औ, ६३८ ग आ, ६३९ ग इ, ६४० ग ए, ६४१ ग औ, ६४२ ग आ, ६४३ ग इ, ६४४ ग ए, ६४५ ग औ, ६४६ ग आ, ६४७ ग इ, ६४८ ग ए, ६४९ ग औ, ६५० ग आ, ६५१ ग इ, ६५२ ग ए, ६५३ ग औ, ६५४ ग आ, ६५५ ग इ, ६५६ ग ए, ६५७ ग औ, ६५८ ग आ, ६५९ ग इ, ६६० ग ए, ६६१ ग औ, ६६२ ग आ, ६६३ ग इ, ६६४ ग ए, ६६५ ग औ, ६६६ ग आ, ६६७ ग इ, ६६८ ग ए, ६६९ ग औ, ६७० ग आ, ६७१ ग इ, ६७२ ग ए, ६७३ ग औ, ६७४ ग आ, ६७५ ग इ, ६७६ ग ए, ६७७ ग औ, ६७८ ग आ, ६७९ ग इ, ६८० ग ए, ६८१ ग औ, ६८२ ग आ, ६८३ ग इ, ६८४ ग ए, ६८५ ग औ, ६८६ ग आ, ६८७ ग इ, ६८८ ग ए, ६८९ ग औ, ६९० ग आ, ६९१ ग इ, ६९२ ग ए, ६९३ ग औ, ६९४ ग आ, ६९५ ग इ, ६९६ ग ए, ६९७ ग औ, ६९८ ग आ, ६९९ ग इ, ७०० ग ए, ७०१ ग औ, ७०२ ग आ, ७०३ ग इ, ७०४ ग ए, ७०५ ग औ, ७०६ ग आ, ७०७ ग इ, ७०८ ग ए, ७०९ ग औ, ७१० ग आ, ७११ ग इ, ७१२ ग ए, ७१३ ग औ, ७१४ ग आ, ७१५ ग इ, ७१६ ग ए, ७१७ ग औ, ७१८ ग आ, ७१९ ग इ, ७२० ग ए, ७२१ ग औ, ७२२ ग आ, ७२३ ग इ, ७२४ ग ए, ७२५ ग औ, ७२६ ग आ, ७२७ ग इ, ७२८ ग ए, ७२९ ग औ, ७३० ग आ, ७३१ ग इ, ७३२ ग ए, ७३३ ग औ, ७३४ ग आ, ७३५ ग इ, ७३६ ग ए, ७३७ ग औ, ७३८ ग आ, ७३९ ग इ, ७४० ग ए, ७४१ ग औ, ७४२ ग आ, ७४३ ग इ, ७४४ ग ए, ७४५ ग औ, ७४६ ग आ, ७४७ ग इ, ७४८ ग ए, ७४९ ग औ, ७५० ग आ, ७५१ ग इ, ७५२ ग ए, ७५३ ग औ, ७५४ ग आ, ७५५ ग इ, ७५६ ग ए, ७५७ ग औ, ७५८ ग आ, ७५९ ग इ, ७६० ग ए, ७६१ ग औ, ७६२ ग आ, ७६३ ग इ, ७६४ ग ए, ७६५ ग औ, ७६६ ग आ, ७६७ ग इ, ७६८ ग ए, ७६९ ग औ, ७७० ग आ, ७७१ ग इ, ७७२ ग ए, ७७३ ग औ, ७७४ ग आ, ७७५ ग इ, ७७६ ग ए, ७७७ ग औ, ७७८ ग आ, ७७९ ग इ, ७८० ग ए, ७८१ ग औ, ७८२ ग आ, ७८३ ग इ, ७८४ ग ए, ७८५ ग औ, ७८६ ग आ, ७८७ ग इ, ७८८ ग ए, ७८९ ग औ, ७९० ग आ, ७९१ ग इ, ७९२ ग ए, ७९३ ग औ, ७९४ ग आ, ७९५ ग इ, ७९६ ग ए, ७९७ ग औ, ७९८ ग आ, ७९९ ग इ, ८०० ग ए, ८०१ ग औ, ८०२ ग आ, ८०३ ग इ, ८०४ ग ए, ८०५ ग औ, ८०६ ग आ, ८०७ ग इ, ८०८ ग ए, ८०९ ग औ, ८१० ग आ, ८११ ग इ, ८१२ ग ए, ८१३ ग औ, ८१४ ग आ, ८१५ ग इ, ८१६ ग ए, ८१७ ग औ, ८१८ ग आ, ८१९ ग इ, ८२० ग ए, ८२१ ग औ, ८२२ ग आ, ८२३ ग इ, ८२४ ग ए, ८२५ ग औ, ८२६ ग आ, ८२७ ग इ, ८२८ ग ए, ८२९ ग औ, ८३० ग आ, ८३१ ग इ, ८३२ ग ए, ८३३ ग औ, ८३४ ग आ, ८३५ ग इ, ८३६ ग ए, ८३७ ग औ, ८३८ ग आ, ८३९ ग इ, ८४० ग ए, ८४१ ग औ, ८४२ ग आ, ८४३ ग इ, ८४४ ग ए, ८४५ ग औ, ८४६ ग आ, ८४७ ग इ, ८४८ ग ए, ८४९ ग औ, ८५० ग आ, ८५१ ग इ, ८५२ ग ए, ८५३ ग औ, ८५४ ग आ, ८५५ ग इ, ८५६ ग ए, ८५७ ग औ, ८५८ ग आ, ८५९ ग इ, ८६० ग ए, ८६१ ग औ, ८६२ ग आ, ८६३ ग इ, ८६४ ग ए, ८६५ ग औ, ८६६ ग आ, ८६७ ग इ, ८६८ ग ए, ८६९ ग औ, ८७० ग आ, ८७१ ग इ, ८७२ ग ए, ८७३ ग औ, ८७४ ग आ, ८७५ ग इ, ८७६ ग ए, ८७७ ग औ, ८७८ ग आ, ८७९ ग इ, ८८० ग ए, ८८१ ग औ, ८८२ ग आ, ८८३ ग इ, ८८४ ग ए, ८८५ ग औ, ८८६ ग आ, ८८७ ग इ, ८८

२० श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.११२८ आषाढकृष्णपक्षः (तछलागा) पा. उ.२२, २३ ध. भ. आ. (जून ६ जुलाई ७ सन् २००८) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | | |
|-----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-----------|--------|-------|-------|------|----|
| ५ | बु | १ | ४७।४३ | रा | १२।१५ | मू | ३१।४७ | सा | ५।५३ | शु | ४२।३२ | बा | १५।३६ | धूम्रः | घ | ३४।३६ | ५।१० | 19 | |
| ६ | शु | २ | ५१।१६ | रा | १।४१ | पू | ३७।९ | रा | ८।२ | ब्रं | ४३।७ | तै | ११।३७ | वर्द्धः | ५३।२१ | ३४।३६ | ५।१० | 20 | |
| ७ | श | ३ | ५३।४५ | रा | २।४० | उ | ४१।३१ | रा | ९।४७ | ऐं | ४२।५२ | व | २२।३९ | रक्षः | म | ३४।३६ | ५।१० | 21 | |
| प्र | ८ | आ | ४ | ५५।० | रा | ३।११ | श्र | ४४।४३ | रा | ११।४ | वै | ४१।४० | ब | २४।३२ | गदः | म | ३४।३६ | ५।११ | 22 |
| ९ | सो | ५ | ५४।५९ | रा | ३।११ | घ | ४६।४१ | रा | ११।५१ | वि | ३९।२९ | कौ | २५।९ | शुभः | १५।५१ | ३४।३६ | ५।११ | 23 | |
| १० | मे | ६ | ५३।४३ | रा | २।४० | श | ४७।२४ | रा | १२।९ | प्री | ३६।१७ | ग | २४।३० | मृत्युः | कुं | ३४।३५ | ५।११ | 24 | |
| प्र | ११ | बु | ७ | ५१।१६ | रा | १।४२ | पू | ४६।५७ | रा | ११।५८ | आ | ३२।७ | भ | २२।३८ | पद्मः | ३२।९ | ३४।३५ | ५।११ | 25 |
| १२ | बु | ८ | ४७।४७ | रा | १२।१८ | उ | ४५।२६ | रा | ११।२२ | सौ | २७।४ | बा | ११।३९ | छत्रः | मी | ३४।३५ | ५।१२ | 26 | |
| १३ | शु | ९ | ४३।२४ | रा | १०।३३ | रे | ४३।२ | रा | १०।२५ | शो | २१।१४ | तै | १५।४१ | श्रीवत्सः | ४३।२ | ३४।३४ | ५।१२ | 27 | |
| १४ | श | १० | ३८।१६ | रा | ८।३१ | अ | ३९।५४ | रा | ९।१० | अ | १४।४५ | व | १०।५४ | सौम्यः | मे | ३४।३४ | ५।१२ | 28 | |
| १५ | आ | ११ | ३२।३६ | सा | ६।१५ | भ | ३६।१३ | रा | ७।४२ | सु | ७।४५ | ब | ५।३४ | कालः | ५०।१४ | ३४।३३ | ५।१२ | 29 | |
| प्र | १६ | सो | १२ | २६।३३ | दि | ३।५० | कृ | ३२।१० | सा | ६।५ | धृ | ०।३३ | ग | ५२।२८ | स्थिरः | वृ | ३४।३२ | ५।१३ | 30 |
| १७ | मे | १३ | २०।२० | दि | १।२१ | रो | २७।५८ | दि | ४।२४ | गं | ४५।८ | भ | ४७।१४ | मातङ्गः | ५५।५३ | ३४।३१ | ५।१३ | 1 | |
| १८ | बु | १४ | १४।१० | दि | १०।५३ | मृ | २३।५० | दि | २।४६ | वृ | ३७।३५ | च | ४१।१० | अमृतः | मि | ३४।३० | ५।१३ | 2 | |
| १९ | बु | ३० | ८।१४ | दि | ८।३१ | आ | २०।० | दि | १।१४ | धृ | ३०।१८ | किं | ३५।२५ | काणः | मि | ३४।२९ | ५।१४ | 3 | |

७मघायां २ भौमः ४२, मृगशीर्षे बुधः ३९, पुनर्वसौ शुक्रः ३९, धनिष्ठायां १ राहु रश्लेषायां ३ केतुः ३७, कर्कटे सायनार्कः ५९।३५,

म. २२।३९ उ. ५३।४५ या., भूमिरज, आर्द्रायां १ रविः १, धनिष्ठापञ्चकप्र. १५।५१, मघायां १ सिंह भौमः ६।१३, म. ५३।४३ उ., त्रिपुष्करः ५३।४३ उ., १ देवपत्तने त्रिशूलयात्रा म. २२।३८ या., भूमिपूजा, आर्द्रायां २ रविः ३१, अष्टमीव्रतं, भलभल अष्टमी, गोग्रखकालीपूजा, १ घ.पं.नि. ४३।२१, १ मृगशे ३ मिथुने बुधः ३२।५५, म. १०।५४ उ. ३८।१६ या., (नक्शाः दिशि), २ योगिनी ११ व्रतं, त्रिपुष्करः ३६।१३ उ., आर्द्रायां ३ रविः २, सोमप्रदोषव्रतम्, १ आर्द्रायां ४ रविः ३४, पूषायां ४ गुरुः २, म. २०।२० उ. ४७।१४ या., (दिलाचहेपूजा), (जुलाई ७ ता. ३१) दर्शश्राद्धं, निशीबार्नं विश्वखलेकूददिवसः, १ स्नानदानादौ अमावास्या, हलोबार्नं, १

अथ वनस्पतिको विशेष फलहरूपाट अन्नको उत्पत्ति शुभाशुभ ज्ञान-पीपलमा ज्यादा फूलफल लागेधान्यको उत्पत्ति ज्यादा हुन्छ, वटमा अधिक फल लागे चामल पूरा हुन्छन्, जामुन अधिक फल्यो भने तिल मास अधिक, शिरीष अधिक फले कागुन अधिक, कुन्दको फल अधिक हुँदा कपास अधिक, चुत्रो अधिक फल्यो भने तोरीसस्यौं अधिक, बदरी (बयर) अधिक फले गहत अधिक, कुश दुबो अधिक फैलाए उखुराम्रो हुन्छ, निमको फल अधिक लागे संवत्सर असल हुन्छ, शमीखयरमा अधिक फल लागे अनिकाल पर्छ, औप अधिक फले प्रजालाई कल्याण हुन्छ भलायोधेरै फल्यो भने रोगको वृद्धि हुन्छ, करङ्गको फल अधिक लागे मृगोको खेती असल हुन्छ इत्यादि। श्रावण सोमवारमा शिव व्रत गर्नाले विघ्नघन पुत्रादि मिल्दछ। सोमवारको व्रतगरी रुद्राभिषेक गर्नु गराउनु शुभफल प्रदाता हुनेछ।

पापांशाः - श ४, रा ६ के १२, ५ ग रा ५ के ११, ८ ग सू ९, ९ ग मं १, ११ ग सू १०, १४ ग मं २, १५ ग सू ११, १८ ग सू १२,

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा उ पू, बु व उ, शु मा अ पू, श मा उ

ग्रहाणां राशिप्रवेशः ९ ग मं ५, १९ ग बु ३,

| ११ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ | २ | ३ | १ | ८ | २ | ४ | ९ |
| ८ | ७ | २९ | १६ | २७ | १२ | १० | २६ |
| ग | १५ | ४३ | ५५ | ५२ | ३७ | २० | ३० |
| १ | १७ | ८ | ५२ | १७ | ५६ | २२ | २५ |
| ३७ | ५६ | ३५ | ५१ | ७ | ७३ | ४ | ३ |
| ४६ | ५३ | ३७ | ३० | ७ | ३३ | ४७ | ११ |

| १२ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ | २ | ४ | १ | ८ | २ | ४ | ९ |
| १५ | १३ | ३ | २४ | २६ | २१ | १० | २६ |
| ग | ५३ | ५३ | ३४ | ५९ | ११ | ५६ | ८ |
| १ | २१ | ९ | ५६ | ० | ३९ | ३९ | १० |
| ३७ | ५६ | ३६ | ७७ | ७ | ७३ | ५ | ३ |
| ४१ | ५१ | १ | १ | ४१ | २९ | २० | ११ |

| | |
|---------|---------|
| मं ४ के | २ बु |
| ५ श | सू ३ शु |
| ६ | १२ |
| ७ | ९ बु |
| ८ | १० रा |

चन्द्रा
प्राप्ति
स्थान

हम्बै पुस्तक भवन
वाराणसी, भारत

सरस्वती पुस्तक पसल
पालिखे चौक, पोखरा

वैशाली पुस्तक पसल
रिडी गुल्मी

जवाली बुक स्टल
बड़ा बजार, शिलाङ्ग

खड्गबहादुर साहु
बाड़ा दैलेख

श्रीवि.सं.२०६५ श्रीशाके १९३० ने.सं.११२८ आषाढशुक्लपक्षः (दिलाध्व) पा.श्ले. ९ म. वि. अ. मू. २२ (जुलाई ७ सन् २००८) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः दक्षिणायनं वर्षर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः २१

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|--------------|---------|--------------|------|---------|-----|-------|------|-------------|-------|-------|---------|-------|-------|------|----|
| २० | शु | १ | ३/४३ ५/१५ | प्रा | ६/३० ४/२३ | पु | १६/३७ | दि | ११/५३ | व्या | २३/२७ | बा | ३०/१२ | लुम्बः | २/२४ | ३४/२८ | ५/१४ | ४ |
| २१ | श | ३ | ५/३४ | रा | २/४५ | ति | १३/५४ | दि | १०/४८ | ह | १७/१९ | तै | २५/४१ | मित्रः | क | ३४/२७ | ५/१५ | ५ |
| २२ | आ | ४ | ५/०३ | रा | १/३० | अ | १२/२२ | दि | १०/४ | व | ११/३३ | व | २२/३ | वज्रः | १२/२ | ३४/२६ | ५/१५ | ६ |
| २३ | सो | ५ | ४/८३ | रा | १२/४१ | म | ११/१९ | दि | ९/४३ | सि | ६/४६ | ब | १९/२६ | ध्वांसः | सिं | ३४/२५ | ५/१५ | ७ |
| २४ | मं | ६ | ४/७४ | रा | १२/२१ | पू | ११/२४ | दि | ९/४९ | व्य | १/५३ ६/० | कौ | १७/५९ | धूम्रः | २६/३९ | ३४/२३ | ५/१६ | ८ |
| २५ | बु | ७ | ४/८१ | रा | १२/३२ | उ | १२/५२ | दि | १०/२५ | प | ५/८७ | ग | १७/४६ | वर्द्धः | कं | ३४/२२ | ५/१६ | ९ |
| २६ | बृ | ८ | ४/९५ | रा | ११/३ | ह | १५/३५ | दि | ११/३१ | शि | ५/७१ | भ | १८/५० | रक्षः | ४७/२४ | ३४/२० | ५/१७ | १० |
| २७ | शु | ९ | ५/२४ | रा | २/२२ | चि | ११/३० | दि | १/५ | सि | ५/७१ | बा | २१/७ | मुसलः | तु | ३४/१९ | ५/१७ | ११ |
| २८ | श | १० | ५/६३ | रा | ३/५५ | स्वा | २४/३० | दि | ३/६ | सा | ५/८१ | तै | २४/३१ | सिद्धिः | तु | ३४/१७ | ५/१८ | १२ |
| २९ | आ | ११ | ६/०१ | | समस्त | वि | ३०/२२ | सा | ५/२७ | शु | ५/९२ | व | २८/४८ | उत्पातः | १३/५० | ३४/१५ | ५/१८ | १३ |
| ३० | सो | ११ | १/१० | प्रा | ५/४६ | अ | ३६/४५ | सा | ८/१० | शु | ६/०१ | ब | ३३/३८ | मानसः | वृ | ३४/१३ | ५/१८ | १४ |
| ३१ | मं | १२ | ६/१९ | दि | ७/४६ | ज्ये | ४३/१७ | रा | १०/३८ | शु | ०/५९ | कौ | ३९/३९ | मुद्गरः | ४३/१७ | ३४/११ | ५/१९ | १५ |
| १ | बु | १३ | ११/४ | दि | ९/४५ | मू | ४९/३० | रा | १/८ | ब्रं | २/३६ | ग | ४३/२२ | ध्वजः | घ | ३४/९ | ५/१९ | १६ |
| २ | बृ | १४ | १५/३० | दि | ११/३२ | पू | ५५/४ | रा | ३/२१ | ऐं | ३/५३ | भ | ४७/२६ | धाता | घ | ३४/७ | ५/२० | १७ |
| ३ | शु | १५ | १९/७ | दि | १२/५९ | उ | ५९/४० | रा | ५/१२ | वै | ४/३४ | बा | ५०/३३ | आनन्दः | ११/१८ | ३४/५ | ५/२० | १८ |

| | |
|--|--|
| [१] कण्डारकपूजा, रात्रौ लूतनिक्षेपणं, (लूतो फाल्ने) दक्षिणायनारंभः | |
| चन्द्रोदयः, श्रीजगन्नाथस्थयात्रा, मघायां ३ भौमः १६, | |
| [२] पुनर्वसोर रविः ३६, मघायां ४ भौमः ४६, तिथ्यशुक्रः ३४ | |
| भ. २२/३ उ. ५/०३७ या., पुनर्वसौ १ रविः ५, १ | |
| श्री ५ महाराजाधिराजशुभजनोत्सवः, आर्द्रायांबुधः ५४, | |
| त्रिपुष्करः ४७/४३ उ., [३] पुनर्वसौ ४ कर्कटेशुक्रः ४९/५८, | |
| भ. ४८/९ उ., देवपत्तने श्रीगङ्गामाईस्थयात्रा, सूर्यपूजा, २ | |
| भ. १८/५० या., अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, [४] तुलसीरोपणम्, | |
| विश्वजनसंख्यादिवसः पश्चिमोदितः शुक्रः २३, पूर्वास्तोबुधः ५३, | |
| मन्वादिः, | |
| भ. २८/४८ उ., भानुभक्तजयंती, पुनर्वसौ ३ रविः ७, | |
| भ. ११/० या., हरिश्चयनी ११ व्रतं, चातुर्मास्यव्रतारंभः, ३ | |
| प्रदोष व्रतं, (तुलसीपिये), पूफायां १ भौमः १५, पुनर्वसौबुधः ४८, | |
| पुनर्वसौ ४ कर्कटऽर्कः ३७/२२, श्रावणसंक्रान्तिः, ३ | |
| भ. १५/३० उ. ४७/२६ या., पूर्णिमाव्रतम्, | |
| श्रीगुरु (व्यासः) पूजा, दक्षिणामूर्तिपूजा, (दिलापुन्दि), मन्वादिः, | |

[१] कण्डारकपूजा, रात्रौ लूतनिक्षेपणं, (लूतोफाल्ने) दक्षिणायनारंभः
चन्द्रोदयः, श्रीजगन्नाथरथयात्रा, मघायां ३ भौमः १६,
[२] पुनर्वसौ रविः ३६, मघायां ४ भौमः ४६, तिष्येशुक्रः ३४,
म. २२/३ उ. ५०/३७ या., पुनर्वसौ १ रविः ५, १
श्रीप. महाराजाधिराजशुभजन्मोत्सवः, आर्द्रायां बुधः ५४,
त्रिपुष्करः ४७/४३ उ., [३] पुनर्वसौ ४ कर्कटेशुक्रः ४९/५८,
म. ४८/९ उ., देवपत्तने श्रीगङ्गामाईरथयात्रा, सूर्यपूजा, २
म. १८/५० या., अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, [४] तुलसीरोपणम्,
विश्वजनसंख्यादिवसः पश्चिमोदितः शुक्रः २३, पूर्वास्तोबुधः ५३,
मन्वादिः,
म. २८/४८ उ., भानुभक्तजयंती, पुनर्वसौ ३ रविः ७,
म. ११/१० या., हरिशयनी ११ व्रतं, चातुर्मास्यव्रतारंभः, ३
प्रदोष व्रतं, (तुलसीपिये), पूफायां १ भौमः १५, पुनर्वसौ बुधः ४८,
पुनर्वसौ ४ कर्कटेशुकः ३७/२२, श्रावणसंक्रान्तिः, ३
म. १५/३० उ. ४७/२६ या., पूर्णिमाव्रतम्,
श्रीगुरु (व्यासः) पूजा, दक्षिणामूर्तिपूजा, (दिलापुद्दि), मन्वादिः,

अथ चातुर्मास्य व्रतारम्भः - विधिवत्संकल्पपूर्वकं प्रार्थयेत्। प्रार्थनामंत्र - इमं करिष्ये नियमं निर्विघ्नं कुरु मेऽच्युतः। इदं व्रतमया देव गृहीत पुरतस्तव। निर्विघ्नसिद्धिमायांतु प्रसादात्तव केशव। गृहीतेऽस्मिन् व्रते देव पंचत्वं यदि मे भवेत्। तदा भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादाज्जनार्दनः। चातुर्मास्ये त्याज्य पदार्थाः -
श्रावणेशाकं, भाद्रपदे दधि, आश्विने दुग्धं, कार्तिके द्विदलम् (मासादि) चातुर्मास्ये - मधु-गुड़, मांस, तैल कुलत्थ मूलक-कुष्माण्ड क्षौरकर्म खट्वा शयनं बदरीफलं एतानि-परिवर्जयेत्। काकस्पर्शफलः - कागले शीरमा छोयो भने दारिद्र्यमरण कुनै होला, कटिमा छोए दूलोभय अरिष्ट होला, स्त्रीको शिरमा छोयो भने पति वा पुत्रको मरण, रुखमुनि, खाने चीजको संयोगले छोए दोष हुँदैन। काक मैथुन देखियो भने ६ महिना भित्र अनिष्ट हुन्छ। काकशान्तिगर्नु योग्य छ।

पाषांशाः - श ४, रा ५ के ११, २० ग मं ३, २२ ग सू १, २५ ग सू २ मं ४, २९ ग सू ३, ३१ ग मं ५, १ ग सू ४

वक्रमागौदयास्तः - मं मा उ, बु मा २७ अ पू, बु व उ, शु मा २७ उ प, श मा उ, ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ ग सू ४, २२ ग शु ४

| १३ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. | १४ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ | २ | ४ | २ | ८ | २ | ४ | ९ | आ | २ | ४ | २ | ८ | ३ | ४ | ९ |
| २२ | २० | ८ | ४ | २६ | २९ | ११ | २५ | २९ | २७ | १२ | १६ | २५ | ८ | १२ | २५ |
| ग | ३१ | ५ | ३९ | २ | ४४ | ३६ | ४५ | ग | ९ | २० | १२ | ६ | १७ | १९ | २३ |
| १ | १५ | ४३ | ३५ | ५८ | ५२ | ३६ | ५४ | १ | १८ | ४२ | १४ | ९ | ५८ | ४९ | ३९ |
| ३७ | ५६ | ३६ | ९२ | ७ | ७३ | ५ | ३ | ३७ | ५६ | ३६ | १०२ | ८ | ७३ | ६ | ३ |
| ३५ | ५९ | २३ | ५६ | ५९ | २७ | ४९ | ११ | २७ | ५३ | ४४ | ३४ | १ | २६ | १४ | ११ |

| | | |
|------|---------|----|
| ४ के | २ | १ |
| ५ मं | सू ३ बु | १ |
| श | शु | १२ |
| ६ | १२ | ११ |
| ७ | ९ बु | ११ |
| ८ | १० रा | ११ |

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | | |
|----|-----|-----|-------|---------|--------------|------|---------------|-------|--------------|------|---------------|-------|---------------|-----------|-------|-------|------|--|---|
| ४ | श | १ | २१४१ | दि | २१ | श्र | ६०१० | समस्त | वि | ४१२९ | तै | ५२१२२ | चरः | म | ३४३ | ५१२१ | 19 | तिष्ये ४ रवि: ३९, अश्लेषायांबुध: २७, | |
| ५ | आ | २ | २३१२ | दि | २३४ | श्र | ३१७ | प्रा | ६१३६ | प्री | ३१२७ | व | ५३११४ | गदः | ३४१२४ | ३४११ | २० | तिष्ये १ रवि: ८, पूषायां २ भौम: ४१, अश्लेषायांशुक: २८, | |
| ६ | सो | ३ | २३१७ | दि | २३६ | घ | ५१२१ | प्रा | ७१३० | आ | ११३६ ५६१२५ | ब | ५२१४१ | शुभः | कुं | ३३१५८ | ५१२१ | 20 | भ.५३११४उ, द्विपुष्कर: ३७उ. २३१२या., घ.प.प्र. ३४१२४, 1 |
| ७ | मं | ४ | २१५६ | दि | २१९ | श | ६१२० | प्रा | ७१५४ | शो | ५४१२५ | कौ | ५०१५४ | मृत्यु: | ५१११८ | ३३१५६ | ५१२२ | 21 | भ.२३१७ या., पुनर्वसौ ४ कर्कटबुध: २३१३३, |
| ८ | बु | ५ | १९१३५ | दि | ११३३ | पू | ६१८ | प्रा | ७१५० | अ | ४९१३१ | ग | ४८१० | पद्म: | मी | ३३१५३ | ५१२२ | 22 | मंगल ४ ब्र., पूषायां १ शनि: ४३, सिंहसायनांक: ३८, |
| ९ | बृ | ६ | १६११० | दि | ११५१ | उ | ४१५० | प्रा | ७१२० | सु | ४३१४८ | भ | ४४१७ | छत्र: | मी | ३३१५३ | ५१२३ | 23 | तिष्ये २ रवि: ३९, तिष्ये बुध: १३, |
| १० | शु | ७ | ११५११ | दि | १०८ | रे | ३१३७ ५३१३९ | प्रा | ६१२७ ५१३५ | धृ | ३७१२५ | बा | ३९१२४ | श्रीवत्स: | २१३७ | ३३१४८ | ५१२३ | 24 | भ.१६११० उ. ४४१७ या., |
| ११ | श | ८ | ६१४७ | दि | ८१७ | भ | ५६१४ | रा | ३१५० | शू | ३०१२९ | तै | ३४१२ | ध्वांक्ष: | मे | ३३१४६ | ५१२४ | 25 | अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, घ.पं.निवृत्ति: २१३७, |
| १२ | आ | ९ | ११५१९ | प्रा | ५१५२ ३१२९ | कृ | ५२१५ | रा | २११५ | गं | २३१९ | व | २८१११ | धूम्र: | १०१५ | ३३१४३ | ५१२४ | 26 | पूषायां ३ भौम: ४, पुन: पूषायां ३ गुरु: ५८, |
| १३ | सो | ११ | ४८१५७ | रा | ११० | रो | ४७१५३ | रा | १२१३५ | वृ | १५१३३ | ब | २२१३ | वर्द्ध: | वृ | ३३१४० | ५१२५ | 27 | भ.२८१११ उ. ५५१९ या., तिष्ये ३ रवि: ९, |
| १४ | मं | १२ | ४२१४६ | रा | १०३३ | मृ | ४३१४३ | रा | १०१५५ | घृ | ७१५२ | कौ | १५१५० | रक्ष: | १५१४६ | ३३१३७ | ५१२५ | 28 | कामिका ११ व्रतम्, |
| १५ | बु | १३ | ३६१५० | रा | ८११० | आ | ३९१४७ | रा | ९१२१ | व्या | ०१३६ ५२१५५ | ग | ११४५ | मुसल: | मि | ३३१३५ | ५१२६ | 29 | द्विपुष्कर: ४२१४६ या. [७ (अगस्त ८ ता. ३१) |
| १६ | बृ | १४ | ३१११८ | सा | ५१५८ | पु | ३६११६ | रा | ७१५८ | व | ४५१५७ | भ | ३१५९ ५८१०६ | सिद्धि: | २२१६ | ३३१३२ | ५१२६ | 30 | भ.३६१५०उ., प्रदोषव्रतं, घण्टाकर्ण १४, (गर्थांगुगवहेपूजा), 2 |
| १७ | शु | ३० | २६१२३ | दि | ४११ | ति | ३३१२३ | रा | ६१४९ | सि | ३९१३१ | किं | ५४१२२ | उत्पात: | क | ३३१२९ | ५१२७ | 31 | भ.३५१९या., पूषायां ४ भौम: २६, मघायां सिंहेशुक: २२१५८, |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | 1 | दर्शश्राद्धं, निशी एवं हलोबाजं, सूर्यग्रहणं खण्डग्रासः 3 |

[२] तिष्ये ४ रविः ३९, अश्लेषायां बुधः २७,

[१] तिष्ये १ रविः ८, पूषायां २ भौमः ४१, अश्लेषायां शुक्रः २८,

भ. ५३११४३, द्विपुष्करः ३१७३. २३१२ या., घ.प.प्र. ३४१२४. १

भ. २३१७ या., पुनर्वसु ४ कर्कटे बुधः २३१३३,

मंगल ४ व्र., पूषायां १ शनिः ४३, सिंहसायनाः ३८,

तिष्ये २ रविः ३९, तिष्ये बुधः १३,

भ. १६११० उ. ४४१७ या.,

अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, घ.पं.निवृत्तिः २३७,

पूषायां ३ भौमः ४, पुनः पूषायां ३ गुरुः ५८,

भ. २८१११ उ. ५५१९ या., तिष्ये ३ रविः ९,

कामिका ११ व्रतम्,

द्विपुष्करः ४२१४६ या. [७ (अगस्त ८ ता. ३९)]

भ. ३६१५० उ., प्रदोषव्रतं, घण्टाकर्ण १४, (गथां मुगचहे पूजा), ७

भ. ३५९९ या., पूषायां ४ भौमः २६, मघायां १ सिंहशुक्रः २२१५८,

दर्शश्राद्धं, निशी एवं हलोबार्ने, सूर्यग्रहणं खण्डग्रासः ७

अथ गर्भिणी प्रश्न-प्रश्नसमयको तिथि नक्षत्र प्रहरको संख्यामा गर्भिणीनामाक्षर संख्या जोडनु त्यसमा ७ जोडी ३ ले गुणी ७ ले शेष गर्नु, विषम अंक शेष रहे छोरौ सम अंक शेष रहे छोरौ जन्म हुन्छ। परदेशीको प्रश्नः-तिथि, प्रहर, नक्षत्र, बारको संख्या जोडी ७ ले शेष गर्दा १ शेष बसेको ठाउँमा, २ शेष बाटामा, ३ शेष अर्ध बाटामा, ४ शेष ग्राममा, ५ शेष फर्केको ६ शेष रोग लागेको ० शेष रहे फल शून्य जानु। हराए वा चोरी भएको वस्तु ज्ञानम्-प्रश्नकालको तिथि, बार, नक्षत्र र प्रहरको सङ्ख्या जोडी १० ले गुणन गर्नु १७ ले भाग गर्नु। भाग गर्दा १ शेष बचे पृथ्वी (जमीन) मा वा गाडेको, २ शेष रहे भाँडामा, ३ जलमा, ४ अटाली वा जमिन-देखि मास्तिर, ५ कसिगरमा, ६ गोबर वा कसिगरमा, ७ वा ० शेष रहे खरानीमा हुनसक्ने बताइएको छ। साउने संक्रान्तिको बेलुका उत्काप्रक्षेपण (अगुलो) फाल्ने मन्त्रः-कण्डारक! सुराधीश! गृहाण दीपमुत्तमम्। सरलेन्धनसम्भूतं ममारिष्टं विनाशय। कण्डारक! रात्रिचर! लूतादि भयनाशन। उत्कामिमां प्रक्षिपामि मास्तु लूताभयं मम॥

पाषांशाः-श ४, रा ५ के ११, ५ ग सू ५, मं ६, ७ ग श ५, ८ ग सू ६, ११ मं ७, १२ ग सू ७, १५ ग सू ८, १६ ग मं ८

वक्रमार्गोदयास्तः-मं मा उ, बु मा अ पु, बु व उ, शु मा उ प, श मा उ

ग्रहाणां राशिप्रवेशः ६ ग बु ४, १६ ग शु ५,

पंचांग बुटवल किसान पसल
बुटवल
धार्मिक पुस्तक पसल
दमौली

बाबू माधवप्रसाद शर्मा
दूधविनायक, वाराणसी
पालिखे बुक्स एण्ड स्टेशनर्स
महेन्द्रपूल, पोखरा

| श्रा | ३ | ४ | २ | ८ | ३ | ४ | ९ |
|------|----|----|-----|----|----|----|----|
| ५ | ३ | १६ | २८ | २४ | १६ | १३ | २५ |
| ग | ४७ | ३८ | ३६ | ९ | ५१ | ५ | १ |
| १ | ४९ | ० | ५ | ३५ | १ | ५० | २४ |
| ३७ | ५६ | ३७ | १०८ | ७ | ७३ | ६ | ३ |
| १९ | ५७ | ५ | ० | ५० | २५ | ३७ | ११ |

| श्रा | ३ | ४ | ३ | ८ | ३ | ४ | ९ |
|------|----|----|-----|----|----|----|----|
| १२ | १० | २० | ११ | २३ | २५ | १३ | २४ |
| ग | २६ | ५७ | २६ | १५ | २४ | ५४ | ३९ |
| १ | ५७ | ३३ | १७ | १ | ४ | १४ | ९ |
| ३७ | ५७ | ३७ | ११० | ७ | ७३ | ६ | ३ |
| १० | ३ | २४ | २७ | २२ | २४ | ५५ | ११ |

| श ५ मं | ३ बु |
|---------|------|
| ६ | २ |
| सू ४ शु | १ |
| के | १ |
| ७ | १२ |
| ८ | ११ |
| ९ बु | ११ |

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.१९२८ श्रावणशुक्लपक्षः (गुंलाख) पा. श्ले. ९. पू. वि. अ. ध. २३ (अगस्त ८ सन् २००८) दक्षिणायन वर्षर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः

२३

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|---------|-------|-------|------|--|---|
| १८ | श | १ | २२११४ | दि | २१२२ | अ | ३१११८ | सा | ५५९ | व्य | ३३१४४ | बा | ५०३१ | मानसः | ३१११८ | ३३१२६ | ५१२८ | २ | [७] (जनै पूर्णिमा), ल.पु.कुंभेश्वरमेला, हयग्रीवोत्पत्तिः ७ |
| १९ | आ | २ | १९१२ | दि | ११५ | म | ३०११० | दि | ५१३३ | व | २८१४५ | तै | ४७५१ | मुद्रः | सिं | ३३१२३ | ५१२९ | ३ | चन्द्रोदयः, (गुंलाधर्मरिभः) ७, [७] (गुंपुन्हि-ब्या जानके) ७ |
| २० | सो | ३ | १६१५६ | दि | १२११५ | पू | ३०१९ | दि | ५१३३ | प | २४१४० | व | ४६१२० | ध्वजः | ४५१२० | ३३१२० | ५१२९ | ४ | अश्लेषायां १ रविः ९, वराहजयंती, |
| २१ | मं | ४ | १६११ | दि | ११५४ | उ | ३१११९ | सा | ६११ | शि | २११३३ | ब | ४६१३ | घाता | कं | ३३११६ | ५१३० | ५ | भ. ४६१२० उ., [७] अश्लेषायां २ रविः ३८, मघायां १ सिंहबुधः ४०, |
| २२ | बु | ५ | १६१२२ | दि | १२१३ | ह | ३३१४५ | सा | ७१० | सि | १९१२६ | कौ | ४७१३ | आनन्दः | कं | ३३११३ | ५१३० | ६ | भ. १६११ या., मङ्गल ४ व्रतं, उषायां १ भौमः ४६, |
| २३ | बृ | ६ | १८१० | दि | १२१४३ | चि | ३७१२४ | रा | ८१२८ | सा | १८११९ | ग | ४९११७ | चरः | ५१२५ | ३३११० | ५१३१ | ७ | नागपञ्चमी, नागपूजनं, (नागटास्ते), ल.पु. दानघाटधापा ७ |
| २४ | शु | ७ | २०१५० | दि | १५११ | स्वा | ४२११० | रा | १०१२३ | शु | १८१८ | म | ५२१३९ | गदः | तु | ३३१७ | ५१३१ | ८ | [७] खेलनागदह (टौदह) मेला, कल्कीजयंती ७ |
| २५ | श | ८ | २४१४१ | दि | ३१२४ | वि | ४७१५१ | रा | १२१४० | शु | १८१४४ | बा | ५६१५५ | शुभः | ३११२१ | ३३१४ | ५१३२ | ९ | भ. २०१५० उ. ५२१३९ या., गोस्वामीतुलसीदासजयंती ७ |
| २६ | आ | ९ | २९११७ | सा | ५११५ | अ | ५४१८ | रा | ३११२ | ब्रं | १९१५७ | तै | ६०१० | मृत्युः | वृ | ३३१० | ५१३२ | १० | अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, (यलपञ्चदानम्), |
| २७ | सो | १० | ३४११८ | सा | ७११६ | ज्ये | ६०१० | समस्त | ऐं | २११३१ | तै | १४१५ | पद्मः | वृ | ३२१५७ | ५१३३ | ११ | अश्लेषायां ३ रविः ८, [७] उषायां ३ भौमः १९, घ.प.प्र. ५२१४४, ७ | |
| २८ | मं | ११ | ३९११७ | रा | ९११६ | ज्ये | ०१३९ | प्रा | ५१४९ | वै | २३१७ | व | ६१४९ | मुद्रः | ०१३९ | ३२१५३ | ५१३३ | १२ | उषायां २ कन्यायां भौमः ३३३६, पूषायां शुक्रः १८, |
| २९ | बु | १२ | ४३१४९ | रा | १११५ | मू | ६१५९ | प्रा | ८१२१ | वि | २४१२७ | ब | १११३७ | ध्वजः | घ | ३२१५० | ५१३४ | १३ | भ. ६१४९ उ. ३९११७ या., पश्चिमोदितो बुधः ११, पुत्रदा ११ व्रतम्, |
| ३० | बृ | १३ | ४७१३३ | रा | १२१३५ | पू | १२१४३ | दि | १०१४० | प्री | २५११४ | कौ | १५१४७ | घाता | २९१२ | ३२१४७ | ५१३४ | १४ | (वहियः ब्वये) अश्लेषायां ४ रविः ३७, [७] भूसंरक्षणदिवसः, |
| ३१ | शु | १४ | ५०११४ | रा | ११४१ | उ | १७१३४ | दि | १२१३६ | आ | २५११६ | ग | १९१२ | आनन्दः | म | ३२१४३ | ५१३५ | १५ | प्रदोषव्रतं, पूषायां बुधः ६, [७] रात्रौ खण्डग्रासश्चन्द्रग्रहणम्, |
| ३२ | श | १५ | ५११४३ | रा | २११६ | श्र | २१११८ | दि | २१७ | सौ | २४१२४ | भ | २११८ | स्थिरः | ५२१४४ | ३२१३९ | ५१३५ | १६ | भ. ५०११४ उ., श्रीशिवस्य पवित्रारोपणम्, |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | १६ | भ. २११८ या., पूर्णिमाव्रतं, ऋषितर्पणी, रक्षाबंधनं, ७ |

अथ नागपूजने विशेषः - नागपंचमीमा गोमय नागबनाई नागको मानपात्रमा दीपकलश गणेश पूजनपूर्वक दधिदुर्वाङ्कुर कुश सिन्दूर गन्धादिले नागको पूजागरी टाँस्नाले सर्पको भय हुँदैन। सर्पविषनाशन मन्त्रः - ॐ कुरुकुलये हुं फटस्वाहा। योमन्त्र परिमित जपी फुकीदिनाले सर्पको विषनाश हुन्छ। नागपूजने गृहारम्भे नागशीरोज्ञानम् - भाद्राश्विन कार्तिकमा पूर्वशीर, मार्ग पौष माघमा दक्षिण, फाल्गुन चैत्र, वैशाखमा पश्चिम, ज्येष्ठाषाढश्रावणमा उत्तर दिशा नागको शीर हुन्छ। अथ रक्षाबन्धन मंत्रः - येन बद्धो बलीराजा

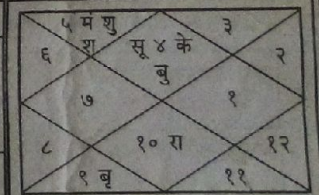
दानवेन्द्रोमहाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल-माचल। यज्ञोपवित (जनै) - शुद्ध पवित्र जमीनमा उपजेको कपासबाट सघवा ब्राह्मणीले कतिका धागाले विधिपूर्वक बनाएको जनै शास्त्रविधिसे संस्कार गरी अभिमंत्रित गरी लगाउनुपर्छ। यज्ञोपवीतधारणमन्त्रः - यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

| | | | |
|---------------------------------------|--|-----------------------------|--|
| बम्बे बुक डीपो कचौडोगल्ली, वाराणसी | रेसुङ्गा पुस्तक पसल राममन्दिर, वुटवल | पंचांग प्राप्ति स्थान | अन्तर्राष्ट्रिय ज्योतिष अनुसन्धान प्रशिक्षण एवं भविष्यवाणी केन्द्र विराटनगर केन्द्र |
|---------------------------------------|--|-----------------------------|--|

पापशोः - श ५, रा ५ के ११, १९ गते सू ९, २१ ग मं ९, २२ ग सू १०, २६ ग सू ११, २७ ग मं १०, २९ ग सू १२, ३२ ग मं ११

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा २८ उ प, बृ व उ, शु मा उ प, श मा उ, ग्रहाणां राशिप्रवेशः - २७ ग मं ६, २२ ग बु ५,

| १७ | सू. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. | १८ | सू. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
|------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| श्रा | ३ | ४ | ३ | ८ | ४ | ४ | ९ | श्रा | ३ | ४ | ४ | ८ | ४ | ४ | ९ |
| १९ | १७ | २५ | २४ | २२ | ३ | १४ | २४ | २६ | २३ | २९ | ७ | २१ | १२ | १५ | २३ |
| ग | ६ | १९ | २३ | २४ | ५७ | ४४ | १६ | ग | ४७ | ४३ | ९ | ३९ | ३० | ३६ | ५४ |
| १ | ५७ | १६ | ४५ | २४ | ९ | ३६ | ५३ | १ | ५९ | ७ | २८ | ३२ | १६ | २९ | ३८ |
| ३७ | ५७ | ३७ | ११० | ६ | ७३ | ७ | ३ | ३६ | ५७ | ३८ | १०७ | ५ | ७३ | ७ | ३ |
| १ | ११ | ४४ | २० | ३८ | २४ | ११ | ११ | ५२ | २१ | २ | ३८ | ४१ | २३ | २३ | ११ |



| | | |
|--|--|---|
| <p>अथ कुशच्छेदनमंत्रः—विरञ्चिता सहोत्पन्न परमेष्ठी निरर्गतः । नृदः सर्वाणि पापानि दूर्ध्वस्वस्ति करो भव । यो मंत्रले प्रार्थनागरी ॐ हूँ फट्स्वाहा यो मन्त्रले पूर्वोत्तरमुखगरी ग्रहण गर्नु । अथ वर्णाविचार—अतिवृष्टि अनावृष्टि भएमा अनिकाल, अकालको वर्षाले रोगभय, अकालमा ३ दिन बढी वर्षा भएत्यस देशका प्रधान पुरुषको वध ७ दिन वर्षाभए राजामा पीडा प्रजामा रोग । हाडमांस जोसो तेल रगत अंगार धूलो माछो सर्प भ्यागते गटेउलो वर्से भने देशमा परचक्रभय जनतामा रोगभयहन्छ । सिंहार्केगोप्रसव नारदः—भानौ</p> | <p>पापांशाः—श ५, रा ५ के ११, १ ग सु १, २ गश ६, ४ ग सु २, ५ ग म २ रा ४ के १०, ८ ग सु ३, १० ग म १, ११ ग सु ४, १४ ग सु ५,</p> | <p>वक्रमार्गोदयास्तः—मं मा उ, बु मा उ प, बु व उ, शु मा उ प, श मा २ अ, ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ ग सु ५, ८ ग बु ६ श ६</p> |
|--|--|---|

| | | | | | | |
|-----------------------------|---|---|---|---|--|--|
| पंचांग प्राप्ति स्थान | सुब्बा होमनाथ केदारनाथ रामकटोरा, वाराणसी | दुर्गा साहित्य श्रृण्ण्डार पो.बा.नं.१०९६, वाराणसी | ⑩ श्रीकृष्णाष्टमी- व्रतञ्च, त्रिपुष्करः १५/४८ उ. ३०/३५ या, कन्यायांसायनार्कः १, (३२) साप्ताखः | भा १ ० ४ १९ २१ १६ २३ ग ३० ९ २४ १ ३ २९ ३२ १ ३३ ५ ३९ ५६ २५ २९ ३३ ३६ ५७ ३८ १०२ ४ ७३ ७ ३ ४३ ३२ २१ १ ३२ २३ ३१ ११ | भा १ ० ५ १० २ ४ १९ २३ ग ४ ७ ८ ० २० २९ १७ २३ ग १३ ३७ ४६ ३२ ३६ २३ १० १ ५० ९ १९ ४७ ३४ १९ ८ | ७ सु श ३ ८ २ ९ बु ११ १ १० रा १२ |
| | पौष्प्रेष्ठ साहित्य सदन, पोखरा | गौरी पुस्तक पसल किर्न्धनगर, सुर्खेत | | ३६ ५७ ३८ १२ २ ७३ ७ ३ ३६ ४८ ३९ १२ १६ २२ ३७ ११ | | |

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.११२८ भाद्रपदशुक्लपक्षः (जलाश्व) पा. पू. ह. अ. श्र. २३. उभा. (अगस्त ८ सितं ९ सन् २००८) दक्षिणायनं वर्षर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः २५

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|------|-------|------|-------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|
| १५ | आ | १ | ४६।३६ | रा | १२।२१ | पू | ४८।५७ | रा | १।१७ | सि | ४५।२२ | किं | १७।३० | छत्रः | सिं | ३१।४३ | ५।४२ | 31 |
| १६ | सो | २ | ४५।४२ | रा | ११।५९ | उ | ४९।५१ | रा | १।३९ | सा | ४१।५९ | बा | १५।५९ | श्रीवत्सः | ४।३ | ३१।३९ | ५।४३ | 1 |
| १७ | मं | ३ | ४६।३ | रा | १२।९ | ह | ५१।५९ | रा | २।३१ | शु | ३९।३७ | तै | १५।४२ | सौम्यः | कं | ३१।३६ | ५।४३ | 2 |
| १८ | बु | ४ | ४७।४२ | रा | १२।४८ | चि | ५५।२२ | रा | ३।५३ | शु | ३८।१३ | व | १६।४२ | कालः | २३।३१ | ३१।३२ | ५।४४ | 3 |
| १९ | बु | ५ | ५०।३२ | रा | १।५७ | स्वा | ५९।५४ | रा | ५।४२ | ब्रं | ३७।४७ | ब | १८।५८ | स्थिरः | तु | ३१।२८ | ५।४४ | 4 |
| २० | शु | ६ | ५४।२५ | रा | ३।३१ | विं | ६०।० | | समस्त | ऐं | ३८।११ | कौं | २२।२१ | मातङ्गः | ४८।५६ | ३१।२४ | ५।४५ | 5 |
| २१ | श | ७ | ५९।५ | रा | ५।२३ | वि | ५।२२ | प्रा | ७।५४ | वै | ३९।१३ | ग | २६।४० | शुभः | वृ | ३१।२० | ५।४५ | 6 |
| २२ | आ | ८ | ६०।० | | समस्त | अ | ११।३३ | दि | १०।२३ | वि | ४०।४० | भ | ३१।३५ | मृत्युः | वृ | ३१।१६ | ५।४६ | 7 |
| २३ | सो | ८ | ४।९ | प्रा | ७।२६ | ज्ये | १८।५ | दि | १।० | प्री | ४२।१४ | बा | ३६।४४ | पद्मः | १८।५ | ३१।१२ | ५।४६ | 8 |
| २४ | मं | ९ | ९।१४ | दि | ९।२८ | मू | २४।३० | दि | ३।३४ | आ | ४३।३५ | तै | ४१।३९ | छत्रः | घ | ३१।१८ | ५।४६ | 9 |
| २५ | बु | १० | ९३।५३ | दि | ११।२० | पू | ३०।२४ | दि | ५।५७ | सौ | ४४।२६ | व | ४५।५६ | श्रीवत्सः | ४६।४६ | ३१।४ | ५।४७ | 10 |
| २६ | बु | ११ | ९७।४४ | दि | १२।५३ | उ | ३५।२८ | सा | ७।५९ | शो | ४४।३५ | व | ४९।१८ | सौम्यः | म | ३१।० | ५।४७ | 11 |
| २७ | शु | १२ | २०।३३ | दि | २।१ | श्र | ३९।२९ | रा | ९।३५ | अ | ४३।५२ | कौ | ५१।३१ | धूम्रः | म | ३०।५६ | ५।४८ | 12 |
| २८ | श | १३ | २२।१० | दि | २।४० | घ | ४२।१७ | रा | १०।४३ | सु | ४२।११ | ग | ५२।३० | वर्द्धः | ११।२ | ३०।५२ | ५।४८ | 13 |
| २९ | आ | १४ | २२।३० | दि | २।४९ | श | ४३।५१ | रा | ११।२१ | घृ | ३९।२९ | भ | ५२।१२ | रक्षः | कुं | ३०।४८ | ५।४९ | 14 |
| ३० | सो | १५ | २१।३४ | दि | २।२७ | पू | ४४।११ | रा | ११।३० | शू | ३५।४७ | बा | ५०।३९ | मुसलः | २९।१२ | ३०।४४ | ५।४९ | 15 |

[७] गोरखकालीपूजा,महालक्ष्मीव्रतारंभः, निजामतिसेवादिवसः (गुंलाधर्मसमाप्तिः),त्रिपुंकरः४८।५७उ,हस्तर्क्षे२ भौमः५६,७ चन्द्रोदयः,(दरखाने),(सितंबर९ ता.३०),७ हस्तर्क्षेबुधः५ मन्वादि,हरितालिका३व्र(तीज),हस्तर्क्षेशुकः७७हस्तर्क्षे३ भौमः५,७ म.१६।४२उ. ४७।४२या., गणेशचतुर्थीव्रतं, चन्द्रदर्शनदोषः७ ऋषि ५ व्रतं, सप्तर्षिपूजा, (क्वखजाविये),अगस्त्योदयः२०, २० सूर्यः ६,७ श्राद्धारम्भः, प्रतिपच्छ्राद्धं, चेपाङ्कःचोनामपर्व, २१ म.५९।५उ,भ.पु.मङ्गलकुंडमेला,त्रिपु.५।२२या.,पूफायां:३रवि४९,७ २२ म.३१।३५या.,कागेश्वरी८,कायजस्नानं,कागेश्वरमेला,अष्टमीव्रतं७ २३ विश्वासक्षरतादिवसः,शिक्षादिवसः,७(चथा),पूफायां:२रवि:२३, २४ अदुःखनवमीव्र.,७ अनन्त१४ व्र.कुमारी(इन्द्र)यात्रा(स्वाहा), २५ म.४५।५६ उ.,पूफायां ४ रवि: १५,७, चित्रर्क्षेशुकः२, २६ म.१७।४४या.,हरिपरिवर्तिनी११व्र.हस्तर्क्षे४भौमः१२,मार्गागुरुः३ २७ प्रदोषव्रतं,वामन १२,दधिदानं,(इन्द्रध्वजोत्थानं)(मतलोयके), २८ (हुंगया),घ.पं.प्र.११।२,उफायां १ रवि:४९,पूफायां३ शनिः५७७ २९ म.२२।३० उ. ५२।२२ या., पूर्णिमाव्रतं, बालदिवसः,७ ३० इन्द्रदहस्नानं, भ.पु.सिद्धोपखरीमेला, (यैयापुन्हि व मगया),७

अथ पाक्षिकव्रतः विचारः-भाद्रशुक्ल तृतीया हरितालिका-चतुर्थीसहितायातु सा तृतीया फलप्रदाः
 अथैषव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्र प्रवर्धिनी। भाद्रशुक्लचतुर्थी गणेशः ४ अस्मिन् चन्द्रदर्शन दोषस्तस्य शान्तये मन्त्रः
 -सिंहप्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवताहतः। सुकुमारकमारोदी तव ह्येष श्यमन्तक इति। पंचमीमा दतिवन ग्रहण
 मंत्र-आयुर्बलं यशोवर्चं प्रजापशुवसुनिच। ब्रम्ह
 प्रजां च मेघां च त्वत्रो देहि वनस्पते। दौतमाङ्गे
 मन्त्र-मुखदुर्गन्धनाशाय दन्तानाञ्च विशुद्धये।
 शीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तघावनम्॥
 द्वादश्यां विष्णुपरिवर्तनोत्सवः -रात्रौ
 षोडशोपचारैः विष्णुं संपूज्य प्रार्थयेत्। वासुदेव
 जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वेन परिवर्तस्व
 सुखं स्वर्गीह माधवेति।

पापांशाः-श ६, रा ४ के १०, १५ ग मं २, १८ ग सू ६, २१
 ग सू ७ मं ३, २५ ग सू ८, २६ ग मं ४, २८ ग सू ९ श ७

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा उ
 प, बु २६ मा उ, शु मा उ प, श मा अ,

| २१ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| भा | ४ | ५ | ५ | ८ | ५ | ४ | ९ |
| १५ | १३ | १३ | १० | २० | ८ | १८ | २२ |
| ग | ५८ | ७ | ४० | १२ | ९ | १७ | ४७ |
| १ | ५५ | १९ | ५४ | ५७ | ३९ | ११ | ५३ |
| ३६ | ५७ | ३८ | ७६ | १ | ७३ | ७ | ३ |
| २६ | ५८ | ५७ | ३३ | ५४ | २० | ३८ | ११ |

| २२ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| भा | ४ | ५ | ५ | ८ | ५ | ४ | ९ |
| २२ | २० | १७ | १८ | २० | १६ | १९ | २२ |
| ग | ४५ | ३९ | १६ | २ | ४२ | ११ | २५ |
| १ | ३९ | ३५ | १७ | ५७ | ३५ | ९ | ३७ |
| ३६ | ५८ | ३९ | ५१ | ० | ७३ | ७ | ३ |
| १८ | १२ | १६ | ८ | २९ | १८ | ३८ | ११ |

| २३ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| भा | ४ | ५ | ५ | ८ | ५ | ४ | ९ |
| २९ | २७ | २२ | २२ | २० | २५ | २० | २२ |
| ग | ३४ | १४ | १५ | ३ | १५ | ५ | ३ |
| १ | ३ | ० | ४० | २ | १६ | १ | २२ |
| ३६ | ५८ | ३९ | १२ | ० | ७३ | ७ | ३ |
| १० | २७ | ३४ | ४६ | ५५ | १५ | ३५ | ११ |

| | |
|------------|--------|
| ६ मं बु शु | ४ के |
| ७ | सू ५ श |
| ८ | २ |
| ९ बु | ११ |
| १० रा | १२ |

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वजेसम्प | न. | घ.प. | वजेसम्प | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | | | |
|-----|-----|-----|------|---------|----|-------|---------|-------|------|-------|------|-------|-------|--------|-----------|-------|-------|------|----|---|
| | ३१ | मं | १ | १९१२६ | दि | ११३६ | उ | ४३१२३ | रा | ११११९ | गं | ३१११० | तै | ४७१५८ | सिद्धि: | मी | ३०१४० | ५१५० | 16 | ७ तृतीयाश्राद्धं, विश्वकर्मापूजा, घ.पं.नि. ४११३५, |
| आ | १ | बु | २ | १६११४ | दि | १२१२० | रे | ४११३५ | रा | १०१२८ | वृ | २५१४२ | व | ४४११७ | उत्पात: | ४११३५ | ३०१३५ | ५१५० | 17 | द्वितीयाश्राद्धं, (पुंचलीभुजा) चित्रशै १ भौम:१७, वक्रोबुध:५४, |
| प्र | २ | बु | ३ | १२१७ | दि | १०१४१ | अ | ३८१५५ | रा | ९१२५ | ध्रु | १९१३० | व | ३९१४५ | मानस: | मे | ३०१३१ | ५१५१ | 18 | भ.४४११७उ, उफायां२ कन्यायामर्क:५१४६, आश्विनसंक्रान्ति: ७ |
| | ३ | शु | ४ | ७११३ | दि | ८१४४ | भ | ३५१३५ | रा | ८१५ | व्या | १२१४२ | कौ | ३४१३३ | मुद्गर: | ४९१४० | ३०१२७ | ५१५१ | 19 | भ.१२१७या., चतुर्थीश्राद्धं, (गातिला) चि.३तुलायांशुक:२९१२९, |
| | ४ | श | ५ | ११५३ | दि | ६१३३ | कु | ३११४६ | सा | ६१३४ | ह | ५१३४ | ग | २८१५१ | ध्वज: | वृ | ३०१२३ | ५१५२ | 20 | पञ्चमीश्राद्धं, इन्द्रध्वजपातनं, (नानिचाया:) [७ चित्रशै३तुलायां७ |
| प्र | ५ | आ | ७ | ४११४८ | रा | ११४७ | रो | २७१३९ | दि | ४१५५ | सि | ५०१६ | भ | २२१५१ | धाता | ५५१३३ | ३०११९ | ५१५२ | 21 | भ.५५१५३उ., षष्ठीश्राद्धं, उफायां३ रवि:३० [७ भौम:२११४५, |
| | ६ | सो | ८ | ४३१४४ | रा | १११२२ | मु | २३१२६ | दि | ३११५ | व्य | ४२१२१ | बा | १६१४४ | आनन्द: | मि | ३०११५ | ५१५२ | 22 | भ.२२१५१या., रवि७ व्रतं, सप्तमीश्राद्धं, विश्वशान्तिदिवस: ७ |
| | ७ | मं | ९ | ३७१५२ | रा | ९१२ | आ | १९१२२ | दि | ११३८ | व | ३४१४६ | तै | ५११४५ | चर: | मि | ३०१११ | ५१५३ | 23 | अष्टमीव्रतंश्राद्धञ्च, गोरखकालीपूजा, महालक्ष्मीव्रतसमाप्ति: ७ |
| | ८ | बु | १० | ३२१२५ | सा | ६१५१ | पु | १५१३८ | दि | १२१९ | प | २७१३० | व | ५११५५ | गद: | ११३२ | ३०१७ | ५१५३ | 24 | नवमीश्राद्धं, मातुनवमी, उफायां४ रवि:५५, स्वात्यांशुक:५७ ७ |
| | ९ | बु | ११ | २७१३४ | दि | ४१५५ | ति | १२१२७ | दि | १०१५३ | शि | २०१४३ | कौ | ५५१२६ | शुभ: | क | ३०१३ | ५१५४ | 25 | भ.५१४ उ. ३२१२५या., दशमीश्राद्धम्, [७ पूर्वोदित:शनि:२६, |
| प्र | १० | शु | १२ | २३१२९ | दि | ३११८ | अ | ९१५८ | दि | ९१५४ | सि | १४१३१ | ग | ५११४८ | मृत्यु: | ९१५८ | २९१५९ | ५१५४ | 26 | इन्द्रिचा११ व्रतं, एकादशीश्राद्धम्, [७ तुलायांसायनार्क:५५१२०, |
| | ११ | श | १३ | २०१२० | दि | २१३ | म | ८१२३ | दि | ९११६ | सा | ९१४ | भ | ४९१११ | पद्म: | सिं | २९१५५ | ५१५५ | 27 | प्रदोषव्रतं, मघापूर्णा द्वादशीश्राद्धं, फर्पिङ्ग हरिश्चकरयात्रा ७ |
| २५ | १२ | आ | १४ | १८११७ | दि | १११४ | पू | ७१५० | दि | ९१४ | शु | ४१२६ | च | ४७१४३ | छत्र: | २२१५३ | २९१५० | ५१५५ | 28 | भ.२०१२०उ. ४९१११या., त्रयोदशीश्राद्धं, (न:लासनेचहेपूजा) ७ |
| | १३ | सो | ३० | १७१२६ | दि | १२१५४ | उ | ८१२७ | दि | ९११९ | शु | ५१२६ | किं | ४७१३० | श्रीवत्स: | कं | २९१४६ | ५१५६ | 29 | दर्शश्राद्धं, निशीबानं पितृविसर्जनम्, [७ कलियुगादि:) ७ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 29 | स्नानदानादी सोमवतीअमावास्या, हलोबानं, मातामहश्राद्धम्, |

अथमहालयश्राद्धनिर्णयः-कन्याराशिमा सूर्य सरका पक्षमा पितृका निमित्त तर्पण श्राद्ध, सिधादान गर्तु, नगरे धन पुत्रनाश हुन्छ। श्राद्धकालनिर्णयः-पूर्वाह्नकालमा दैविकश्राद्ध, अपराह्नकालमा पार्वण र एकपार्वण श्राद्ध, मध्याह्नकालमा एकोदित श्राद्ध गर्नुपर्दछ। श्राद्धविघ्ननिर्णयः-श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने अविज्ञाने मृतेऽहनि। एकादश्यांतु कर्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषतः॥ श्राद्धग्राह्यपुण्याणि-अगस्त्यं भृङ्गराजञ्च तुलसी शतपत्रिका। चम्पकं तिल पुष्पञ्च षडेते पितृवल्लभाः॥ श्राद्धेनिषिद्धपुण्याणि-कैतकी करवीरं च वकुलं कुन्दकं तथा। पाटली चैव जार्ती च श्राद्धे यत्नेन वर्जयेत्॥

| | | | | | | |
|---|---|---|--|--|--|--|
| <p>पंचांग प्राणि स्थान हेलो स्टेशनरी एण्ड बुक्स हाउस, पोखरा डाकुर्दीन नन्दकिशोर, वुटवल ओजन बुक्स एण्ड स्टेशनर्स भोटाहिटी, काठमाण्डौ</p> | <p>⑦ द्विपुष्कर: २७/३९ उ. ४९/४८ या., चित्रार्थ २० भौम:२०, पश्चिमास्तोबुध: ८, ⑧ शस्त्रादिभिर्हतानां चतुर्दशी- श्राद्धं, हस्तार्थ १ रावि:१८, पर्यटनदिवसः,</p> | <p>आ ५ ५ ५ ८ ६ ४ ९ ५ ४ २६ २१ २० ३ २० २१ ग २४ ५० २२ १३ ४७ ५८ ४१ १ १५ ३३ २८ ९ ३५ २६ ७ ३६ ५८ ३९ ३२ २ ७३ ७ ३ २ ४३ ५२ ३७ १९ ११ २९ ११</p> | <p>आ ५ ६ ५ ८ ६ ४ ९ १२ ११ १ १६ २० १२ २१ २१ १ १६ २९ १९ ३३ १९ ५० १८ १ १५ १८ १० ४ २३ ५९ ५२ ३५ ५८ ४० ५३ ३ ७३ ७ ३ ५४ ५९ ११ ५८ ३९ ६ २० ११</p> | <p>आ ५ ६ ५ ८ ६ ४ ९ १२ ११ १ १६ २० १२ २१ २१ १ १६ २९ १९ ३३ १९ ५० १८ १ १५ १८ १० ४ २३ ५९ ५२ ३५ ५८ ४० ५३ ३ ७३ ७ ३ ५४ ५९ ११ ५८ ३९ ६ २० ११</p> | <p>आ ५ ६ ५ ८ ६ ४ ९ १२ ११ १ १६ २० १२ २१ २१ १ १६ २९ १९ ३३ १९ ५० १८ १ १५ १८ १० ४ २३ ५९ ५२ ३५ ५८ ४० ५३ ३ ७३ ७ ३ ५४ ५९ ११ ५८ ३९ ६ २० ११</p> | <p>७ शु स म द ८ बु ३ ४ जे ९ बु ३ १० रा १२ २ ११ १</p> |
|---|---|---|--|--|--|--|

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.११२८ आश्विन शुक्ल (दुर्गा) पक्षः (कौलाख्य) पा. ह. चि. अ. श्र. २३. शा. पू. (सितं. ९ अक्टू. १० सन् २००८) दक्षिणायनं शरदृतुः, प्लवनामक संवत्सरः २७

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|-------|-------|------|-------|-------|-------|---------|-------|-------|------|----|
| १४ | मं | १ | १७।५१ | दि | १।५ | ह | १०।१८ | दि | १०।४ | ऐं | ५६।२३ | बा | ४८।३४ | सौम्यः | ४१।४३ | २९।४२ | ५।५६ | 30 |
| १५ | बु | २ | १९।३४ | दि | १।४६ | चि | १३।२४ | दि | ११।१८ | वै | ५५।३८ | तै | ५०।५४ | कालः | तु | २९।३८ | ५।५७ | 1 |
| १६ | बु | ३ | २२।२९ | दि | २।५७ | स्वा | १७।४० | दि | १।१ | वि | ५५।४५ | व | ५४।२२ | स्थिरः | तु | २९।३४ | ५।५७ | 2 |
| १७ | शु | ४ | २६।२७ | दि | ४।३३ | वि | २२।५८ | दि | ३।९ | प्री | ५६।३४ | ब | ५८।४६ | मातङ्गः | ६।३३ | २९।३० | ५।५८ | 3 |
| १८ | श | ५ | ३१।१२ | सा | ६।२७ | अ | २९।१ | सा | ५।३५ | आ | ५७।५२ | कौ | ६०।० | अमृतः | वृ | २९।२६ | ५।५८ | 4 |
| १९ | आ | ६ | ३६।२३ | रा | ८।३२ | ज्ये | ३५।३० | रा | ८।११ | सौ | ५९।२१ | कौ | ३।४५ | काणः | ३५।३० | २९।२२ | ५।५९ | 5 |
| २० | सो | ७ | ४१।३४ | रा | १०।३७ | मू | ४१।५८ | रा | १०।४७ | शो | ६०।० | ग | ९।० | लुम्बः | घ | २९।१८ | ५।५९ | 6 |
| २१ | मं | ८ | ४६।१९ | रा | १२।३१ | पू | ४८।१ | रा | १।१२ | शो | ०।४० | भ | १।४।० | मित्रः | घ | २९।१४ | ६।० | 7 |
| २२ | बु | ९ | ५०।१६ | रा | २।७ | उ | ५३।१९ | रा | ३।२० | अ | १।३६ | बा | १८।२४ | वज्रः | ४।२५ | २९।१० | ६।० | 8 |
| २३ | बु | १० | ५३।१० | रा | ३।१७ | श्र | ५७।३५ | रा | ५।३ | सु | १।५२ | तै | २१।५१ | ध्वजः | म | २९।६ | ६।१ | 9 |
| २४ | शु | ११ | ५४।५२ | रा | ३।५८ | घ | ६०।० | समस्त | धृ | ३।१९ | ५९।४९ | व | २४।१० | घाता | २९।१६ | २९।१२ | ६।१ | 10 |
| २५ | श | १२ | ५५।१७ | रा | ४।९ | घ | ०।३९ | प्रा | ६।१७ | गं | ५७।१९ | ब | २५।१४ | वर्द्धः | कुं | २८।५८ | ६।२ | 11 |
| २६ | आ | १३ | ५४।२६ | रा | ३।४९ | श | २।२९ | प्रा | ७।२ | वृ | ५३।४८ | कौ | २५।० | रक्षः | ४८।४ | २८।५४ | ६।३ | 12 |
| २७ | सो | १४ | ५२।२३ | रा | ३।० | पू | ३।५ | प्रा | ७।१७ | घृ | ४९।२१ | ग | २३।३२ | मुसलः | मी | २८।५० | ६।३ | 13 |
| २८ | मं | १५ | ४९।१५ | रा | १।४६ | उ | २।३२ | प्रा | ७।५ | व्या | ४४।२ | भ | २०।५६ | सिद्धिः | मी | २८।४६ | ६।४ | 14 |

| | |
|----|--|
| 10 | (असंचालं), घ.पं.प्र.२९।१६, चित्रक्षेत्रं रविः ४९, पूजायां ४३निः ५४, चन्द्रोदयः, नवरात्रारंभः, घटस्थापना, (नः लास्वने), 1 |
| 1 | चित्रक्षेत्रं भौमः ५२, (अक्टूबर १० ता. ३१), 2 विशाखायां शुक्रः ५४ |
| 2 | म. ५४।२२उ. हस्तक्षेत्रं बुधः २७, 3 विश्वहुलाकदिवसः, मार्गाबुधः २४ |
| 3 | म. २६।२७ या., 4 द्विपु. १७।५१ उ., हस्तक्षेत्रं २ रविः ४२, |
| 4 | उपाङ्गललितान्नत्रतं, पचलीभैरवयात्रा, हस्तक्षेत्रं ३ रविः ४७ |
| 5 | बित्त्वनिमन्त्रणम्, 6 स्वात्यां १ भौमः २०, पूर्वोदितो बुधः १०, |
| 6 | म. ४१।३४उ., सरस्वत्यावाहनं, नवपत्रिकाप्रवेशः (फूलपाती), 7 |
| 7 | म. १४।० या., भौममहाष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, 8 |
| 8 | महानवमीव्रतं, मन्वादिः (स्याक्कोट्याक्को), पश्चिमास्तो भौमः ४६, |
| 9 | विजयादशमी (दर्शोदीका), खड्गयात्रा, (चालं), बौद्धवतारः, 10 |
| 10 | म. २४।१०उ. ५४।५२ या., पापाङ्कुशा ११ व्रतं, अन्नपूर्णायात्रा, 11 |
| 11 | द्विपुष्करः ०।३९ या., स्वात्यां २ भौमः १७, 12 स्नानआकाशदीपदाना- |
| 12 | प्रदोषव्रतम्, 13 (कुलछिष्यव), हस्तक्षेत्रं ४ रविः २७, |
| 13 | म. ५२।२३उ., वि. ४वृक्षिकेशुक्रः ८।०, अखिलवलीपूर्ति, |
| 14 | म. २०।५६ या., पूर्णिमाव्रतं, कोजाग्रतपूर्णिमाव्रतञ्च, कार्तिक 1 |

अथ दुर्गासन्धानम् - प्रतिपदाया घटस्थापना गरी नवमीसम्म दुर्गापूजा एकोत्तरवृद्धि ले कुमारीपूजा, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वतीपूजा सप्तशतीपाठ नक्तभोजन दशमीमा विसर्जन गरी प्रसाद (टोका) लगाउनाले वर्षभर सुखशान्ति मिल्दछ। जगन्माता भगवती जीवबलीले मात्र खुशी हुने होईनन्, श्रद्धाभक्तिले पनि प्रसन्न हुनुहुन्छ। स्मार्तबलिदान-कुष्माण्डनारीकेलश्रीफलश्रेष्ठमेव च। वस्त्रेण वेष्टितं कृत्वा छेदयेच्छुरिकादिभिः। एष स्मार्त बलिं प्रोक्तः धर्मशास्त्रानुगामिभिः। यस्ययत्राधिका - भक्तिस्तेन तुष्यन्ति देवता।। चन्द्रोदयपछि चन्द्रदर्शन मन्त्रः - निष्कलङ्क कलाधार गङ्गाधर शिरोमणे। मुक्ताहारनिभाभास बालचन्द्र नमोऽस्तुते॥

विजया दशमीकादिन वारबेला निम्नानुसार छ।
प्रातः ६।१ बजेबाट ७।२८ बजेसम्म शुभवेला
दिन ११।५० बजेबाट १।१७ बजेसम्म लाभवेला
दिन १।१७ बजेबाट २।४५ बजेसम्म अमृतवेला

॥ रंभौ (योसिमतवियेगु) (कतिपुन्हि), विश्वगुणस्तर-दिवसः, (सिगया), चित्रर्क्षे २ रविः १०,

पापांशाः - श ७, रा ४ के १०, १४ ग सू २, १५ ग मं ८, १८ ग सू ३, २० ग मं ९, २१ ग सू ४, २४ ग सू ५ श ८, २५ ग मं १०, २८ सू ६,

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा २२ अ, बु २३ मा २० उ पू, वृ मा उ, शु मा उ प, श मा उ, ग्रहाणां राशिप्रवेशः - २७ ग शु ८,

| २६ | सू. | मं. | बु. | ब. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|
| आ | ५ | ६ | ५ | ८ | ६ | ४ | ९ |
| १९ | १८ | ६ | ११ | २१ | २० | २२ | २० |
| ग | १० | १० | ३७ | २ | ५० | ४२ | ५६ |
| १ | ५ | १६ | १५ | २४ | २९ | १६ | ३७ |
| ३५ | ५९ | ४० | २६ | ४ | ७२ | ७ | ३ |
| ४५ | १५ | २९ | ५५ | ५५ | २८ | ७ | ११ |

| २७ | सू. | मं. | बु. | ब. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|
| आ | ५ | ६ | ५ | ८ | ६ | ४ | ९ |
| २६ | २५ | १० | ११ | २१ | २९ | २३ | २० |
| ग | ५ | ५३ | २३ | ४० | २० | ३१ | ३४ |
| १ | ४७ | ३० | १६ | ३७ | ३९ | ५२ | २१ |
| ३५ | ५९ | ४० | १८ | ६ | ७२ | ६ | ३ |
| ३६ | ३१ | ४८ | १८ | ६ | ४८ | ५० | ११ |

| | |
|---------|---------|
| मं ७ शु | ५ श |
| ८ | सू ६ बु |
| ९ बु | ३ |
| १० रा | १२ |
| ११ | १ |

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३० ने.सं.११२८ कार्तिककृष्णपक्षः (कौलागा) पा. अ. कृ. श्ले. १०. पू. स्वा. (अक्टूबर १० सन् २००८) दक्षिणावर्तनं शरदृतुः, प्लवनामक संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वजेसम्म | न. | घ.प. | वजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------------|-----|-------|------|------------|-----------|-------|--------|-------|-----|--|
| २९ | बु | १ | ४५१११ | रा | १२१९ | रे | ०१५७ ५८१३९ | ह | ३७५५ | वा | १७११९ | उत्पातः | ०१५७ | २८१४२ | ६१४ | १५ | [७] पूषायां ४ गुरुः २५, ज्येष्ठशुक्रः ५४, |
| ३० | बु | २ | ४०१२१ | रा | १०११३ | भ | ५५११७ | व | ३१११३ | तै | १२१५० | पद्मः | मे | २८१३८ | ६१५ | १६ | घ.पं.नि. ०१५७, अनुराधायां शुक्रः ५३, [८] स्वात्यां ४ भौमः ५, |
| १ | शु | ३ | ३४१५६ | रा | ८१४ | कु | ५११३३ | सि | २४१० | व | ७१४२ | छत्रः | ११२३ | २८१३४ | ६१५ | १७ | विशखाद्यदिवसः, स्वात्यां ३ भौमः ११, [९] कार्तिकसंक्रान्तिः, |
| २ | श | ४ | २९१८ | सा | ५१४५ | रो | ४७१२९ | रा | ११६ | व्य | १६१२५ | श्रीवत्सः | वृ | २८१३० | ६१६ | १८ | भ. ७१४२ उ. ३४१५६ या., चित्रायां ३ तुलायामर्कः ३११३८, [१०] |
| ३ | आ | ५ | २३१६ | दि | ३१२१ | मृ | ४३११६ | रा | ११२५ | व | ८१३७ | सौम्यः | १५१२२ | २८१२६ | ६१७ | १९ | [११] धन्वन्तरिजयन्ती, काकबली (कागतिहार), चित्रक्षेबुधः ४, [१२] |
| ४ | सो | ६ | १७१६ | दि | १२१५८ | आ | ३९१८ | रा | ११४७ | प | ०१३ ५३६ | कालः | मि | २८१२२ | ६१७ | २० | [१३] (स्वन्तिचः हेपूजा), स्वात्यां २ रविः ३३, [१४] वृश्चिकेमायनार्कः १४, |
| ५ | मं | ७ | ११११८ | दि | १०१३९ | पु | ३५११९ | रा | ८११५ | सि | ४५१४० | स्थिरः | २१११४ | २८११८ | ६१८ | २१ | भ. १७१६ उ. ४४११० या., चित्रक्षेबुधः ५ रविः ५२, [१५] हलोबाने, |
| ६ | बु | ८ | ५१५६ | दि | ८१३१ | ति | ३११५८ | सा | ६१५६ | सा | ३८१४० | मातङ्गः | क | २८११४ | ६१९ | २२ | भौमाष्टमी व्रतं, गोरखकालीपूजा, त्रिपुष्करः ११११८ या., [१६] |
| ७ | बु | ९ | ५७१११ | रा | ३१४९ | म | २७१३० | दि | ५११० | शु | २६१२९ | अमृतः | २९११९ | २८११० | ६१९ | २३ | राधाष्टमी, [१७] उ. ५२११० या., विशाखायां १ भौमः ५६, |
| ८ | शु | ११ | ५४१७ | रा | ३१४९ | म | २७१३० | दि | ५११० | शु | २६१२९ | काणः | सिं | २८११६ | ६१९ | २४ | भ. २९१३ उ. ५७१११ या., श्रवणे ३ राहुरश्लेषायां १ केतुः २४, [१८] |
| ९ | श | १२ | ५२११० | रा | ३१२ | पू | २६१४२ | दि | ४१५१ | ब्रं | २११३३ | लुम्बः | ४११४१ | २८१३ | ६१९ | २५ | स्मार्तानां रमा ११ व्रतं, स्वात्यां १ रविः १३, संयुक्तराष्ट्रसंघदिवसः, |
| १० | आ | १३ | ५११२५ | रा | २१४५ | उ | २७१२ | दि | ५१० | ऐं | १७१३२ | मित्रः | कं | २७१५९ | ६१९ | २६ | वैष्णवानां रमा ११ व्रतं, गोवत्सद्वादशी, त्रिपुष्करः २६१४२, [१९] |
| ११ | सो | १४ | ५११५७ | रा | २१५९ | ह | २८१३५ | दि | ५१३८ | वै | १४१२८ | वज्रः | ५९१५९ | २७१५५ | ६१९ | २७ | भ. ५११२५ उ., प्रदोषव्रतं, यमदीपदानं, यमपंचकारंभः, [२०] |
| १२ | मं | ३० | ५३१४६ | रा | ३१४३ | चि | ३११२३ | सा | ६१४६ | वि | १२१२५ | ध्वांक्षः | तु | २७१५१ | ६१९ | २८ | भ. २११३० या., नरक १४, प्रत्युषेऽभ्यङ्गस्नानं (ध) कुकुरपूजा, [२१] |

अथ कार्तिकस्नान मन्त्रः - कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दनः। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह।। इमं मन्त्रं समुच्चार्य मौनी स्नायाद् व्रतो नरः।। नरक चतुर्दशीमादीपदानगर्णे मन्त्रः - दत्तो दीपश्चतुर्दश्यां नरक प्रीतये मया। चतुर्वीतिसमायुक्ताः सर्वपापामनुत्तये।। सोहि दिन माषको पातखाने मन्त्रः - नुदसर्वाणि पापानि नरकादर्शनं कुरु। प्राशनमि तव पत्राणि माष देहि यशोवलम्।। काकबलिदान मन्त्रः - ऐन्द्रवारुणवायव्यां याम्यां वै निऋतिस्तथा। वायव्यां प्रतिगृह्यन्तु मया दत्तं वलित्वियम्।। श्वबलिदान मन्त्रः - द्वौ श्वानौ श्यामध्ववर्णौ वैवश्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि रक्षतां पथि सर्वदा।।

पापांशाः - श ८, रा ४ के १०, ३० मं ११, १ ग सू ७, ४ ग सू ८, ५ ग मं १२, ७ ग रा ३ के १, ८ ग सू ९, ९ ग मं १, ११ सू १०,

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा अ, बु मा उ पू, बु मा उ, शु मा उ प, श मा उ,

ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ ग सू ७,

| | | |
|----------|-------------------|-------------------|
| पंचांग | कान्छा पिला साहु | आशिष स्टेशनर्स |
| प्राप्ति | पोखरा | बुटवल |
| स्थान | वर्षाट्रेड सेन्टर | पवन किराना भण्डार |
| | बुटवल | बुटवल |

| २८ | सू. | मं. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| का | ६ | ६ | ५ | ८ | ७ | ४ |
| ३ | २ | १५ | १५ | २२ | ७ | २४ |
| ग | ३ | ३९ | ५१ | २७ | ४९ | १९ |
| १ | १७ | २ | ४४ | ९ | ३९ | २१ |
| ३५ | ५९ | ४१ | ५४ | ७ | ७२ | ६ |
| २६ | ४७ | ६ | १६ | १२ | ३६ | ३१ |

| २९ | सू. | मं. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| का | ६ | ६ | ५ | ८ | ७ | ४ |
| १० | ९ | २० | २३ | २३ | १६ | २५ |
| ग | २ | २६ | ३९ | २१ | १७ | ४ |
| १ | ३५ | ५४ | १५ | २१ | ९ | १८ |
| ३५ | ६० | ४१ | ७७ | ८ | ७२ | ६ |
| १५ | ३ | २५ | ३० | १३ | २१ | ७ |

| | | | |
|-------|------|------|-----|
| ९ बु | ८ शु | ६ बु | ५ श |
| १० रा | ४ के | ३ | २ |
| ११ | १ | २ | ३ |

श्री वि.सं. २०६५ श्री शाके १९३० ने.सं. ११२९ कार्तिक शुक्ल पक्षः (कछलाख) पा. स्वा. वि. अ. श. ध. २३. अ. कृ. ३ (अक्टू. १० नव. ११ सन् २००८) दक्षिणावर्त शरदृतुः, प्लवनामक संवत्सरः २९

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | वजेसम्प | न. | घ.प. | वजेसम्प | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|------|-------|------|---------------|-------|--------------|---------|-------|-------|------|----|
| १३ | बु | १ | ५६।४८ | रा | ४।५६ | स्वा | ३५।२३ | रा | ८।२३ | प्री | ११।२० | किं | २५।८ | धूमः | तु | २७।४८ | ६।१३ | 29 |
| १४ | वृ | २ | ६०।० | | समस्त | वि | ४०।२८ | रा | १०।२५ | आ | ११।८ | बा | २८।४३ | वर्द्धः | २४।६ | २७।४४ | ६।१४ | 30 |
| १५ | शु | ३ | ०।५१ | प्रा | ६।३५ | अ | ४६।२१ | रा | १२।४७ | सो | ११।४१ | तै | ३३।१३ | रक्षः | वृ | २७।४० | ६।१५ | 31 |
| १६ | श | ३ | ५।४३ | प्रा | ८।३२ | ज्ये | ५२।४६ | रा | ३।२२ | शो | १२।४७ | व | ३८।२० | मुसलः | ५२।४६ | २७।३७ | ६।१५ | 1 |
| १७ | आ | ४ | ११।० | दि | १०।४० | मू | ५९।१६ | रा | ५।५९ | अ | १४।९ | ब | ४३।४० | सिद्धिः | घ | २७।३३ | ६।१६ | 2 |
| १८ | सो | ५ | १६।१५ | दि | १२।४७ | पू | ६०।० | | समस्त | सु | १५।२९ | कौ | ४८।४५ | उत्पातः | घ | २७।२९ | ६।१७ | 3 |
| १९ | मं | ६ | २१।४ | दि | २।४३ | पू | ५।२५ | प्रा | ८।२७ | घृ | १६।२९ | ग | ५३।१२ | मित्रः | २१।५२ | २७।२६ | ६।१७ | 4 |
| २० | बु | ७ | २५।४ | दि | ४।२० | उ | १०।५४ | दि | १०।४० | शू | १६।५३ | भ | ५६।४२ | मुद्गरः | म | २७।२२ | ६।१८ | 5 |
| २१ | वृ | ८ | २८।१ | सा | ५।३१ | श्र | १५।२५ | दि | १२।२९ | गं | १६।३० | बा | ५९।३ | ध्वजः | ४७।१५ | २७।२९ | ६।१९ | 6 |
| २२ | शु | ९ | २९।४५ | सा | ६।१४ | घ | १८।४६ | दि | १।५० | वृ | १५।१२ | तै | ६०।० | घाता | कुं | २७।१६ | ६।२० | 7 |
| २३ | श | १० | ३०।११ | रा | ६।२५ | श | २०।५३ | दि | २।४२ | धृ | १२।५५ | तै | ०।७ ५९।५६ | आनन्दः | कुं | २७।१२ | ६।२० | 8 |
| २४ | आ | ११ | २९।२१ | सा | ६।५ | पू | २१।४६ | दि | ३।४ | व्या | ९।३७ | ब | ५८।२९ | चरः | ६।३९ | २७।९ | ६।२१ | 9 |
| २५ | सो | १२ | २७।१९ | सा | ५।१७ | उ | २१।२८ | दि | २।५७ | ह | ५।२२ | कौ | ५५।५४ | गदः | मी | २७।६ | ६।२२ | 10 |
| २६ | मं | १३ | २४।१२ | दि | ४।३ | रै | २०।५ | दि | २।२५ | व | ०।१४ ५४।२० | ग | ५२।१८ | शुभः | २०।५ | २७।२ | ६।२३ | 11 |
| २७ | बु | १४ | २०।१० | दि | २।२७ | अ | १७।४७ | दि | १।३० | व्य | ४७।४३ | भ | ४७।५२ | मृत्युः | मे | २६।५९ | ६।२३ | 12 |
| २८ | वृ | १५ | १५।२१ | दि | १२।३३ | भ | १४।४४ | दि | १२।१८ | व | ४०।३४ | बा | ४२।४५ | पद्मः | २८।५३ | २६।५६ | ६।२४ | 13 |

॥७॥वराहक्षेत्रे धार्मिकमेलाप्रारंभः,खोटाङ्गेवराहपेयकीमेला,विशा.॥
गोपूजा,बलिपूजा,गोवर्द्धनपूजा(ह्र)पूजा,॥१॥स्वात्यांबुधः३८,
चन्द्रोदयः,यमः२,भ्रातृद्वितीया(भाईटीका-किजापूजा),॥१॥
चि.३तुलायांबुधः१२।४५,॥७॥स्वात्यांश्रविः५२,विशाखायांश्रभौमः४६,
भ.३८।२० उ.,(नवंबर ११ ता.३०),॥७॥घ.पं.नि.२०।५,
भ.११।१० या.,॥७॥,विशाखायांश्र रविः३०,धनुषिशुक्रः५९।२२,
स्वात्यांश्ररविः११,पूर्वास्तोबुधः३८,॥७॥४९,शिव वैकुण्ठ १४ व्रतम्,
डालाषट् पूजा,त्रिपुष्करः२१।४ उ.,विशाखायांश्रभौमः३४,॥१॥
भ.२५।४उ.५६।४२या.,॥७॥जौच,उफायांश्रनिः३१,विशाखायांबुधः७,
अष्टमीव्रतं,मुखाष्टमी,गोपाष्टमी,गोरखकालीपूजा,घ.पं.प्र.४७।१५७,
कूष्माण्डनवमी,सत्ययुगादिः(सकोचगुवनेगुं),॥७॥अषण्डदीपदर्शन
भ.५९।५६उ.,वलंबु महालक्ष्मीयात्रा,॥७॥केशरथयात्रा चाङ्गुनारायण,
भ.२९।२१या.,हरिबोधनी११व्र.,तुलसीविवाहः,भीष्मपञ्चकारंभः७,
सोमप्रदोष व्रतं,मन्वादिः,फाल्गुनन्दजयन्ती,रिडीक्षेत्रे ऋषि७,
विष्णुवैकुण्ठ१४व्रतं,गत्यादर्लमडॉडामहाकालीभगवतीयात्रा,
भ.२०।१०उ.४७।५२या.,पूर्णिमाव्रतं,त्रिपुरोत्सवः,डोटीदीपायल,
मन्वादिः,चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः,कार्तिकस्नानपूर्तिः,शौलगढी७

[७] बराहक्षेत्रे धार्मिकमेलप्रारम्भः, खोटाङ्गे वराहपोखरीमेला, विशाखा ७
गोपूजा, बलिपूजा, गोवर्द्धनपूजा (ह्य) पूजा, [१] स्वात्यां बुधः ३८,
चन्द्रोदयः, यमः २, भ्रातृद्वितीया (भाईटीका-किजापूजा) ७
चि. ३ तुलायां बुधः १२।४५, [२] स्वात्यां ३ रविः ५२, विशाखायां २ भौमः ४६,
म. ३८।२० उ., (नवंबर ११ ता. ३०), [३] घ.पं. नि. २०।५,
म. ११।० या., [४] विशाखायां १ रविः ३०, धनुषिशुक्रः ५९।२२,
स्वात्यां ४ रविः ११, पूर्वास्तो बुधः ३८, [५] ४९, शिव वैकुण्ठ १४ व्रतम्,
डालाषट् पूजा, त्रिपुष्करः २१।४ उ., विशाखायां ३ भौमः ३४, [६]
म. २५।४ उ., ५६।४२ या., [७] जाँच, उफायां १ शनिः ३१, विशाखायां बुधः ७
अष्टमीव्रतं, मुखाष्टमी, गोपाष्टमी, गोरखकालीपूजा, घ.पं. प्र. ४७।१५, [८]
कूष्माण्डनवमी, सत्ययुगादिः (सकोचगुवनेगुं), [९] अखण्डदीपदर्शनं
म. ५९।५६ उ., बलंबु महालक्ष्मीयात्रा, [१०] केशरथयात्रा चाङ्गुनारायण
म. २९।२१ या., हरिबोधनी ११ व्र. तुलसीविवाहः, श्रीपद्मकारंभः ७
सोमप्रदोष व्रतं, मन्वादिः, फाल्गुनन्दजयन्ती, रिडीक्षेत्रे ऋषि
विष्णुवैकुण्ठ १४ व्रतं, गाल्पादलर्मडां डामहाकाली भगवतीयात्रा, [११]
म. २०।१० उ., ४७।५२ या., पूर्णिमाव्रतं, त्रिपुरोत्सवः, डोटीदीपायन
मन्वादिः, चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः, कार्तिकस्नानपूर्तिः, शीलगढी ७

मङ्गलीकरणविष्णु स्तोत्रम् -मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः। मंगलं
पुण्डरीकाक्षो मंगलाय तनोहरिः। मंगलं लक्ष्मणभ्राता मंगलं जानकीवरः। मंगलं सुन्दरोसमो
मंगलं हनुमन्त्रियः। मंगलं परमानन्दो मंगलं परमेश्वरः। मंगलं श्रीपद्मनाभो मंगलं
पद्मलोचनः। मंगलं करुणासिन्धुः मंगलं विश्वपालकः। मंगलं सच्चिदानन्दो
मंगलं जगदीश्वरः। मंगलं श्रीरमानाथो मंगलं पुरुषोत्तमः। मंगलं
कमलाकान्तो मंगलं भक्तवत्सलः। मंगलं कमलानन्दो मंगलं कमलालयः।
मंगलं भगवान् कृष्णो मंगलं विश्वजीवनः। मंगलं देवकीपुत्रो मंगलं
पृथिवर्धनः। मंगलं रघुनामो मंगलं बन्धुबान्धवः। मंगलं लक्ष्मणजीनाथो
मंगलं श्रीधरप्रियः। मंगलं गोकुलाधीशो मंगलं देवकीसुतः। मंगलं
लोकसारंगो मंगलं अर्धवर्धनः। मंगलं सर्वशास्त्रज्ञो मंगलं साधुवल्लभः। मंगलं
भाईटीकादिन वारवेला-प्रा. ६।१४ वजेबाट ७।३७ सम्प शुभवेला। दि.
११।४७ बाट १।१० सम्प लाभवेला। दि. १।१० बाट २।३३ सम्प अमृतवेला।

पापांशाः -श. ८, रा. ३ के ९, १४ ग. सू. ११ मं २, १८ ग. सू. १२,
१९ ग. मं ३, २१ ग. सू. १, २४ ग. सू. २ मं ४, २७ ग. श. ९, २८ ग. सू.
[१] शैलेश्वरीजाँच, स्थान-
कोटवाणस्थली त्रिवेणी-
स्तानं, (सकिमनापुन्दि),
निवाकाचार्यज., गुरु
नानकज., विशाखायां
३ रविः ७, [१०] २ रविः ४९,
वि. ४ वृश्चिके भौमः
२०।४९,

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| ३० | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. | ३१ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
| का | ६ | ६ | ६ | ८ | ७ | ४ | ९ | का | ६ | ७ | ६ | ८ | ८ | ४ | ९ |
| १७ | १६ | २५ | ३ | २४ | २४ | २५ | १९ | २४ | २३ | ० | १४ | २५ | ३ | २६ | १९ |
| ग | ३ | १७ | ३० | २२ | ४२ | ४६ | २७ | ग | ६ | ९ | ३६ | ३० | ६ | २४ | ५ |
| १ | ३५ | ९ | ५२ | ३४ | ४७ | १९ | ३६ | १ | १२ | ४८ | ५० | ७ | ६ | ५६ | २९ |
| ३५ | ६० | ४१ | ९१ | ९ | ७२ | ५ | ३ | ३४ | ६० | ४२ | ९९ | ९ | ७२ | ५ | ३ |
| २ | १७ | ४३ | ३८ | ८ | १ | ४१ | ११ | ५० | ३१ | २ | ५७ | ५८ | ३८ | ११ | ११ |

| | | | | |
|----|----|---------|----|---|
| ८ | शु | ६ | ५ | श |
| ९ | बु | सू मं ७ | ५ | श |
| १० | रा | ४ | के | |
| ११ | | १ | ३ | |
| १२ | | २ | | |

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | |
|----|-----|-----|-------|----------|------|-------|----------|------|-------|----|-------|---------|-------|--------|-------|-----|--|
| २९ | शु | १ | १५९ | दि १०१२४ | कृ. | १११६ | दि १०५१ | प | ३३११ | तै | ३७१९ | छत्रः | वृ | २६५३ | ६१२५ | १४ | अनुराधायां ३ रविः १६, |
| ३० | श | २ | ४१२९ | रा ३१२२ | मृ. | १११६ | दि १०५१ | प | ३३११ | तै | ३७१९ | छत्रः | वृ | २६५३ | ६१२५ | १४ | विश्वमधुमेहदिवसः, स्थानकोटमहालक्ष्मीयात्रा, अनुराधायां १ |
| १ | आ | ४ | ५२११९ | रा ३१२२ | मृ. | १११६ | दि १०५१ | प | ३३११ | तै | ३७१९ | छत्रः | वृ | २६५३ | ६१२५ | १४ | म. ३११२५ उ. ५८११६ या. १ भौमः ६, त्रिजटार्घ्यदानम्, |
| २ | सो | ५ | ४६१३६ | रा ११६ | पु | ५४१४९ | रा ४१२३ | सा | ११३० | कौ | १११२४ | सौम्यः | मि | २६१४७ | ६१२७ | १५ | विशाखायां ४ वृश्चिकेर्कः २४१२३, मार्गसंक्रान्तिः, उषायां १२ |
| ३ | मं | ६ | ४१११८ | रा १०५९ | ति | ५११२० | रा ३१० | शु | ११५९ | ग | १३१५२ | धूमः | क | २६१४७ | ६१२७ | १६ | पूषायां शुक्रः १०, [६] भौमः ३१, |
| ४ | बु | ७ | ३६१३७ | रा ११८ | अ | ४८१३० | रा १५३ | ब्र | ४८१३ | भ | ८१५१ | वह्नः | क | २६१४७ | ६१२७ | १७ | म. ४१११८ उ., अनुराधायां २ भौमः ४९, वृश्चिकेर्बुधः ३१११४, ३ |
| ५ | बु | ८ | ३२१४३ | रा ७३५ | म | ४६१२८ | रा १५३ | ब्र | ४८१३ | भ | ८१५१ | वह्नः | क | २६१४७ | ६१२७ | १८ | म. ८१५१ या., अनुराधायां १ रविः ४२, [६] गुरुः १६, |
| ६ | शु | ९ | २९१४७ | सा ६१२५ | पू | ४५१२५ | रा १२१४० | वै | ३६१४५ | तै | ३६१४५ | सिद्धिः | सिं | २६१३३ | ६१३० | १९ | भैरवाष्टमीव्रतं, सायंभैरवोत्पत्तिः, गोरखकालीपूजा, ४ |
| ७ | श | १० | २७१५७ | सा ५१४२ | उ | ४५१२८ | रा १२१४२ | वि | ३२१२३ | ब | ५७१३० | उत्पातः | ०१७ | २६१३० | ६१३१ | २० | म. ५८१४४ उ., [६] अनुराधायां बुधः ३५, |
| ८ | आ | ११ | २७१२० | सा ५१२८ | ह | ४६१४४ | रा १११४ | प्री | २८१५७ | कौ | ५७१३२ | मानसः | कं | २६१२८ | ६१३२ | २१ | म. २७१५७ या., श्रीगुह्येश्वरीयात्रा, अनुराधायां २ रविः ५९, ६ |
| ९ | सो | १२ | २८११९ | सा ५१४५ | चि | ४९११४ | रा २११५ | आ | २६१३१ | ग | ५८१५१ | सुह्रः | १७१४९ | २६१२५ | ६१३३ | २२ | उत्पत्तिका ११ व्रतं, द्विपुष्करः ४६१४४ उ., अनुराधायां ३० |
| १० | मं | १३ | २९१५९ | सा ६१३३ | स्वा | ५२१५८ | रा ३१४५ | सौ | २५१४ | भ | ६०१० | ध्वजः | तु | २६१२३ | ६१३४ | २३ | [६] धनुषिसायनार्कः २, |
| ११ | बु | १४ | ३३११९ | रा ७१५० | वि | ५७१४८ | रा ५१४२ | शो | २४१३२ | भ | ११२५ | घाता | ४१३० | २६१२० | ६१३४ | २४ | म. २९१५९ उ., प्रदोषव्रतं, खोटाङ्गे हलसी महादेवमेला, |
| १२ | बु | ३० | ३७१२२ | रा ९१३२ | अ | ६०१० | समस्त | अ | २४१४९ | च | ५१८ | आनन्दः | वृ | २६१२८ | ६१३५ | २५ | म. ११२५ या., बालाचतुर्दशी, शतबीजारोपणं, (बालाचहेपूजा), ७ |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | दर्शश्राद्धं, निशी तथा हलोबार्ने, |

अथ प्रथम रजवतीनारीणां फलम्-पहिला रजस्वला हुँदा शुभकालः वै. ज्ये. आ. आ. मार्ग. माघ. फा. मास शुक्लपक्ष, ११२३१५७१२०१११। १३१२५ तिथि, श्वेतवस्त्र सो. बु. गु. शु. वार, श्र. घ. श. मृ. रे. चि. अनु. ह. अ. शि. ति. ३ उत्तरा रो. स्वा. नक्षत्र, २३१४६७११२ लग्न इनमा रजस्वला हुन शुभ छ। कृष्णपक्षे रात्रौ भद्रायां संक्रान्ति दिने रोगे वैधृतौ व्यतीपाते रविभौमशनि-वारेषु ज्ये. आर्द्रा. अश्ले. ३ पूर्वा. म. नक्षत्रेषु मेष, मिथुन, वृश्चि. म. कु. लग्नेषु अशुभः तत्परिहारः। अशुभमपि समस्तं चार्तवं संप्रभृतं सुरगुरुसित युक्ते वीक्षतेवाध लग्ने। तिमिरमिव कठोर ज्योतिरुत्पत्तिकाल क्षयमथ समुपात प्राप्नुयादीप्सितानि। अस्याः शान्तिः-पानी छुने दिन घृत, दुर्वा, तिलाक्षत सहित मृत्युञ्जय मन्त्रले १०८ हवन गर्नु सब दोष समाप्त भै शुभ हुन्छ। माता भार्या रजस्वला हुँदा-विवाहव्रतचूडाषु माताभार्या रजस्वला। तदा न मंगलकार्यं शुद्धी कार्यं शुभेषुभिः।।

पापांशाः-श ९, रा ३ के १, २९ ग मं ५, १ गते सू ४, ३ मं ६, ४ ग सू ५, ७ ग सू ६, ८ ग मं ७, ११ ग सू ७,

वक्रमार्गोदयास्तः-मं मा अ, बु मा अ पु, बु मा उ, शु मा उ प, श मा उ,

ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ सू ८, ३ गते बु ८,

| | | |
|--|-------------------|--------------------------------------|
| दिलभाया पुस्तक भण्डार नारायणगढ़ | पंचांग | चौलानी पुस्तक भण्डार धनगढ़ी |
| सुकुन्दा पुस्तक भवन भोटाहिटी, काठमाण्डौ | प्राप्ति स्थान | दुर्गा पुस्तक भण्डार महेन्द्र नगर |
| गौरी पुस्तक भण्डार, तुलसीपुर | | |

| ३२ सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|--------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| मा ७ | ७ | ६ | ८ | ८ | ४ | ९ |
| १ ० | ५ | २६ | २६ | ११ | २६ | १८ |
| ग १० | ४ | २५ | ४३ | २६ | ५९ | ४३ |
| १ २० | ५३ | २ | २१ | ३२ | ४७ | ६ |
| ३४ ६० | ४२ | १०४ | १० | ७१ | ४ | ३ |
| ३६ ४३ | २० | २१ | ४२ | ८ | ३८ | ११ |

| ३३ सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|--------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| मा ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ४ | ९ |
| ८ ७ | १० | ८ | २८ | १९ | २७ | १८ |
| ग १५ | २ | ३३ | १ | ४३ | ३० | २० |
| १ ५० | २६ | ३ | ३८ | २५ | २७ | ५१ |
| ३४ ६० | ४२ | १०५ | ११ | ७० | ४ | ३ |
| ३६ ४३ | ३९ | ५० | २१ | ३३ | १ | ११ |

| | |
|---------|---------|
| बु ९ शु | ७ बु |
| १० रा | सू ८ मं |
| ११ | ५ श |
| १२ | ४ के |
| १ | ३ |

श्री वि.सं. २०६५ श्री शाके १९३० ने.सं. ११२९ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः (धिल्लाख) पा. अ. श्र. २३. रे. कृ. (नवंबर ११ दिसंबर १२ सन् २००८) दक्षिणायन हेमन्तर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः ३१

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्प | न. | घ.प. | बजेसम्प | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|-------|---------|------|-------|-------|-------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|
| १३ | शु | १ | ४२।२० | रा | ११।३२ | अ | ३।३० | प्रा | ८।० | सु | २५।४२ | किं | १।४६ | रक्षः | वृ | २६।१६ | ६।३६ | 28 |
| १४ | श | २ | ४७।४२ | रा | १।४२ | ज्ये | ९।४९ | दि | १०।३३ | घृ | २६।५७ | बा | १।४९ | मुसलः | १।४९ | २६।१४ | ६।३७ | 29 |
| १५ | आ | ३ | ५३।२ | रा | ३।५० | मू | १६।२१ | दि | १।१० | शू | २८।१६ | तै | २०।२३ | सिद्धिः | घ | २६।१२ | ६।३८ | 30 |
| १६ | सो | ४ | ५७।५२ | रा | ५।४७ | पू | २२।३८ | दि | ३।४२ | गं | २९।२० | व | २५।३१ | उत्पातः | ३९।७ | २६।१० | ६।३८ | 1 |
| १७ | मं | ५ | ६०।० | समस्त | उ | २८।१८ | सा | ५।५८ | वृ | २९।५३ | ब | २९।५८ | मानसः | म | २६।८ | ६।३९ | | 2 |
| १८ | बु | ५ | १।५० | प्रा | ७।२४ | श्र | ३३।३ | रा | ७।५३ | घृ | २९।४३ | कौ | ३३।२८ | छत्रः | म | २६।६ | ६।४० | 3 |
| १९ | बु | ६ | ४।४६ | प्रा | ८।३५ | घ | ३६।४१ | रा | ९।२१ | व्या | २८।४० | ग | ३५।४८ | श्रीवत्सः | ५।० | २६।४ | ६।४१ | 4 |
| २० | शु | ७ | ६।२८ | प्रा | ९।१७ | श | ३९।६ | रा | १०।२० | ह | २६।४० | भ | ३६।५१ | सौम्यः | कुं | २६।३ | ६।४१ | 5 |
| २१ | श | ८ | ६।५३ | प्रा | ९।२७ | पू | ४०।१५ | रा | १०।४८ | व | २३।३९ | बा | ३६।३७ | कालः | २५।४ | २६।१ | ६।४२ | 6 |
| २२ | आ | ९ | ६।० | प्रा | ९।७ | उ | ४०।१३ | रा | १०।४८ | सि | १९।४० | तै | ३५।८ | स्थिरः | मी | २६।० | ६।४३ | 7 |
| २३ | सो | १० | ३।५७ | प्रा | ८।१८ | रे | ३९।५ | रा | १०।२१ | व्य | १४।४५ | व | ३२।३१ | मातङ्गः | ३९।५ | २५।५८ | ६।४४ | 8 |
| २४ | मं | ११ | ०।४८ | प्रा | ७।२७ | अ | ३६।५९ | रा | ९।३२ | व | ९।२ | च | २८।५४ | अमृतः | मे | २५।५७ | ६।४४ | 9 |
| २५ | बु | १२ | ५।१५९ | रा | ३।३३ | भ | ३४।५ | रा | ८।२३ | प | ३।३६ | कौ | २४।२७ | काणः | ४८।१६ | २५।५६ | ६।४५ | 10 |
| २६ | वृ | १३ | ४६।३६ | रा | १।२४ | कृ | ३०।३४ | रा | ६।५९ | सि | ४८।८ | ग | १९।२० | लुम्बः | वृ | २५।५५ | ६।४६ | 11 |
| २७ | शु | १५ | ४०।५२ | रा | १।१७ | रो | २६।३७ | सा | ५।२५ | सा | ४०।२२ | भ | १३।४५ | मित्रः | ५४।३४ | २५।५४ | ६।४६ | 12 |

[7] शुक्रस्याभिजितित्यागः ४७, [9] अभिजितिशुक्रः ६, अनुराधायां ४ भौमः ११, ज्येष्ठर्क्षे बुधः १४, [10] ज्येष्ठर्क्षे ३ भौमः ३, चन्द्रोदयः, अनुराधायां ४ रविः ३३, उषायां शुक्रः २९, [11] (गैंदूपूजा), धनेश्वरमेला कुटिषान्य लक्ष्मीपूजा (थिलापुन्ड्र) २, भ. २५।३१ उ. ५७।५२ या., (दिस्वर १२ ता. ३१), विवाहपञ्चमीमेला जनकपुरे सीताविवाहः, ज्येष्ठर्क्षे १ रविः ४९, [12] उषायां २ मकरेश्वरः २९।२४, [13] ज्येष्ठर्क्षे १ भौमः ५०, उषायां २ घ.पं. ५।१० [14] योमरीपुन्ही), दत्तजयन्ती, ज्येष्ठर्क्षे ४ रविः ३७, [15] भ. ६।२८ उ. ३६।५१ या., [16] मकरेश्वरः २०।३५, अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा (बखुमद), ज्येष्ठर्क्षे २ रविः ५, [17] पाङ्गाश्रीवैष्णवीदेवीयात्रा, ज्येष्ठर्क्षे २ भौमः २७, [18] रविः २१ भ. ३२।३१ उ., घ.पं. नि. ३९।५, कीर्तिपुरे श्रीइन्द्राणीयात्रा, [19] भ. ०।४८ या., मोक्षदा ११ व्रतं, पश्चिमोदितो बुधः २४, ज्येष्ठर्क्षे ३ प्रदोषव्रतं, विश्वमानवाधिकारदिवसः, [20] मूले १ धनुषि बुधः २।५२, भ. ४६।३६ उ., काशीस्थ पिशाचमोचनतीर्थश्राद्धं, श्रवणेश्वरः ०।११ [21] भ. १३।४५ या., पूर्णिमात्र, उधौलीपूजा, धान्यपूर्णमा, धान्यपर्वतदानं

अथ नववधुपतिगृह निवास विचार - विवाह भरणपतिगृहमा रहैदा प्रथम आषाढमा सासु, ज्येष्ठमा जेठानु, पोषमा शशा, मलमासमा पति क्षयमासमा आफैलाई कष्ट गर्दछ, चैत्रमा माईतमा नबस्नु पितालाई अनिष्ट हुन्छ। स्थानविशेषेण ग्रहाणां विफलत्वमाह-सभानुरिन्दुः शशिशततुर्थे गुरुः सुतेभूमिभुतः कुटुम्बे। भृगुः सपत्ने रविजकलत्रे विलम्ब सस्ते विफला भवन्ति। अथ तिथिनिर्णयः - यातिथि समनुप्राप्य उदयं यातिभास्करः। सा तिथि सफलान्तेया दानाध्ययनकर्मसु। अथ उपाकाल ज्ञानम्-पञ्च पञ्च उपः कालः षड्पञ्चादरुणोदयः। सप्तपञ्च भवेत्प्रातः शेषसूर्योदयस्मृताः। अथ पुराणश्रवण मुहूर्तः - अश्वि. रो. मृ. ति. अनु. ह. मू. श्र. यी ८ नक्षत्रमा शुभ तिथि, शुभवारमा गुरुशुक्रको उदयकालमा पुराणश्रवणकर्म जुलाई पुराणश्रवण प्रारम्भ गर्नु।

| पंचांग | स्टेशनरी स्टोर्स | सफल बुक्स स्टेशनर्स |
|----------|------------------|----------------------|
| प्राप्ति | नारायणगढ़ | पोखरा |
| स्थान | चुवाई पुस्तक पसल | मास्के पुस्तक भण्डार |
| | धनगढी | नारायणगढ़ |

पापांशाः - श ९, रा ३ के ९, १३ ग मं ८, १४ ग सू ८, १७ ग सू ९ मं ९, २१ ग सू १०, २२ ग मं १०, २४ ग सू ११, २७ ग सू १२ मं ११, वक्रमागदियास्तः - मं मा अ, बु मा २४ उ प, बु मा उ, शु मा उ प, श मा उ, ग्रहाणां राशिप्रवेशः १७ ग शु १०, १८ ग बु १०, २१ ग बु ९,

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|-------|
| १० रा | ११ बु | १२ श | १३ मं | १४ सू | १५ बु | १६ श | १७ मं | १८ सू | १९ बु | २० श | २१ मं | २२ सू | २३ बु | २४ श | २५ मं | २६ सू | २७ बु | २८ श | २९ मं | ३० सू | ३१ बु | ३२ श | ३३ मं | ३४ सू | ३५ बु | ३६ श | ३७ मं | ३८ सू | ३९ बु | ४० श | ४१ मं | ४२ सू | ४३ बु | ४४ श | ४५ मं | ४६ सू | ४७ बु | ४८ श | ४९ मं | ५० सू | ५१ बु | ५२ श | ५३ मं | ५४ सू | ५५ बु | ५६ श | ५७ मं | ५८ सू | ५९ बु | ६० श | ६१ मं | ६२ सू | ६३ बु | ६४ श | ६५ मं | ६६ सू | ६७ बु | ६८ श | ६९ मं | ७० सू | ७१ बु | ७२ श | ७३ मं | ७४ सू | ७५ बु | ७६ श | ७७ मं | ७८ सू | ७९ बु | ८० श | ८१ मं | ८२ सू | ८३ बु | ८४ श | ८५ मं | ८६ सू | ८७ बु | ८८ श | ८९ मं | ९० सू | ९१ बु | ९२ श | ९३ मं | ९४ सू | ९५ बु | ९६ श | ९७ मं | ९८ सू | ९९ बु | १०० श |
|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|-------|

श्री वि.सं. २०६५ श्री शाके १९३० ने.सं. ११२९ पौषकृष्ण पक्षः (थिल्लागा) पा. ति. श्ले. १०. उफा. अ. ज्ये. मू. (दिसंबर १२ सन् २००८) दक्षिणायन हेमन्तर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|------|-------|------|---------------|-------|---------------|-----------|-------|-------|------|----|--|
| २८ | श | १ | ३४।५६ | रा | ८।४५ | मृ | २२।२७ | दि | ३।४६ | शु | ३२।२७ | बा | ७।५३ | वज्रः | मि | २५।५३ | ६।४७ | 13 | कौशिकीकोकासंगममेला, |
| २९ | आ | २ | २९।२ | रा | ६।२५ | आ | १८।१५ | दि | २।६ | शु | २४।३४ | तै | १।५७ ५६।२३ | ध्वांक्षः | मि | २५।५२ | ६।४८ | 14 | म. ५६।११ उ., त्रिपुष्करः १८।१५ उ. २९।२ या., पूषायांबुधः २० |
| ३० | सो | ३ | २३।२३ | दि | ४।१० | पु | १४।१६ | दि | १२।३१ | ब्रं | १६।५१ | ब | ५०।४४ | घूम्रः | ०।१३ | २५।५२ | ६।४८ | 15 | म. २३।२३ या., मूले १ धनुष्यर्कः ५२।५५. |
| १ | मं | ४ | १८।११ | दि | २।५ | ति | १०।४० | दि | ११।५ | ऐं | ९।२८ | कौ | ४५।४९ | वर्द्धः | क | २५।५१ | ६।४९ | 16 | मङ्गल ४ व्रतं, पौषसंक्रान्तिः, ज्येष्ठर्क्षे ४ भौमः ३८, |
| २ | बु | ५ | १३।३६ | दि | १२।१६ | अ | ७।४१ | दि | ९।५४ | वै | ३।३४ ५६।२८ | ग | ४१।३७ | रक्षः | ७।४१ | २५।५१ | ६।५० | 17 | [९] गयामौनीपौषीअमावास्या, वेत्रावतीवराहक्षेत्र गोकर्ण श्राद्धम्, |
| ३ | बु | ६ | ९।५० | दि | १०।४६ | म | ५।२७ | दि | ९।१ | प्री | ५०।४५ | भ | ३८।१८ | मुसलः | सिं | २५।५० | ६।५० | 18 | म. ९।५० उ. ३८।१८ या., |
| ४ | शु | ७ | ७।२ | दि | ९।३९ | पू | ४।१० | प्रा | ८।३१ | आ | ४६।३ | बा | ३६।३ | सिद्धिः | १९।१ | २५।५० | ६।५१ | 19 | अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, मूले २ रविः ८, उषायां ३ गुरुः ५, |
| ५ | श | ८ | ५।२१ | दि | ९।१० | उ | ३।५८ | प्रा | ८।२७ | सौ | ४२।१६ | तै | ३४।५८ | उत्पातः | कं | २५।५० | ६।५१ | 20 | [१०] ३९, मूले २ भौमः ४३, श्रवण २ राहुस्तिष्ठे ४ केतुः १७, २ |
| ६ | आ | ९ | ४।५३ | प्रा | ८।४९ | ह | ४।५८ | प्रा | ८।५१ | शो | ३९।२९ | च | ३५।९ | मानसः | ३५।५६ | २५।५० | ६।५२ | 21 | म. ३५।९ उ., मूले १ धनुषिभौमः १०।५४, मकरेसायनार्कः २७, |
| ७ | सो | १० | ५।४४ | प्रा | ९।१० | चि | ७।१२ | दि | ९।४५ | अ | ३७।४१ | ब | ३६।३१ | मुद्गरः | तु | २५।५० | ६।५२ | 22 | म. ५।४४ या., (दिशिपूजा), मूले ३ रविः २४, धनिष्ठायां शुक्रः ५०, |
| ८ | मं | ११ | ७।५१ | दि | १०।१ | स्वा | १०।४० | दि | ११।९ | सु | ३६।५० | कौ | ३९।२३ | ध्वजः | ५९।२ | २५।५० | ६।५३ | 23 | सफला ११ व्रतं, त्रिपुष्करः १०।४० उ., उषायांबुधः ५८, |
| ९ | बु | १२ | ११।११ | दि | ११।२२ | वि | १५।१७ | दि | १।० | घृ | ३६।५० | ग | ४३।१५ | धाता | वृ | २५।५० | ६।५३ | 24 | प्रदोषव्रतम्, [११] क्रिसमसदिवसः, |
| १० | बु | १३ | १५।३२ | दि | १।७ | अ | २०।५० | दि | ३।१४ | शू | ३७।३० | भ | ४८।० | आनन्दः | वृ | २५।५० | ६।५४ | 25 | म. १५।३२ उ. ४८।० या., (दिशिचहेपूजा), मूले ४ रविः १ |
| ११ | शु | १४ | २०।३६ | दि | ३।९ | ज्ये | २७।४ | सा | ५।४४ | गं | ३८।३९ | च | ५३।१९ | चरः | २७।४ | २५।५१ | ६।५४ | 26 | उषायां २ मकरेबुधः ५६।२०, |
| १२ | श | ३० | २६।३ | सा | ५।२० | मू | ३३।३६ | रा | ८।२१ | वृ | ३९।५८ | किं | ५८।४६ | गदः | घ | २५।५१ | ६।५५ | 27 | दर्शश्राद्धं, निशी तथा हलोवार्ने, विष्णुपादुकाश्राद्धं, ९ |

अथ भूकम्पे लग्नफलम् - भूकम्पे समये कर्क, मकर, मीन लग्नेषु कूर्म चलति फलं - मरणम्। मिथुन, सिंह, तुला लग्नेषु सर्पश्चलति फलं अनिकालः। कुंभ, धन, कन्या लग्नेषु पृथ्वी चलति फलं - समर्घ्यम्। मेष, वृश्चिक, वृष लग्नेषु हरिस्तश्चलति फलं - कल्याणदायकम्। पृथ्वीको भूगर्भमा गन्धक आदि हरेक विस्फोटक चीजरु छन् तिनबाट ग्यास पैदा भएर त्यो ग्यास बाहिर निस्कन लाग्दा पृथ्वी फाटेर निस्कन्छ तेसको जोडले पृथ्वी कंप हुने हो, यो कुनै गणितबाट आउने र ग्रहबलले हुने होईन। यो यौटा उत्पात हो। त्यस्तो उत्पात भए पछि ३ दिनसम्मको समय अशुद्ध हुन्छ, शुभ कार्य गर्नु हुँदैन। इति दैवज्ञ विनोदे विहितम्।

| | | |
|----------|----------------------|--|
| पंचांग | पुस्तक भवन, स्याङ्जा | अरुण पुस्तक भंडार नारायणगढ |
| प्राप्ति | जोशीपुस्तक पसल पोखरा | लालचन्द्र राजेशचन्द्र राजभंडारी, बाग्लुङ्ग |

पापांशाः - श १, रा ३ के ९, ३० ग सू १, १ ग मं १२, ४ ग सू २, ६ ग मं १, ७ ग सू ३, १० ग सू ४ मं २ रा २ के ८, १

वक्रमागौदयास्तः मं मा अ, बु मा उ प, बु मा उ, शु मा उ प, श मा उ
ग्रहाणां राशिप्रवेशः ३० ग सू ९, ६ ग मं ९, ११ ग बु १०,

| ३६ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. | ३७ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| मा | ७ | ७ | ८ | ९ | ९ | ४ | ९ | पौ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ४ | ९ |
| २९ | २८ | २५ | १३ | २ | १४ | २८ | १७ | ६ | ५ | ० | २३ | ३ | २१ | २८ | १६ |
| ग | ३९ | ९ | ४० | २० | ३ | ३३ | १४ | ग | ४८ | १६ | ३८ | ५३ | ५५ | ४४ | ५१ |
| १ | ३ | ३३ | ४४ | ३४ | २४ | ५५ | ७ | १ | २४ | ३७ | २९ | १ | ९ | ३७ | ५१ |
| ३३ | ६१ | ४३ | ९२ | १२ | ६७ | १ | ३ | ३३ | ६१ | ४३ | ७८ | १३ | ६६ | १ | ३ |
| ४३ | १८ | ३१ | २१ | ५० | ५० | ५७ | ११ | ३३ | २३ | ४७ | ४२ | ११ | २७ | ११ | ११ |

| | | |
|----|------|------|
| शु | १ बु | ७ |
| बु | १० | ६ |
| रा | ११ | ५ श |
| १२ | २ | ४ के |
| १ | ३ | |

श्री वि.सं. २०६५ श्री शाके १९३० ने.सं. ११२९ पौष शुक्लपक्षः (पोहेलाख) पा. श्र. रे. कृ. आ. ति. (दिसंबर १२ सन् २००८ जन. १ सन् २००९) दक्षिणायन हेमन्तर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः ३३

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|-----|-------|------|-------|-------|---------|-----------|-------|-------|------|----|
| १३ | आ | १ | ३१२३ | सा | ७१८ | पू | ३९१५९ | रा | १०१५५ | घृ | ४११८ | बा | ६०१० | शुभः | ५६१३१ | २५१५२ | ६१५५ | 28 |
| १४ | सो | २ | ३६१३३ | रा | ९१२५ | उ | ४५१५१ | रा | १११६ | व्या | ४११५३ | बा | ३५३३ | मृत्युः | म | २५१५२ | ६१५५ | 29 |
| १५ | मं | ३ | ४०१११ | रा | १११० | श्र | ५०१५१ | रा | ३११६ | ह | ४११५९ | तै | ८११९ | लुम्बः | म | २५१५३ | ६१५६ | 30 |
| १६ | बु | ४ | ४३१४ | रा | १२११० | घ | ५४१४६ | रा | ४११५१ | व | ४११४४ | व | १११४६ | मित्रः | २२१५७ | २५१५४ | ६१५६ | 31 |
| १७ | बृ | ५ | ४४१४१ | रा | १२१४९ | श | ५७१२९ | रा | ५१५६ | सि | ३९१३३ | ब | १४१२ | वज्रः | कुं | २५१५५ | ६१५६ | 1 |
| १८ | शु | ६ | ४५११ | रा | १२१५७ | पू | ५८१५७ | रा | ६१३१ | व्य | ३६१५३ | कौ | १५११ | ध्वांक्षः | ४३१४२ | २५१५६ | ६१५७ | 2 |
| १९ | श | ७ | ४४१५ | रा | १२१३५ | उ | ५९११२ | रा | ६१३८ | व | ३३११४ | ग | १४१४२ | धूम्रः | मी | २५१५७ | ६१५७ | 3 |
| २० | आ | ८ | ४११५७ | रा | १११४४ | रे | ५८१२० | रा | ६११७ | प | २८१३८ | भ | १३१९ | वर्द्धः | ५८१२० | २५१५९ | ६१५७ | 4 |
| २१ | सो | ९ | ३८१४६ | रा | १०१२८ | अ | ५६१२७ | रा | ५१३२ | शि | २३११२ | बा | १०१२९ | रक्षः | मे | २६१० | ६१५७ | 5 |
| २२ | मं | १० | ३४१४० | रा | ८१५० | भ | ५३१४५ | रा | ४१२७ | सि | १७१० | तै | ६१४९ | मुसलः | मे | २६११ | ६१५७ | 6 |
| २३ | बु | ११ | २९१५० | सा | ६१५४ | कृ | ५०१२३ | रा | ३१७ | सा | १०११० | व | १२०५७१३ | सिद्धिः | ७१५७ | २६१३ | ६१५८ | 7 |
| २४ | बृ | १२ | २४१२८ | दि | ४१४५ | रो | ४६१३३ | रा | ११३५ | शु | २१५३ | कौ | ५११३८ | उत्पातः | वृ | २६१५ | ६१५८ | 8 |
| २५ | शु | १३ | १८१४३ | दि | २१२७ | मृ | ४२१२६ | रा | १११५६ | ब्रं | ४७१२० | ग | ४५१४७ | मानसः | १४१३० | २६१६ | ६१५८ | 9 |
| २६ | श | १४ | १२१४९ | दि | १२१६ | आ | ३८११४ | रा | १०११६ | ऐं | ३९१२६ | भ | ३९१५२ | मुद्गरः | मि | २६१८ | ६१५८ | 10 |
| २७ | आ | १५ | ६१५८ | दि | ९१४५ | पु | ३४११३ | रा | ८१३९ | वै | ३११३९ | बा | ३४१८ | ध्वजः | २०१११ | २६११० | ६१५८ | 11 |

७ शतभिषायांशुकः ११,
तोलन्होसार, त्रिपुष्करः ३९१५९ उ., पूषायां १ रविः ५५, ७
चन्द्रोदयः ७ धनिष्ठायां ३ कुंभेशुकः ५५१३२,
तमुन्होछार, मूले ३ भौमः १३,
भ. १११४६ उ. ४३४ या., घ.पं.प्र. २२१५७, वक्रोशतिः ३२,
पूषायां २ रविः १०, (जनवरी १ ता.३१ सन् २००९ प्रा.)
अभिजितिगुरुः ५० ७ हैगुमीलापुत्री), पृथ्वीजयन्ती,
भ. ४४१५ उ., मूले ४ भौमः ४३, ७ पूषायां ४ रविः ४१,
भ. १३१९ या., अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, श्रीश्वेतमतस्येन्द्र- ७
गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती, अभिजितिबुधः २८,
७ नाथस्थानं (जगन्धर्व), घ.पं.नि.५८१२०, पूषायां ३ रविः २५, ७
भ. २१२० उ. २९१५० या., पुत्रदा ११ व्रतं, मन्वादिः ७
प्रदोषव्रतं, (मुस्यादुली), पूषायां १ भौमः ११, वक्रोबुधः १५
७ उषायां १ रविः ५६, पश्चिमास्तोबुधः ३६,
भ. १२१४९ उ. ३९१५२ या., पूर्णिमाव्रतं, श्रीस्वस्थानीव्रतारंभः ७
माघस्थानारंभः, हनुमन्तीर्थत्रिवेणीमेला (चांगुनारायण- ७

[६] शतभिषायांशुकः ११,
 तोलहोसार, त्रिपुष्करः ३९१५९ उ., पूषायां १ रविः ५५, ७
 चन्द्रोदयः, [७] धनिष्ठायां ३ कुंभेशुकः ५५१३२,
 तमुल्होछार, मूले ३ भौमः १३,
 म. १११४६ उ. ४३१४ या., घ.पं.प्र. २२१५७, वक्रोशनिः ३२,
 पूषायां २ रविः १०, (जनवरी १ ता. ३१ सन् २००९ प्रा.)
 अभिजितिगुरुः ५०, [८] हैगुमीलापुन्नी, पृथ्वीजयन्ती,
 म. ४४१५ उ., मूले ४ भौमः ४३, [९] पूषायां ४ रविः ४१,
 म. १३१९ या., अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, श्रीश्वेतमत्स्येन्द्र-७
 गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती, अभिजितिविबुधः २८,
 [१०] नाथस्नानं (जगन्ध्वं), घ.पं.ति. ५८१२०, पूषायां ३ रविः २५, ७
 म. २१२० उ. २९१५० या., पुत्रदा ११ व्रतं, मन्वादिः, ७
 प्रदोषव्रतं, (मुस्यादुली), पूषायां १ भौमः ११, वक्रोबुधः १५,
 [११] उषायां १ रविः ५६, पश्चिमास्तोबुधः ३६,
 म. १२१४९ उ. ३९१५२ या., पूर्णिमाव्रतं, श्रीस्वस्थानीव्रतारंभः, ७
 माघस्नानारंभः, हनुमन्तीर्थत्रिवेणीमेला (चांगुनारायण-७)

अथस्वप्नविचार-स्वप्नमाधैरे विचार छ, अस्वस्थावस्थामा तर्कवितर्क धेरै चिन्ता अपशोच परेको अवस्थामा देखिएको स्वप्न प्रायः निष्फलहुन्छ, रात्रिको पूर्वभागमा देखिएको परीक्षफल परभागमा देखिएको प्रत्यक्ष फल मिल्छ। शुभाशुभमा-शुभफल दिने यथा-नदी नाला या समुद्र पार गर्नु, आकाशमा उडनु ग्रहनक्षत्र तारा सूर्य चन्द्र मंडलदेखि घरमहल दरवारमा प्रवेश गर्नु, मदिगपान, वसा, मांसभक्षण, विष्टालेपन, रक्तलेपन गर्नु दहिभात खानु, श्वेतवस्त्र श्वेतलेपचन्दनादि लगाउनु, श्वेतवस्तु आभरणाले खुशीहुनु, देवताब्राह्मण राजाबाट कुनै मंगलवस्तु पाउनु, देवी स्वरूप असलस्त्री जाति देख्नु, वयल हात्ति पर्वत दुधआउने वृक्ष माथि चढ्नु, दर्पण आमिष वस्तु पाउनु, सेतो-फूलमाला कपडा लगाउनु, यस्तो स्वप्न देखियो भने घन ऐश्वर्य लाभ भई रोगनाश हुन्छ। अथ स्वप्नशान्ति-नराधो स्वप्न देखियो भने भरसक फेरि निदाउनु, उठेर जलाशयमा गएर स्नान गर्नु विद्वान् सज्जनलाई सुनाई आशीर्वाद लिनु पोपल गौको दर्शन यथाशक्य गौसुवर्ण द्रव्यदान स्वप्नाध्याय सन् वा पाठगर्नु अशुभफल नाश हुन्छ।

पापांशाः-श ९, रा २ के ८, १३ ग सू ५, १५
 ग मं ३, १७ ग सू ६, १९ ग मं ४, २० ग सू
 ७, २३ ग सू ८, २४ ग मं ५, २६ ग सू ९,

वक्रमार्गोदयास्तः-मं मा अ, बु २४ व २६
 अ प, बु मा उ, शु मा उ प, श १६ व उ,
 ग्रहाणां राशिप्रवेशः १३ ग शु ११,

| ३८ | सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| पौ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ४ | ९ |
| १३ | १२ | ५ | १० | ५ | २९ | २८ | १६ |
| ग | ५८ | २५ | ३६ | २७ | ३६ | ४९ | २९ |
| १ | १२ | ५९ | ३० | ३८ | ४ | ४८ | ३६ |
| ३३ | ६१ | ४४ | ५६ | १३ | ६४ | ० | ३ |
| २५ | २६ | ३ | १४ | २८ | ४६ | २५ | ११ |

| ३९ | सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| पौ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | ४ | ९ |
| २० | २० | १० | ६ | ७ | ७ | २८ | १६ |
| ग | ८ | ३७ | २१ | ३ | ३ | ४९ | ७ |
| १ | १३ | ३७ | ४३ | ५६ | ३५ | २३ | २१ |
| ३३ | ६१ | ४४ | २१ | १३ | ६२ | ० | ३ |
| २० | २६ | १८ | १२ | ४१ | ३९ | २२ | ११ |

| ४० | सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| पौ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | ४ | ९ |
| २७ | २७ | १५ | ६ | ८ | १४ | २८ | १६ |
| ग | १८ | ५१ | २९ | ४१ | १४ | ४३ | ४५ |
| १ | ५ | २७ | २७ | २७ | २१ | २४ | ५ |
| ३३ | ६१ | ४४ | २४ | १३ | ६० | १ | ३ |
| १८ | २४ | ३३ | ० | ५० | ० | ८ | ११ |

| रा | बु | बु | शु |
|----|----|---------|-----|
| ११ | १० | सू ९ मं | ७ |
| १२ | | ६ | |
| १ | | ३ | ५ श |
| २ | | ४ के | |

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|---------------|---------------------|-------|-------|---------|------|-------|-------|---------------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|
| २८ | सो | १ | ११३३ ५६१२६ | प्रा ७३३ ५१२८ | ति | ३०१३२ | सा | ७११ | वि | २४११० | तै | २८१४६ | घाता | क | २६१२२ | ६१५८ | 12 | |
| २९ | मं | ३ | ५११४७ | रा | ३१४१ | अ | २७१२५ | सा | ५१५६ | प्री | १७१७ | व | २३१५६ | आनन्दः | २७१२५ | २६१२४ | ६१५८ | 13 |
| १ | बु | ४ | ४८१७ | रा | २११३ | म | २५१२ | दि | ४१५९ | आ | १०१३७ | ब | १९१५० | चरः | सिं | २६१२६ | ६१५८ | 14 |
| २ | बु | ५ | ४५१२७ | रा | ११९ | पू | २३१३२ | दि | ४१२३ | सौ | ४१४९ ५९१५० | कौ | १६१३९ | गदः | ३८१२० | २६१२८ | ६१५८ | 15 |
| ३ | शु | ६ | ४३१५४ | रा | १२१३१ | उ | २३१६ | दि | ४११२ | अ | ५५१४६ | ग | १४१३२ | शुभः | कं | २६१२१ | ६१५८ | 16 |
| ४ | श | ७ | ४३१३६ | रा | १२१२४ | ह | २३१५१ | दि | ४१३० | सु | ५२१३९ | भ | १३१३५ | मृत्युः | ५४१४० | २६१२३ | ६१५८ | 17 |
| ५ | आ | ८ | ४४१३५ | रा | १२१४७ | चि | २५१४९ | दि | ५११७ | घृ | ५०१३३ | बा | १३१५६ | पशः | तु | २६१२६ | ६१५७ | 18 |
| ६ | सो | ९ | ४६१५१ | रा | ११४२ | स्वा | २९१२ | सा | ६१३४ | शू | ४९१२५ | तै | १५१३४ | छत्रः | तु | २६१२८ | ६१५७ | 19 |
| ७ | मं | १० | ५०११८ | रा | ३१४ | वि | ३३१२६ | रा | ८११९ | गं | ४९११० | व | १८१२६ | श्रीवत्सः | १७११४ | २६१३१ | ६१५७ | 20 |
| ८ | बु | ११ | ५४१४४ | रा | ४१५१ | अ | ३८१४९ | रा | १०१२९ | वृ | ४९१४१ | ब | २२१२५ | सौम्यः | वृ | २६१३३ | ६१५७ | 21 |
| ९ | बु | १२ | ५९१५३ | रा | ६१५४ | ज्ये | ४४१५७ | रा | १२१५६ | धृ | ५०१४४ | कौ | २७११५ | कालः | ४४१५७ | २६१३६ | ६१५७ | 22 |
| १० | शु | १३ | ६०१० | | समस्त | मू | ५११२९ | रा | ३१३२ | व्या | ५२१४ | ग | ३२१३६ | स्थिरः | घ | २६१३९ | ६१५६ | 23 |
| ११ | श | १३ | ५१२१ | प्रा | ९१५ | पू | ५७१५८ | रा | ६१७ | ह | ५३१२२ | भ | ३८१३ | मातङ्गः | घ | २६१४२ | ६१५६ | 24 |
| १२ | आ | १४ | १०१४१ | दि | १११२२ | उ | ६०१० | | समस्त | च | ५४१२० | च | ४३१९ | अमृतः | १४१३३ | २६१४५ | ६१५६ | 25 |
| १३ | सो | ३० | १५१२७ | दि | ११६ | उ | ४१२ | प्रा | ८१३२ | सि | ५४१४३ | किं | ४७१३१ | मृत्युः | म | २६१४८ | ६१५५ | 26 |

| | |
|--|---|
| [७ त्रिदिवसीय मेला (घ्योचाकूसल्हु), माघीपर्व, काशीस्थ | ७ |
| पूषायां २ भौमः ३८, पश्चिमास्तोगुरुः १९, | |
| भ. २३१५६ उ. ५११४७ या. [७ विश्वयोगदिवसः, | |
| उषायां २मकरेऽर्कः १११३५, माघसंक्रान्तिः, उत्तरायणारंभः ७ | |
| [७ रविः २७, पूषायां ३ भौमः ४, श्रवणे १ गुरुः ९, पूषायां शुक्रः २६, | |
| भ. ४३१५४ उ. [७ बुधः ५८१४७, अभिजितित्यागः गुरुः ५७, | |
| भ. १३१३५ या., द्विपुष्करः २३१५१ उ. ४३१३६ या., उषायां ३ ७ | |
| अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, [७ बडागणेशजन्मजयंती ७ | |
| कुंभेसायनार्कः ४६, [७ त्रिवेणीमेला आर्यघाटमाघवनारायणमेला, | |
| भ. १८१२६ उ. ५०११८ या., उषायां ४ अभिजितिरविः ४३, धनुषि ७ | |
| षट्तिला ११ व्रतं, पूषायां ४ भौमः २९, [७ पूर्वोदितो बुधः ३१ | |
| [७ शंखमूलस्नानं देवघाटमकरस्नानं रुरु(रिडी)क्षेत्रे ७ | |
| प्रदोषव्रतं, श्रवणे १ रविः ५९, | |
| भ. ५१२१ उ. ३८१३ या. (लै चहेपूजा) अभिजित्त्रिवृत्तिः रविः ५९, | |
| दर्शश्राद्धं, निशीबार्ने उषायां १ भौमः ५३, पूषायां बुधः ४८, [७ | |
| स्नानदानादौ सोमवतीअमावास्या, हलोबार्ने, बुटवलक्षेत्रे ७ | |

[७] त्रिदिवसीय मेला (घ्योचाकूसल्लु) माघीपर्व, काशीस्थ ७
पूषायां २ भौमः ३८, पश्चिमास्तोगुरुः १९,
भ. २३१५६ उ. ५११४७ या. [८] विश्वयोगदिवसः,
उषायां २ मकरे ५३, माघसंक्रान्तिः, उत्तरायणारंभः, ७
[९] रविः २७, पूषायां ३ भौमः ४, श्रवणे १ गुरुः ९, पूषायां शुक्रः २६,
भ. ४३१५४ उ. [१०] बुधः ५८१४७, अभिजितित्यागः गुरुः ५७,
भ. १३१३५ या., द्विपुष्करः २३१५३ उ. ४३१३६ या., उषायां ३४
अष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, [११] बडागणेशजन्मजयंती, ७
कुंभेसायनांकः ४६, [१२] त्रिवेणीमेला आर्यघाटमाघवनारायणमेला,
भ. १८१२६ उ. ५०११८ या., उषायां ४ अभिजितिरविः ४३, धनुषि ७
षट्तिला ११ व्रतं, पूषायां ४ भौमः २९, [१३] पूर्वोदितो बुधः ३१,
[१४] शंखमूलस्नानं देवघाटमकरस्नानं रुह (रिडो) क्षेत्रे ७
प्रदोषव्रतं, श्रवणे १ रविः ५९,
भ. ५१२१ उ. ३८१३ या. (लै चहैपूजा) अभिजितिवृत्तिः रविः ५१,
दर्शश्राद्धं, निशीबार्ने उषायां १ भौमः ५३, पूषायां बुधः ४८, ७
स्नानदानादौ सोमवती अमावास्या, हलोबार्ने, बुटवलक्षेत्रे ७

मूलादिनक्षत्रे जननफल-मूलनक्षत्रको पहिला पाउले-बाबु, दोस्रोले-आमा, तेस्रोले-धन पिछ, चौथो-शुभ, अश्लेषाको-प्रथम-शुभ,
दोस्रोले-धन, तेस्रोले-आमा, चौथाले-बाबु पीछ। मूलाश्लेषाको-चतुर्थप्रथमले-मित्रमा अनिष्टगर्ह यो मत पनिभएकाले सबैमा शान्ति गर्न
योग्य छ। ज्योतिषान्त २ घटी मूलादिको २ घटी अभुक्त (कड़ा) मूल हुन्छ, यसमाजन्मेको बालकको ८ वर्ष बाबुलेमुख नहेर्नु यस्तो वचन
छ। मूल निवास त्यस्कोफल-आषाढ भाद्र आश्विन माघमा स्वर्ग फल- राज्यलाम, श्रावण कार्तिक पौष चैत्रको मूल मर्त्यलोके फल-
शून्यम्, वैशाख ज्येष्ठ मार्गशीर्ष फाल्गुनको मूल पाताले फल-धनलामः।

पापांशाः -श ९, रा २ के ८, २८ ग मं ६,
१ ग सू १०, ४ ग सू ११ मं ७, ७ ग सू १२,
८ ग मं ८, १० ग सू १, १२ ग मं ९,

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा अ, बु व १२ उ
पू, बू मा २८ अ, शु मा उ प, श व उ,
ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ ग सू १०,

| | | |
|---|-----------------------------------|---|
| चन्द्रशेखर उपाध्याय धार्मिक पुस्तक पसल कुरमा, पर्वत | पंचांग प्राप्तिस्थान | धार्मिक पुस्तक पसल मेनरोड, नारायणगढ़ |
| श्रेष्ठ न्यूज एजेन्सी पाल्पा, तानसेन | उज्ज्वल स्टेशनर्स नेपालगञ्ज | नेशनल बुक सेन्टर भोटाहिटी, काठमाण्डौ |

| ४१ | सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. | ४२ | सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| मा | ९ | ८ | ९ | ९ | १० | ४ | ९ | मा | ९ | ८ | ८ | ९ | १० | ४ | ९ |
| ५ | ४ | २१ | २ | १० | ३१ | २८ | १५ | १२ | ११ | २६ | २६ | ११ | २७ | २८ | १५ |
| ६ | २७ | ७ | १ | १९ | ४ | ३२ | २२ | १३ | २५ | ४७ | ५८ | २६ | १५ | ० | |
| १ | ३३ | २५ | १८ | ४१ | १ | १ | ५० | १ | २२ | २४ | ४८ | १४ | ४३ | ३१ | ३४ |
| ३३ | ६१ | ४४ | ५३ | १३ | ५६ | १ | ३ | ३३ | ६१ | ४४ | ३५ | १३ | ५२ | २ | ३ |
| १९ | २० | ४६ | ५१ | ५५ | ३९ | ५३ | ११ | २३ | १४ | ५९ | ५१ | ५७ | २० | ३५ | ११ |

| | | |
|-------|----------|------|
| ११ शु | सू १० | ९ मं |
| १२ | बु बु रा | ८ |
| १ | ७ | |
| २ | ४ के | ६ |
| ३ | ५ श | |

श्री वि. सं. २०६५ श्री शाके १९३० ने. सं. ११२९ माघ शुक्ल पक्षः (सिल्लाथ्व) पा. श्र. रे. कृ. मृ. ति. ९, १० (जनवरी १ फरवरी २ सन् २००९) उत्तरायणं शिशिरर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः ३५

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्प | न. | घ.प. | बजेसम्प | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|-----|-------|------|-------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|---|
| १४ | मं | १ | १९/२० | दि | २/३९ | श्र | ९/१७ | दि | १०/३८ | व्य | ५४/२० | बा | ५०/५२ | लुम्बः | ४१/३१ | २६/५१ | ६/५५ | 27 | [७]मन्वादिः, श्रवणे४ रविः४८, [९]धनिष्ठायां १ रविः ५, |
| १५ | बु | २ | २२/१६ | दि | ३/४५ | घ | १३/३० | दि | १२/१८ | व | ५३/२ | तै | ५३/११ | मित्रः | कुं | २६/५४ | ६/५५ | 28 | चन्द्रोदयः, श्रीवल्लभजयंती, सोनमलोसारपर्व, द्विपुष्करः १९/२० उ. १ |
| १६ | बु | ३ | २३/३७ | दि | ४/२१ | श | १६/३२ | दि | १३/११ | प | ५०/४५ | व | ५३/५३ | वज्रः | कुं | २६/५७ | ६/५४ | 29 | मीनेशुक्रः ३२/४२, [१०] घ.पं.प्र. ४१/३१, श्रवणे २ रविः १५, |
| १७ | शु | ४ | २३/५० | दि | ४/२६ | पू | १८/१९ | दि | २/१३ | शि | ४७/२९ | ब | ५३/२७ | ध्वांक्षः | २/५९ | २/७० | ६/५४ | 30 | म.५३/५३ उ., शहीददिवसः [१२] पूर्वोदितो भौमः ३७, |
| १८ | श | ५ | २२/४७ | दि | ४/१० | उ | १८/५२ | दि | २/२६ | सि | ४३/१५ | कौ | ५१/४८ | धूम्रः | मी | २/७३ | ६/५३ | 31 | म.२३/५० या., तिलकुंदचौथी, श्रवणे३ रविः३१, उषायां २ मकरे भौमः १, |
| १९ | आ | ६ | २०/३४ | दि | ३/६ | रे | १८/१६ | दि | २/११ | सा | ३८/१८ | ग | ४९/१२ | वर्द्धः | १८/१६ | २/७६ | ६/५३ | 1 | श्रीपञ्चमी, वसंतश्रवणं, सरस्वतीपूजा, रतिकामपूजा, श्रवणे२ गुरुः२२, |
| २० | सो | ७ | १७/१७ | दि | १/४७ | अ | १६/३९ | दि | १/३२ | शु | ३२/१४ | भ | ४५/१८ | रक्षः | मे | २/७१० | ६/५२ | 2 | स्कन्द, घ.पं.नि.१८/१६, उषायां शुक्रः४०, (फरवरी २ ता.२८), २ |
| २१ | मं | ८ | १३/७ | दि | १/२७ | भ | १४/१९ | दि | १/२३ | शु | २५/४० | बा | ४०/४५ | मुसलः | २८/२४ | २/७१३ | ६/५२ | 3 | म.१७/१७ उ. ४५/१८ या., अचला ७, रथ ७ (लगलाच्युके), १ |
| २२ | बु | ९ | ८/१५ | दि | १/०९ | कृ | १०/५७ | दि | ११/१४ | ब्रं | १८/३३ | तै | ३५/३५ | सिद्धिः | वृ | २/७१७ | ६/५१ | 4 | भौमाष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, भीष्माष्टमी, उषायां ३ भौमः ३७, |
| २३ | बु | १० | ३/५० | दि | ५/३९ | रो | ७/१४ | दि | १/४४ | ऐं | ११/३३ | व | २९/५८ | उत्पातः | ३५/१३ | २/७२० | ६/५० | 5 | द्रोण नवमी, उषायां बुधः ४९, [१०] १५/२८, मार्गीबुधः ४७, |
| २४ | शु | १२ | ५/१८ | रा | ३/१७ | मृ | ३/१० | रा | ४/२६ | वै | ३/१७ | ब | २४/१६ | मानसः | मि | २/७२४ | ६/५० | 6 | म.२९/५८ उ. ५७/२९ या., स्मार्तानां भीमा ११ व्रतं, शत्यदशमी, |
| २५ | श | १३ | ४५/१८ | रा | १२/५६ | पु | ५/४५७ | रा | ४/४८ | प्री | ४७/३७ | कौ | १८/१२ | छत्रः | ४०/५६ | २/७२७ | ६/४९ | 7 | वैष्णवानां भीमा ११ ब्र., भीष्मद्वादशी, वटुमाघयात्रा (सन्धाहुली) १ |
| २६ | आ | १४ | ३९/४५ | रा | १०/४२ | ति | ५/११२ | रा | ३/१७ | आ | ४०/४ | ग | १२/२९ | श्रीवत्सः | क | २/७३१ | ६/४९ | 8 | शनिप्रदोषव्रतं, सौभाग्यशूर्पदानं, उषायां ४ अभिजितिभौमः ५८, |
| २७ | सो | १५ | ३४/४० | रा | ८/४० | अ | ४७/५८ | रा | १/५९ | सौ | ३२/५५ | भ | ७/१९ | सौम्यः | ४७/५८ | २/७३४ | ६/४८ | 9 | म. ३९/४५ उ., पूर्वोदितो गुरुः ५६, श्रीपशुपतेच्छायादर्शनम्, |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | म. ७/१९ या., पूर्णिमाव्रतं, श्रीस्वस्थानाव्रतसमाप्तिः, माघस्नान ७ |

अथ श्रीपंचम्यां हलप्रवाहो हलपूजाचेति शिष्टाचारः-सरस्वतीपूजा वसन्तोत्सवं च कारयेत्। सप्तमी रथसप्तम्यां गंगास्नानं महाफलम्।। सूर्यग्रहणं तुल्यास्तु शुक्लमाघस्य सप्तमी। अरुणोदयं बेलयां तस्या स्नानं महाफलम्।। माघे मासिसितेपक्षे सप्तमी कोटिमास्करा। कुर्यात्स्नानार्घ्यदानाम्यामायुरारोग्यं संपदः।। माघमासेनियमाः-भूमिशायी प्रातः प्रयागे वा गंगानदीतालाब अन्यतमे पुण्यतीर्थे प्रयागस्मरणेन स्नानं तन्मंत्रः-दुखदार्द्रिनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्। सूर्यार्घ्यदानम्-सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम। स्वतेजसा परिभ्रष्टं पार्षयातु सहस्रधा।। माघे-तिलस्नानं तिलतर्पणं तिलजलपानं तिलहोमं तिलदानं तिलभक्षणं भूमिशायी ब्रह्मचर्यं पालनं मुलकपरित्यागश्च कृत्वा इन्धन, कंबल, उपानह वस्त्राणि तैलकपास (रुईसीरक) सुवर्ण अन्नञ्च दानान्महाफलमिति।

| पंचांग | दुर्गा न्यूज सेन्टर | सभरेस्ट बुक्स | मुकेश |
|----------|--------------------------|-------------------|---------|
| प्राप्ति | न्यू रोड, काठमाण्डौ | नेपालगंज | प्रकाशन |
| स्थान | दुर्गा पुस्तक भण्डार | बिश्निकट स्टेशनरी | वाराणसी |
| | पशुपतिक्षेत्र, काठमाण्डौ | मोक्तारा | |

| ४३ सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|--------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| मा ९ | ९ | ८ | ९ | ११ | ४ | ९ |
| १९ १८ | १ | २५ | १३ | ३ | २७ | १४ |
| ग ४४ | ४५ | ३१ | ३६ | १४ | ५४ | ३८ |
| १ २२ | १९ | ३१ | ५० | ३४ | १८ | १८ |
| ३३ ६१ | ४५ | ९ | १३ | ४६ | ३ | ३ |
| ३१ ६ | १० | १२ | ५७ | ४३ | १३ | ११ |

| ४४ सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|--------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| मा ९ | ९ | ८ | ९ | ११ | ४ | ९ |
| २६ २५ | ७ | २९ | १५ | ८ | २७ | १४ |
| ग ५१ | ७ | १० | १५ | १६ | २८ | १६ |
| १ २० | २ | ३४ | ३१ | ५० | ५५ | १ |
| ३३ ६० | ४५ | ४८ | १३ | ३९ | ३ | ३ |
| ४१ ५७ | २१ | ३५ | ५४ | २१ | ४६ | ११ |



| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|-------|---------|-------|-------|------|-------|-------|---------------|---------|-------|-------|------|----|
| २८ | मं | १ | ३०१४ | सा | ६५३ | म | ४५१२५ | रा | १२५७ | शो | २६११६ | वा | ३१२९ ५८१२८ | कालः | सिं | २७१३८ | ६१४७ | १० |
| २९ | बु | २ | २६१३८ | सा | ५१२६ | पू | ४३१४४ | रा | १२१६ | अ | २०१७ | व | ५५११२ | स्थिरः | ५८१२८ | २७१४२ | ६१४६ | ११ |
| १ | बृ | ३ | २४१३ | दि | ४१२३ | उ | ४३१५ | रा | १२१० | सु | १५१५ | ब | ५३१९ | मातङ्गः | कं | २७१४५ | ६१४६ | १२ |
| २ | शु | ४ | २२१३५ | दि | ३१४७ | ह | ४३१३४ | रा | १२१० | घृ | १०१४५ | कौ | ५२११८ | अमृतः | कं | २७१४९ | ६१४५ | १३ |
| ३ | श | ५ | २२१२२ | दि | ३१४१ | चि | ४५११६ | रा | १२१५१ | शू | ७१२३ | ग | ५२१४३ | काणः | १४११७ | २७१५३ | ६१४४ | १४ |
| ४ | आ | ६ | २३१२६ | दि | ४१६ | स्वा | ४८११४ | रा | २११ | गं | ५१० | भ | ५४१२६ | लुम्बः | तु | २७१५७ | ६१४३ | १५ |
| ५ | सो | ७ | २५१४६ | दि | ५११ | वि | ५२१२४ | रा | ३१४० | वृ | ३१३७ | बा | ५७१२२ | मित्रः | ३६११५ | २८१० | ६१४३ | १६ |
| ६ | मं | ८ | २९११७ | सा | ६१२४ | अ | ५७१३६ | रा | ५१४४ | ध्रु | ३११० | तै | ६०१० | वज्रः | वृ | २८१४ | ६१४२ | १७ |
| ७ | बु | ९ | ३३१४५ | रा | ८१११ | ज्ये | ६०१० | समस्त | व्या | ३१३१ | तै | ११२६ | ध्वाक्षः | वृ | २८१८ | ६१४१ | १८ | |
| ८ | बृ | १० | ३८१५४ | रा | १०११४ | ज्ये | ३१३९ | प्रा | ८१८ | ह | ४१२९ | व | ६११७ | कालः | ३१३९ | २८१२२ | ६१४० | १९ |
| ९ | शु | ११ | ४४१२० | रा | १२१२३ | मू | १०१९ | दि | १०१४३ | व | ५१५० | ब | १११३८ | स्थिरः | घ | २८११६ | ६१३९ | २० |
| १० | श | १२ | ४९१३५ | रा | २१२८ | पू | १६१४३ | दि | १११९ | सि | ७११५ | कौ | १७१२ | मातङ्गः | ३३११८ | २८१२० | ६१३८ | २१ |
| ११ | आ | १३ | ५४११५ | रा | ४११९ | उ | २२१५५ | दि | ३१४७ | व्य | ८१२६ | ग | २२१२ | अमृतः | म | २८१२४ | ६१३७ | २२ |
| १२ | सो | १४ | ५८१२ | रा | ५१४९ | श्र | २८१२४ | सा | ५१५८ | व | ९१७ | म | २६११७ | सिद्धिः | म | २८१२८ | ६१३६ | २३ |
| १३ | मं | ३० | ६०१० | समस्त | घ | ३२१५३ | रा | ७१४५ | प | ९१४ | च | २९१३१ | उत्पातः | ०१४८ | २८१३२ | ६१३६ | २४ | |
| १४ | बु | ३० | ०१४२ | प्रा | ६१५१ | श | ३६११३ | रा | ९१४ | शि | ८१९ | किं | ३११३२ | मानसः | कुं | २८१३६ | ६१३५ | २५ |

भ. ५५१२२ उ.,

भ. २४१३ या., धनिष्ठायां ३ कुम्भेऽर्कः ३८१५६, फाल्गुन १

अभिजित्विचित्रिभौमः २८, १० मोनेसायनार्कः १७,

श्रवणे ३ गुरुः ३५, १० संक्रान्तिः, श्रवणे १ भौमः १९,

भ. २३१२६ उ. ५४१२६ या., त्रिपुष्करः ४८११४ उ., १०

अष्टमीव्रतं, श्रवणे २ भौमः ३८,

गोरखकालीपूजा, १० धनिष्ठायां ४ रविः ५७, पुनरभिजित्विबुधः ४०,

प्रजातंत्रदिवसः, श्रवणेबुधः १३, अभिजितित्यागः बुधः ५२, १०

भ. ६११७ उ. ३८१५४ या., शतभिषायां १ रविः १४,

विजया ११ व्रतं, श्रवणे ३ भौमः ५७, पूषायां ४ शनिः ३,

त्रिपुष्करः १६१४३ उ. ४९१३५ या., १० श्रवणे ४ भौमः १५,

भ. ५४११५ उ., प्रदोषव्रतं, शतभिषायां २ रविः ३३,

भ. २६११७ या., महाशिवरात्रि १४ व्रतं, (शिलाचहेपूजा),

दर्शश्राद्धं, निशी तथा हलोवाने, द्वापरयुगादिः, घ.पं.प्र.०१४८,

स्नानदानादौ अमावास्या, शतभिषायां ३ रविः ५१, १०

अथ चन्द्रदिग्ज्ञानः - मेष सिंह धनुमा पूर्व, वृष कन्या मकरमा दक्षिण, मिथुन

तुला कुम्भमा पश्चिम, कर्क वृश्चिक मीनमा उत्तरचन्द्रमा हुन्छन्। चन्द्रफल-सन्मुखे

अर्थलाभ, दाहिने सुखसंपत्ति, वामे धननाश, पृष्ठे अनिष्ट हुन्छ। चन्द्रवर्णज्ञानफलम् - मेष सिंह

वृश्चिके रक्त, फल-कलह, वृष कर्क तुला श्वेत, फल-सिद्धि, मीन धनु मिथुने पीत, फल शुभाशुभ,

कन्या मकर कुम्भ कृष्ण, फल-अशुभ, यस्तो जान्नु। भद्रावासफलम् - मेष वृष मिथुन

वृश्चिकका भद्रा स्वर्गमा फल-सौख्यम्, कर्क सिंह कुम्भ मीनका भद्रा मर्त्यलोकमा फल-

कार्यनाश, कन्या तुला धनु मकरमा भद्रा पातालमा फल-धनागम, यस्तो जान्नु।

योगिनीविचारः - ११९ पूर्व, २१२० उत्तर, ३१११ आग्नेय, ४११२ नैऋत्य, ५११३ दक्षिण, ६११४

पश्चिम, ७११५ वायव्य, ८१३० तिथिवाट ईशान्य योगिनी जान्नु, त्यसको फल सन्मुख वाम अशुभ,

पछाडी दाहिने शुभ।

पापांशाः - श ९, रा २ के ८, १ ग सू ७ मं १, ४ ग सू ८, ५ ग मं

२, ८ ग सू ९, ९ ग श ८ मं ३, ११ ग सू १०, १४ ग सू ११ मं ४,

४५ सू. मं. बु. बृ. शु. श. रा.

फा १० ९ ९ ९ ११ ४ ९

४ २ १२ ६ १६ १२ २७ १३

ग ५७ ३० ३१ ५३ १९ ० ५३

१ ७ २३ ४९ ५१ २ १ ४५

३३ ६० ४५ ७४ १३ २९ ४ ३

५४ ४६ ३० ५३ ४८ ३८ १४ ११

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा

उ पू, बु मा उ, शु मा उ प, श ब उ

४५ सू. मं. बु. बृ. शु. श. रा.

फा १० ९ ९ ९ ११ ४ ९

११ १० १७ १६ १८ १५ २६ १३

ग १ ५५ १६ ३१ २ २८ ३१

१ ३३ १३ ५७ २३ २१ २१ २९

३४ ६० ४५ ९१ १३ १७ ४ ३

९ ३३ ३८ १७ ३८ ० ३५ ११

| | |
|-------|------------|
| १२ शु | १२ त बु बु |
| १ | ११ सू |
| २ | ८ |
| ३ | ५ श |
| ४ के | ६ |

श्री वि.सं. २०६५ श्री शाके १९३० ने.सं. ११२९ फाल्गुनशुक्लपक्षः (चिल्लाख) पा. अ. कृ. ति. ९, १० पू. फा. (फावरी २ मार्च ३ सन् २००९) उत्तरायणं शिशिरर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः ३७

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|------|-------|------|-------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|
| १५ | बु | १ | २५ | प्रा | ७१२४ | पू | ३८११९ | रा | ९५३ | सि | ६१६ | बा | ३२१६ | मुद्रः | २२५५ | २८१४० | ६१३४ | 26 |
| १६ | शु | २ | २१११ | प्रा | ७१२५ | उ | ३९११० | रा | १०१३३ | सा | ३१३३ | तै | ३११४३ | ध्वजः | मी | २८१४४ | ६१३३ | 27 |
| १७ | श | ३ | ११० | प्रा | ६१५६ | रे | ३८१५१ | रा | १०१४ | शु | ५४१४३ | व | २९१५७ | घाता | ३८१५१ | २८१४८ | ६१३२ | 28 |
| १८ | आ | ५ | ५५११५ | रा | ४१३७ | अ | ३७१२८ | रा | ९१३० | ब्रं | ४९१७ | ब | २७१५ | आनन्दः | मे | २८१५२ | ६१३१ | 1 |
| १९ | सो | ६ | ५११० | रा | २१५३ | म | ३५१११ | रा | ८१३४ | ऐं | ४२१४९ | कौ | २३११५ | चरः | ४९१२८ | २८१५६ | ६१३० | 2 |
| २० | मं | ७ | ४६१२ | रा | १२१५३ | कृ | ३२१८ | सा | ७१२० | वै | ३५१५६ | ग | १८१३७ | गदः | वृ | २९११० | ६१२९ | 3 |
| २१ | बु | ८ | ४०१३३ | रा | १०१४१ | रो | २८१३३ | सा | ५१५३ | वि | २८१३६ | भ | १३१२२ | शुभः | ५६१३४ | २९११४ | ६१२८ | 4 |
| २२ | बु | ९ | ३४१४५ | रा | ८१२० | मृ | २४१३५ | दि | ४११६ | प्री | २०१५८ | बा | ७१४२ | मृत्युः | मि | २९११८ | ६१२७ | 5 |
| २३ | शु | १० | २८१४८ | सा | ५१५७ | आ | २०१२६ | दि | २१३६ | आ | १३१११ | तै | ११४८ | पद्मः | मि | २९११२ | ६१२५ | 6 |
| २४ | श | ११ | २२१५६ | दि | ३१३५ | पु | ६१२११ | दि | १२१५७ | सौ | ५१३५ | ब | ५०१५ | छत्रः | २१२२ | २९११७ | ६१२४ | 7 |
| २५ | आ | १२ | १७१२२ | दि | ११२० | ति | १२१३३ | दि | १११२४ | अ | ५०१३४ | कौ | ४४१४३ | श्रीवत्सः | क | २९१२१ | ६१२३ | 8 |
| २६ | सो | १३ | १२११६ | दि | ११११७ | अ | ९१११ | दि | १०१३ | सु | ४३१४९ | ग | ३९१५७ | सौम्यः | ९१११ | २९१२५ | ६१२२ | 9 |
| २७ | मं | १४ | ७१५१ | दि | ९१३० | म | ६१२९ | दि | ८१५७ | घृ | ३७१४१ | भ | ३५१५५ | कालः | सिं | २९१२९ | ६१२१ | 10 |
| २८ | बु | १५ | ४११६ | प्रा | ८१२ | पू | ४१३६ | प्रा | ८१११ | शू | ३२११७ | बा | ३२१४९ | स्थिरः | १९११६ | २९१३३ | ६१२० | 11 |

७ होलिकारंभः, चोरोत्थानं (चिस्वाये), पूभायां रविः २९, चन्द्रोदयः, ग्याल्पोलोसार, श्रवणं १ राहुस्थिति ३ केतुः ११, धनिष्ठायां बुधः २, म. २९५७ उ. ५८१३७ या., घ.पं.ति. ३८१५१, शतभिषायां ४ रविः १०, धनिष्ठायां भौमः ३३, श्रवणे ४ ७ गुरुः १, (मार्च ३ ता. ३१) वक्रोशुक्रः ५२, म. ४६१२ उ., त्रिपुष्करः ३२८ या., कुम्भेबुधः ११३७, म. १३१२२ या., बुधाष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, ७ धनिष्ठायां २ भौमः ५०, ७ पूभायां ३ रविः ९, म. ५५१४९ उ., शतभिषायां बुधः ५२, म. २२१५६ या., आमलकी ११ व्रतं, पूभायां २ रविः ४९, प्रदोषव्रतं, गोविन्दद्वादशी, विश्वनारीदिवसः, पूर्वस्तोबुधः ३६, ७ चीरदाहः, धनिष्ठायां ३ कुम्भेभौमः ६१२३, म. ७५१५ उ. ३५१५५ या., पूर्णिमाव्रतं, रात्रौ भद्रानन्तरं ७ मन्वादिः, होली १५ (होलीपुन्ही), तराईमा होली, ७

[७] होलिकारंभः, चोरोत्थानं, (चिस्वाये), पूभायां १ रविः २९, चन्द्रोदयः, ग्याल्पोलोसार, श्रवणे १ राहुस्तिष्ये ३ केतुः ११ धनिष्ठायां बुधः २, म. २९१५७ उ. ५८१३७ या., घ.प.नि. ३८१५१, शतभिषायां ४ रविः १०, धनिष्ठायां १ भौमः ३३, श्रवणे ४ [८] गुरुः १, (मार्च ३ ता. ३१) वक्रोशुक्रः ५२, म. ४६१२ उ., त्रिपुष्करः ३२१८ या., कुम्भेबुधः ११३७, म. १३१२२ या., बुधाष्टमीव्रतं, गोरखकालीपूजा, ७ धनिष्ठायां २ भौमः ५०, [९] पूभायां ३ रविः ९, म. ५५१४९ उ., शतभिषायांबुधः ५२, म. २२१५६ या., आमलकी ११ व्रतं, पूभायां २ रविः ४९, प्रदोषव्रतं, गोविन्दद्वादशी, विश्वनारीदिवसः, पूर्वास्तोबुधः ३६, [१०] चौरदाहः, धनिष्ठायां ३ कुम्भेभौमः ६१२३, म. ७१५१ उ. ३५१५५ या., पूर्णिमाव्रतं, रात्रौषट्पानन्तरं [११] मन्वादिः, होली १५ (होलीपुन्ही), तराईमा होली, ७

अथचौरभस्मधारमन्त्रः-वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वंपाहि नोदेवि भूते भूतिप्रदा भव॥ अथगृहनिर्माणमंडलेशानयनम्-स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तार संयुतम्। द्विगुणा चाष्टमिर्मक्तमण्डलाधिपठ्यते॥ इन्द्रोविष्णुर्यमोवायुः कुबेरोधूर्जटिस्तथा॥ विधाताविघ्नराजस्य मंडलेशः प्रकीर्तितः॥ रविशशिपरिवेषफलम्-रविशशिपरिवेशोद्वाद्य यामे च पीडा॥ रविशशिपरिवेशो-वृष्टिस्तावद्वितीये॥ रविशशिपरिवेशो धान्यनाशस्तृतीये॥ रविशशिपरिवेशच्छत्रभंगं चतुर्थे, तथापि श्वेत शुभकरज्येयं नीलवर्णमहावृष्टिः॥ कृष्णघृष्णादिवर्णनिष्ठ मितिज्ञेयम्॥ संक्रांत्यादौस्मानफलमाह-संक्रांतौ व्यतिपाते च ग्रहणं चन्द्रसूर्ययोः। पुण्ये स्नात्वा तु गंगायां कुलकोटिं समुद्धरेत्॥

| | | |
|-----------------------|---|--|
| पंचांग प्राप्ति स्थान | प्रेम बुक स्टोर मोटबुझ, मनिपुर, भारत | कृष्ण प्रसाद शर्मा पल्टन बजार, गुवाहाटी, भारत |
| | ओम्निसेन्ट बुक्स एण्ड स्टेशनर्स, बुटवल | |

| ४७ | सू. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| फा | १० | ९ | ९ | ९ | ११ | ४ | ९ |
| १८ | १७ | २३ | २७ | २० | १६ | २५ | १३ |
| ग | ४ | २१ | ३२ | ७ | ४ | ५४ | ९ |
| १ | २९ | २० | ९ | ३९ | ५१ | ४७ | १२ |
| ३४ | ६० | ४५ | १०१ | १३ | १ | ४ | ३ |
| २६ | २० | ४४ | १८ | २४ | १८ | ४८ | ११ |

| ४८ | सू. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| फा | १० | ९ | १० | ९ | ११ | ४ | ९ |
| २५ | २४ | २८ | ९ | २१ | १५ | २५ | १२ |
| ग | ५ | ४८ | ४२ | ४२ | ७ | २० | ४६ |
| १ | ५० | ३२ | ४७ | १० | ४० | १४ | ५६ |
| ३४ | ६० | ४५ | १०७ | १३ | १६ | ४ | ३ |
| ४४ | ६ | ४९ | १० | ६ | ११ | ५४ | ११ |

| | |
|-------|------------|
| १२ शु | १० बु वृ ग |
| १ | ११ सू |
| २ | ८ |
| ३ | ५ श |
| ४ के | ६ |

श्रीवि.सं.२०६५ श्रीशाके १९३० ने.सं.१९२९ चैत्रकृष्णपक्षः (चिल्लागा) पा.चि.वि.ज्ये.श्र.श.उभा. (मार्च ३ सन् २००९) उत्तरायण शिशिरर्तुः, वसन्तर्तुः, प्लवनामक संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | |
|----|-----|-----|------|---------|------|------|---------|------|------|------|------|-------|-------|-----------|-------|------|------|
| २९ | बु | १ | १४० | प्रा | ६५९ | उ | ३४३ | प्रा | ७४८ | गं | २७४५ | तै | ३०४७ | मातङ्गः | कं | २९३७ | ६१९९ |
| ३० | शु | २ | ०१३ | प्रा | ६२३ | ह | ३५६ | प्रा | ७५२ | वृ | २४८ | व | २९५६ | अमृतः | ३४१२९ | २९४१ | ६१९८ |
| १ | श | ३ | ०१९ | प्रा | ६१७ | चि | ५२३ | दि | ८२६ | घु | २१३२ | ब | ३०२२ | काणः | तु | २९४५ | ६१९७ |
| २ | आ | ४ | १५ | प्रा | ६४२ | स्वा | ८४ | दि | ९२९ | व्या | १९५५ | कौ | ३२५ | लुम्बः | ५५५१ | २९५० | ६१९६ |
| ३ | सो | ५ | ३२५ | प्रा | ७३७ | वि | ११५८ | दि | ११२ | ह | १९१६ | ग | ३५११ | मित्रः | वृ | २९५४ | ६१९५ |
| ४ | मं | ६ | ६५५ | दि | ८५९ | अ | १६५८ | दि | १११ | व | १९१८ | भ | ३९११ | वज्रः | वृ | २९५८ | ६१९४ |
| ५ | बु | ७ | ११२१ | दि | १०४५ | ज्ये | २२५० | दि | ३२० | सि | २०२१ | बा | ४३४९ | ध्वांक्षः | २२५० | ३०२ | ६१९३ |
| ६ | बु | ८ | १६२७ | दि | १२४६ | मू | २९१६ | सा | ५५४ | व्य | २१४२ | तै | ४९५ | धूम्रः | घ | ३०६ | ६१९२ |
| ७ | शु | ९ | २१४८ | दि | २५३ | पू | ३५५२ | रा | ८३१ | व | २३१३ | व | ५४२४ | वर्द्धः | ५२२९ | ३०१० | ६१९० |
| ८ | श | १० | २६५७ | दि | ४५६ | उ | ४२११ | रा | ११२ | प | २४३५ | ब | ५९१८ | रक्षः | म | ३०१५ | ६१९ |
| ९ | आ | ११ | ३१३० | सा | ६४४ | श्र | ४७५२ | रा | ११७ | शि | २५३१ | कौ | ६०१० | गदः | म | ३०१९ | ६१८ |
| १० | सो | १२ | ३५५९ | रा | ८१० | घ | ५२३७ | रा | ३१० | सि | २५४७ | कौ | ३१२९ | शुभः | २०२४ | ३०२३ | ६१७ |
| ११ | मं | १३ | ३७४० | रा | ९१० | श | ५६१५ | रा | ४३५ | सा | २५१३ | ग | ६३५ | मृत्युः | कुं | ३०२७ | ६१६ |
| १२ | बु | १४ | ३८५५ | रा | ९३९ | पू | ५८३८ | रा | ५३२ | शु | २३४२ | भ | ८३८ | पद्मः | ४३१० | ३०३१ | ६१५ |
| १३ | बु | ३० | ३८५३ | रा | ९३७ | उ | ५९४६ | प्रा | ५५८ | शु | २१११ | च | ९५ | छत्रः | मी | ३०३५ | ६१३ |

| |
|---|
| १७ दिवसः उभायां ३ रविः ३३, उभायां शुक्रः २४, पश्चिमास्तः ७ |
| वसन्तादिस्तैलाभ्यङ्गं, चूतपुष्पप्राशनं, श्रीनालामत्स्येन्द्रनाथ |
| म. २९५६ उ. ॥ १ स्थानं (नालान्दवं-चक्रयातधूलयात), |
| म. ०११ या., पूभायां ४ मीनेऽर्कः २९१२१, चैत्रसंक्रान्तिः ७ |
| १७ श्रीनालामत्स्येन्द्रनाथरथयात्रा (नालायात्रा), धनिष्ठायां ४ |
| धनिष्ठायां १ गुरुः १, ७ भौमः २३, पूभायांबुधः १६, |
| म. ६५५ उ. ३९११ या., उभायां १ रविः ५०, १७ शुक्रः १७. |
| बुधाष्टमीव्रतं, शतभिषायां १ भौमः ३८, १७ भौमः ५४, |
| गोरखकालीपूजा, शीतलाष्टमी (दू-दू-च्यां-च्यां), ७ |
| म. ५४१२४ उ., मेघसायनार्कः १२, १७ पूभायां ४ मीनेबुधः ४१३९, |
| म. २६५७ या., उभायां २ रविः ११, उभायांबुधः ३०, १७ घ.पं.प. २०१२४, |
| पापमोचनी ११ व्रतं, द्विपुष्करः ४७५२ उ., शतभिषायां ७ |
| वारुणीयोगः ५२३७ उ., देवपत्तने देशोद्धारपूजा विश्वमौसमदिवसः ७ |
| म. ३७४० उ., प्रदोषव्रतं, वारुणीयोगः ३७४० या. विध्वंसयामग, ७ |
| म. ८१२८ या., पिशाच १४, (पाशाचहंपूजा), |
| दर्शश्राद्धं, निशी तथा हलौबानं, मन्वादिः, अश्वः (घोडे) यात्रा |

[७] दिवसः उभायां ३ रविः ३३, उभायां शुक्रः २४, पश्चिमास्तः ७
 वसन्तादिसैलाभ्यङ्गं, चूतपुष्पप्राशनं, श्रीनालामत्स्येन्द्रनाथ
 म. २९५६ उ. [१] स्नान (नालान्धवं-चकयातधूलयात),
 म. ०१९ या., पूभायां ४ मीनेऽर्कः २९१२९, चैत्रसंक्रान्तिः, ७
 [७] श्रीनालामत्स्येन्द्रनाथश्चयात्रा (नालायात्रा), धनिष्ठायां ४
 धनिष्ठायां १ गुरुः १, [७] भौमः २३, पूभायां बुधः १६,
 म. ६५५ उ. ३९१९ या., उभायां १ रविः ५०, [७] शुक्रः १७,
 बुधाष्टमीव्रतं, शतभिषायां १ भौमः ३८, [७] २ भौमः ५४,
 गोरखकालीपूजा, शीतलाष्टमी (दू-दू-च्यां-च्यां), ७
 म. ५४२४ उ., मेघसायनार्कः १२, [७] पूभायां ४ मीने बुधः ४१३९,
 म. २६५७ या., उभायां २ रविः ११, उभायां बुधः ३०, [७] घ.पं.प्र. २०१२४,
 पापमोचनी ११ व्रतं, द्विपुष्करः ४७५२ उ., शतभिषायां ७
 वारुणीयोगः ५२३७ उ., देवपत्तने देशोद्धारपूजा, विश्वमौसमदिवसः, ७
 म. ३७४० उ., प्रदोषव्रतं, वारुणीयोगः ३७४० या. विश्वक्षयरोग, ७
 म. ८३८ या., पिशाच १४, (पाशाचहृपूजा),
 दर्शश्राद्धं, निशी तथा हलोवानं, मन्वादिः, अश्वः (घोडे) यात्रा,

अथचूतपुष्पप्राशनमन्त्रः-चूतमग्रं वसन्तस्य माकन्द कुसुमं तव। सचन्दनपिवाय्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये॥
 चैत्रकृष्णप्रतिपदामा चौरदाह गरेको भस्मधारणगर्भमन्त्र-वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वं पाहि नो देवि भूते भूति
 प्रदामव॥। अथसमयविचारः-चैत्रको अन्त्यमा अश्विनीनक्षत्रको दिनमा पानी परे चौमासाको अन्त्यमा सुखा पर्छ।

पापांशः-श ८, रा १ के ७, १ ग सू
 ४, १ ग मं ८, ४ ग सू ५, ५ ग मं ९,
 ८ ग सू ६, ९ ग मं १०, ११ ग सू ७,

वक्रमार्गोदयास्तः-मं मा उ, बु मा अ पू, बु
 मा उ, शु व ११ अ प, श व उ,
 ग्रहाणां राशिप्रवेशः १ ग सू १२, ६ ग बु १२,

| पंचांग प्राप्ति स्थान | | यन० बी० खत्री | | पुष्पाभ्युजिक सेन्टर | | योगेश कुमार, | |
|--------------------------------------|--|---------------------------------|--|----------------------|--|--------------|--|
| रमेश बुक डीपो, धरान | | यन० बी० खत्री | | पुष्पाभ्युजिक सेन्टर | | योगेश कुमार, | |
| विद्या बुक डिस्ट्रिब्यूटर, विराट नगर | | न्यू फ्रेंड्स कालोनी, नई दिल्ली | | | | बुटवल | |
| सत्यनारायण शर्मा, सत्यनारायण मन्दिर, | | | | | | | |
| विराट नगर | | | | | | | |

| ४९ | सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| चै | ११ | १० | १० | ९ | ११ | ४ | ९ |
| २ | १ | ४ | २२ | २३ | १२ | २४ | १२ |
| ग | ५ | १६ | २५ | १४ | १० | ४५ | २४ |
| १ | २९ | ३७ | १८ | २४ | १५ | ३० | ३९ |
| ३५ | ५९ | ४५ | ११० | १२ | ३१ | ४ | ३ |
| ३ | ५० | ५३ | ३ | ४३ | २३ | ५४ | ११ |

| ५० | सू. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| चै | ११ | १० | ११ | ९ | ११ | ४ | ९ |
| १ | ८ | ९ | ५ | २४ | ७ | २४ | १२ |
| ग | ३ | ४५ | २० | ४३ | ५० | ११ | २ |
| १ | २२ | २१ | ५० | ५० | ५३ | २ | २२ |
| ३५ | ५९ | ४५ | ११० | १२ | ३८ | ४ | ३ |
| २३ | ३५ | ५५ | २० | १७ | ० | ४७ | ११ |

| | | | | | | | |
|---|----|----|-----|----|----|----|----|
| १ | ११ | १० | ११ | ९ | ११ | ४ | ९ |
| २ | १ | ४ | २२ | २३ | १२ | २४ | १२ |
| ३ | ५ | १६ | २५ | १४ | १० | ४५ | २४ |
| ४ | २९ | ३७ | १८ | २४ | १५ | ३० | ३९ |
| ५ | ५९ | ४५ | ११० | १२ | ३१ | ४ | ३ |
| ६ | ५० | ५३ | ३ | ४३ | २३ | ५४ | ११ |

श्रीवि.सं.२०६५ श्रीशके १९३१ ने.सं.११२९ चैत्रशुक्लपक्षः (चौलाथ्व) पा. अ. कृ. ति. १०. पू. उ. चि. (मार्च ३ अप्रैल ४ सन् २००९) उत्तरायण वसंतर्तुः, शुभकृतनामक संवत्सरः

३९

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्प | न. | घ.प. | बजेसम्प | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|-----|-------|------|-------|-------|-------|-----------|-------|-------|------|----|
| १४ | शु | १ | ३७।३६ | रा | ९।५ | रे | ५९।४३ | रा | ५।५६ | ब्रं | १७।४१ | किं | ८।२५ | श्रीवत्सः | ५९।४३ | ३०।३९ | ६।२ | 27 |
| १५ | श | २ | ३५।९ | रा | ८।५ | अ | ५८।३५ | रा | ५।२७ | ऐं | १३।१५ | बा | ६।३२ | सौम्यः | मे | ३०।४४ | ६।१ | 28 |
| १६ | आ | ३ | ३१।४० | सा | ६।४० | भ | ५६।२९ | रा | ४।३६ | वै | ७।५७ | तै | ३।३३ | कालः | मे | ३०।४८ | ६।० | 29 |
| १७ | सो | ४ | २७।१९ | दि | ४।५५ | कृ | ५३।३६ | रा | ३।२५ | वि | १।५४ | ब | ५४।५१ | स्थिरः | १०।५२ | ३०।५२ | ५।५९ | 30 |
| १८ | मं | ५ | २२।१७ | दि | २।५३ | रो | ५०।८ | रा | २।१ | आ | ४८।१ | कौ | ४९।३२ | मातङ्गः | वृ | ३०।५६ | ५।५८ | 31 |
| १९ | बु | ६ | १६।४३ | दि | १२।३८ | मृ | ४६।१४ | रा | १२।२६ | सौ | ४०।३१ | ग | ४३।४७ | अमृतः | १८।१४ | ३१।० | ५।५७ | 1 |
| २० | बु | ७ | १०।५० | दि | १०।१६ | आ | ४२।७ | रा | १०।४६ | शो | ३२।४९ | म | ३७।४९ | काणः | मि | ३१।४ | ५।५६ | 2 |
| २१ | शु | ८ | ४।४९ | आ | ७।५० | पु | ३८।० | रा | ९।७ | अ | २५।६ | बा | ३१।४९ | लुम्बः | २४।२ | ३१।८ | ५।५४ | 3 |
| २२ | श | १० | ५३।१४ | रा | ३।११ | ति | ३४।७ | रा | ७।३२ | सु | १७।३१ | तै | २६।१ | मित्रः | क | ३१।१२ | ५।५३ | 4 |
| २३ | आ | ११ | ४८।५ | रा | १।६ | अ | ३०।३८ | सा | ६।८ | घृ | १०।१४ | व | २०।३६ | वज्रः | ३०।३८ | ३१।१६ | ५।५२ | 5 |
| २४ | सो | १२ | ४३।३६ | रा | ११।१८ | म | २७।४६ | दि | ४।५८ | शु | ३।२३ | व | १५।४६ | ध्वाक्षः | सिं | ३१।२० | ५।५१ | 6 |
| २५ | मं | १३ | ३९।५८ | रा | ९।४९ | पू | २५।४१ | दि | ४।६ | वृ | ५१।३२ | कौ | ११।४१ | धूम्रः | ४०।१८ | ३१।२४ | ५।५० | 7 |
| २६ | बु | १४ | ३७।१९ | रा | ८।४५ | उ | २४।३३ | दि | ३।३८ | घृ | ४६।४८ | ग | ८।३२ | वर्द्धः | कं | ३१।२८ | ५।४९ | 8 |
| २७ | बु | १५ | ३५।४८ | रा | ८।७ | ह | २४।३१ | दि | ३।३६ | व्या | ४३।० | भ | ६।२६ | रक्षः | ५४।५५ | ३१।३२ | ५।४८ | 9 |

१ घ.पं.ति.५९।४३,शतभिषायां३ भौमः१०,उभायां४ रविः५५, वत्सरारंभस्तैलाभ्यङ्गं, निम्बपत्रप्रारशनं,(चोवाहान्धवं),१

२ चन्द्रोदयः,रेवत्यांबुधः४६,पूर्वोदितःशुक्रः२२,७युलङ्गपोखरीमेलः, २८

३ भ.५९।३४उ., मत्स्यज, मन्वादिः, गौरीव्रतं, पूषायांशुक्रः५४, २९

४ भ.२७।१९या.७ श्रीहनुमज्जयं,वैशाखस्नानारम्भः,जालान्ज्यूमेलः, ३०

५ रेवत्यां१रविः१८,शतभिषायां४भौमः२५,७लुहितपुन्हि,लमजुङ्ग, ३१

६ घनि.२गुरुः७,(अप्रैल४ता.३०),७पूषायां३कुम्भेशुक्रः२४।५१, १

७ भ.१०।५० उ.३७।४९ या., पूषायां३ शनिः २९, २

८ चैत्राष्टमीव्रतं(चैतैदशै),गो.का.पूजा,अशोककलिकाष्टप्रारशनं, ३

९ फाल्गुनंदस्मृतिदिवसः,पूषायां१भौमः४०,७(लुहितस्नान-७ ४

१० भ.२०।३६उ.४८।५या.,कामदा११ब्र.,अधिन्यां१मेषेबुधः१५।५९, ५

११ ७भवान्युत्पत्तिः,श्रीश्वेतमत्स्येन्द्रनाथरयात्रा(जवयाँत),७ ६

१२ प्रदोषव्रतं,विश्वस्वास्थ्यदिवसः,महावीरजयंती,रेवत्यां३रविः४,७ ७

१३ भ.३७।१९ उ., पूषायांबुधः ५६, पूषायां २ भौमः ५६, ८

१४ भ.६।२६या.,पूर्णिमाव्रतं,देवीपूर्णिमा,देवीयात्रा, मन्वादिः, ९

[१] घ.पं.नि.५९।४३, शतभिषायां ३ भौमः १०, उभायां ४ रविः ५५, वत्सरारंभस्तैलाभ्यङ्गं, निम्बपत्रप्राशनं, (चोवाहान्धवं), १
 चन्द्रोदयः, रेवत्यां बुधः ४६, पूर्वोदितः शुक्रः १२, [७] युलुङ्गपोखरीमेला, २८
 भ.५९।३४ उ., मत्स्यज., मन्वादिः, गौरीव्रतं, पूभायां शुक्रः ५४, २९
 भ.२७।१९ या., [७] श्रीहनुमज्जयं., वैशाखस्नानारम्भः, बालाज्यमेला, ३०
 रेवत्यां १ रविः १८, शतभिषायां ४ भौमः २५, [७] लुहिपुन्हि, लमजुङ्ग, ३१
 धनि.२गुरुः ७, (अप्रैल ४ ता. ३०) [७] पूभायां ३ कुम्भेशुक्रः २४।५१, १
 भ. १०।५० उ. ३७।४९ या., पूफायां ३ शनिः २९, २
 चैत्राष्टमीव्रतं (चैतेदर्शं), गो.का.पूजा, अशोककलिकाष्टप्राशनं, ३
 फाल्गुनंदस्मृतिदिवसः, पूभायां १ भौमः ४०, [७] (लुहिस्नानं-६) ४
 भ.२०।३६ उ. ४८।५ या., कामदा ११ त्र., अधिन्यां १ मेषे बुधः १५।५९, ५
 [७] भवान्युत्पत्तिः, श्रीश्वेतमत्येन्द्रनाथरयात्रा (जवयांत), ६
 प्रदोषव्रतं, विश्वस्वास्थ्यदिवसः, महावीरजयंती, रेवत्यां ३ रविः ४, ७
 भ. ३७।१९ उ., पूभायां बुधः ५६, पूभायां २ भौमः ५६, ८
 भ.६।२६ या., पूर्णिमाव्रतं, देवीपूर्णिमा, देवीयात्रा, मन्वादिः, ९

अथनिम्बपत्रप्राशनमन्त्रः - सचन्दनानि पत्राणि निम्बस्य प्रपिवाग्यहम्। संवत्सर ममारोग्य भूयान्निम्बस्य भक्षणात्।
 अशोककलिकाष्टप्राशनमन्त्रः त्वमशोकवराभीष्ट मधुमास समुद्धव। पिवामि
 शोकसंतप्तो मामशोकं सदा कुरु। चैत्रशुक्लाष्टमी श्रीभवानीको उत्पत्ति दिन यसलाई
 चैतेदर्शं मान्ने चलन पनि छ, यसमा ब्रह्मपुत्रनदीको स्नान अशोकवृक्षको मजुरा
 खानेमहात्म्य छ। तदुक्तञ्च-मीने मधौ शुक्लपक्षे अशोकाख्यां तथाष्टमीम्।
 पिवेदशोक कलिकाः स्नायात्लौहित्यवारिणि। लौहित्यो ब्रह्मपुत्रः॥ यो त्रयोदशीमा
 कामदेवको शालग्राम बज्जलमा पूजा गर्नाले सुखभोगमिल्दछ।

| पंचांग | जनता बुक स्टाल | गोर्खा पत्र छाजे |
|----------|-------------------------|--------------------|
| प्राप्ति | घोराही, दाङ्ग | महेन्द्रपुल, पोखरा |
| स्थान | टिक्की स्टेशनर्स, बुटवल | |

पापांशाः - श ८, रा १ के ७, १४ ग
 मं ११ सू ८, १८ ग सू ९ मं १२, २१
 ग सू १०, २० ग श ७, २२ ग मं १,
 २५ ग सू ११, २६ ग मं २,

वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा अ पू,
 बु मा उ, शु व १५ उ पू, श व उ,

ग्रहाणां राशिप्रवेशः
 २३ ग बु १, २५ ग शु ११,

| ५१ सू. मं. बु. वृ. शु. श. रा. | ५२ सू. मं. बु. वृ. शु. श. रा. |
|-------------------------------|-------------------------------|
| चै ११ १० ११ ९ ११ ४ ९ | चै ११ १० ० ९ ११ ४ ९ |
| १६ १४ १५ १८ २६ ३ २३ ११ | २३ २१ २० ० २७ ० २३ ११ |
| ग ५९ १४ १० ८ २९ ३७ ४० | ग ५३ ४३ ३४ ३१ २८ ६ १७ |
| १ २५ २६ १४ ५४ ५७ ४१ ६ | १ ४० ३९ ३९ ५९ १८ २३ ४९ |
| ३५ ५९ ४५ १०८ ११ ३२ ४ ३ | ३६ ५९ ४५ १०२ ११ १७ ४ ३ |
| ४२ १९ ५५ ४ ४६ ८ ३२ ११ | २ २ ५३ ४९ १० ३१ १० ११ |

| | |
|------|-------|
| १ | ११ मं |
| २ | सू १२ |
| ३ | बु शु |
| ४ के | ९ |
| ५ श | ६ |
| ७ | ८ |

श्री वि.सं.२०६५ श्री शाके १९३१ ने.सं.११२९ वैशाखकृष्ण पक्षः (चौलागा) पा. चि. ज्ये. (अप्रैल ४ सन् २००९) उत्तरायण वसंतर्तुः, शुभकृत नामक संवत्सरः

| ग. | वा. | ति. | घ.प. | बजेसम्म | न. | घ.प. | बजेसम्म | यो. | घ.प. | क. | घ.प. | योगा: | च.रा. | दि.मा. | सू.उ. | ता. | | |
|----|-----|-----|-------|---------|-------|------|---------|-----|-------|-----|-------|-------|-------|---------|-------|-------|------|----|
| २८ | शु | १ | ३५।३२ | रा | ८।० | चि | २५।४० | दि | ४।३ | ह | ४०।११ | बा | ५।३२ | मुसलः | तु | ३१।३६ | ५।४७ | 10 |
| २९ | श | २ | ३६।३२ | रा | ८।२३ | स्वा | २८।४ | दि | ४।५९ | व | ३८।२२ | तै | ५।५४ | सिद्धिः | तु | ३१।४० | ५।४६ | 11 |
| ३० | आ | ३ | ३८।४८ | रा | ९।१६ | वि | ३१।४२ | सा | ६।२५ | सि | ३७।३२ | व | ७।३२ | उत्पातः | १५।४१ | ३१।४४ | ५।४५ | 12 |
| ३१ | सो | ४ | ४२।१२ | रा | १०।३७ | अ | ३६।२७ | रा | ८।१९ | व्य | ३७।३६ | ब | १०।२३ | मानसः | वृ | ३१।४८ | ५।४४ | 13 |
| १ | मं | ५ | ४६।३३ | रा | १२।२० | ज्ये | ४२।८ | रा | १०।३४ | व | ३८।२३ | कौ | १४।१८ | मुद्गरः | ४२।८ | ३१।५२ | ५।४३ | 14 |

१. भ.पु. विश्वध्वजोत्थानम् २. यात्रा, भ.पु. भैरवभद्रकालीयात्रा ३. ल.पु. श्रीमत्स्येन्द्रनाथस्नानं (तुगन्हवं), विशालनगरे श्रीवैष्णवीदेवी ४. त्रिपु. २८।४८.३६।३२ या. पश्चिमोदितोबुधः ४३ ५. रेवत्यां ऋविः २८, ३० ६. ७।३२ उ. ३८।४८ या., साखुयात्रा (सकोयात), मार्गाशुक्रः ४४, ४५ ७. अश्विन्यां श्रमेष्टः ५१।५५, पूभायां ३ भौमः १२, भरण्यां बुधः २१ ८. वैशाखसंक्रान्तिः, भ.पु. विश्वध्वजपातनं, नववर्षारंभः (खायुसन्हु)

१. भ.पु. विश्वध्वजोत्थानम् २. यात्रा, भ.पु. भैरवभद्रकालीयात्रा ३. ल.पु. श्रीमत्स्येन्द्रनाथस्नानं (तुगन्हवं), विशालनगरे श्रीवैष्णवीदेवी ४. त्रिपु. २८।४८.३६।३२ या. पश्चिमोदितोबुधः ४३ ५. रेवत्यां ऋविः २८, ३० ६. ७।३२ उ. ३८।४८ या., साखुयात्रा (सकोयात), मार्गाशुक्रः ४४, ४५ ७. अश्विन्यां श्रमेष्टः ५१।५५, पूभायां ३ भौमः १२, भरण्यां बुधः २१ ८. वैशाखसंक्रान्तिः, भ.पु. विश्वध्वजपातनं, नववर्षारंभः (खायुसन्हु)

[१] भ.पु.विश्वध्वजोत्थानम्, [२] यात्रा, भ.पु.भैरवभद्रकालीयात्रा, [३] ल.पु.श्रीमत्तयेन्द्रनाथस्नानं (तुगहव), विशालनगरे श्रीवैष्णवीदेवी, [४] त्रिपु.२८।४८.३६।३२या., पश्चिमोदितोबुधः ४३, [५] रेवत्या ४४विः २८, [६] म.७।३२उ.३८।४८या., साखुयात्रा (सकोयात), मार्गशुक्रः ४४, [७] अश्विन्यां १ मेषे ५१।५५, पूषायां ३ भौमः १२, भरण्यां बुधः २१, [८] वैशाखसंक्रान्तिः, भ.पु.विश्वध्वजपातनं, नववर्षारंभः (खायुसल्लु).

आय-व्यय चक्रम्

| राशयः | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | घ. | म. | कुं. | मी. | |
|-------|-----|-----|-----|----|------|-----|-----|-----|----|----|------|-----|------------|
| आयः | ११ | ५ | ११ | ५ | ८ | ११ | ५ | ११ | ८ | २ | २ | ८ | विंशोत्तरी |
| व्ययः | १४ | ८ | ५ | २ | १४ | ५ | ८ | १४ | ५ | ८ | ८ | ५ | |
| आयः | १४ | ८ | ११ | ५ | ८ | ११ | ८ | १४ | २ | ५ | ५ | २ | अष्टोत्तरी |
| व्ययः | २ | ११ | ८ | ८ | २ | ८ | ११ | २ | ११ | ५ | ५ | ११ | |

अथ आय-व्यय हेतुं तरिका- लाभव्ययौ समौकत्वा एकहीननु कारयेत्। अष्टभिस्तु हरेर्द्धागं शेषां फलमादिशेत्।।
आय-व्यय जोडो १ घटाए ८ ले भागदिनु शेषबाट निम्नफल जानु- १ लाभ, २ सौख्य, ३ क्लेश, ४ रोग, ५ लोकापवाद, ६ सम्मान, ७ विजय, ८ हानि यस्तो फल जानु। विन्याचलबाट दक्षिण अष्टोत्तरीबाट, उत्तर विंशोत्तरीय विचार गर्नु। नेपाल विन्याचलबाट उत्तरपरे हुनाले विंशोत्तरीबाट विचार गर्नु।

मेषतुलाविषुवत् (संक्रान्ति दोष) को शान्ति- विशेषतः वार्यो गोडामा पर्नेहरूले गङ्गा स्नान, नारायण पूजा, रुद्रीपाठ-जलधारा, दुर्गासप्तशती पाठ आदि गरी घिउ, मह

मेष संक्रान्ति तो यावत्सह मासं विषुवत्फलम्।
तुला संक्रान्ति तत्रैव ज्ञातव्यं विषुवैः स्फुटम्।।

| मेषविषुवच्चक्रम् | फलको भयोः | तुलाविषुवच्चक्रम् |
|---|--|---|
| भ.कृ.रो.मू.आ.पु.ति. उभा.रे.अ. उभा.श्र.घ.श.पू.षा. ज्ये.मू.पू.षा. स्वा.वि.अनु. उफा.ह.चि. अ.म.पू.फा. | शौर्ष-भूलाभः मुखे-पाण्डित्यम् हृदि-धनागमः दक्षकरे-स्त्रीलाभः वामकरे-पैश्वर्यम् दक्षपादे-धर्मणम् वामपादे-कष्टम् | श.पू.षा.उभा.रे.अ.भ.कृ. उभा.श्र.घ. वि.अनु.ज्ये.मू.पू.षा. ह.चि.स्वा. म.पू.फा.उफा. पु.ति.अ. रो.मू.आ. |

चिनी र डुम्रीले हवन गरी ब्राह्मण र कन्या-हरूलाई द्रव्य-दान दक्षिण र भोजन गराउनाले शान्ति मिल्दछ। वैशाख संक्रान्ति देखि ६ महिना मेषविषुवत् चक्र-बाट र कार्तिक संक्रान्ति देखि ६ महिना तुलाविषुवत् चक्रबाट विचार-गर्नु पर्दछ।

यता पनि हेर्ने त ?

हामीबाट लेखिएका सिर्जना पुस्तक मालाका निम्न पुस्तकहरू र दुमी (सेतोदाग) को औषधी अब उपलब्ध छ।

| | | |
|--|--------|-------|
| १. स्तोत्र पुष्पाञ्जलि (स्तोत्रहरूको संग्रह) | ने.रु. | १०/= |
| २. कर्तव्य दर्पण (मानवधर्म रहस्य दर्शन) | " | ४०/= |
| ३. दिव्यमधु (मौरीको गुतासो-कविता संग्रह) | " | १०/= |
| ४. श्राद्धपद्धति (नेपाली भाषाटीका सहित) | " | ५८/= |
| ५. मानवधर्म (पद्यमा) | " | ८/= |
| ६. अष्टावक्र गीता (नेपाली पद्यानुवाद सहित) | " | ४०/= |
| ७. आनन्द दीपिका (मन-बुद्धि प्रश्नोत्तरी) | " | ५/= |
| ८. हिंसक कृषक तुलना (मासु र हलौको तुलना) | " | १५/= |
| ९. अन्त्यकर्म पद्धति (नेपाली भाषा टीका सहित) | " | ५५/= |
| १०. ज्ञानरत्नमाला (पद्यमा) | " | ३५/= |
| ११. संसारदेखि लाग्छ सारै उराठ (पद्यमा) | " | १५/= |
| १२. गुलाफको फूल र मौरीहरू (साथरी संग्रह) | " | ३०/= |
| १३. आयुर्वेद सार दर्पण (घरेलु वैद्य) | " | १९०/= |
| (दुमीको औषधीसमेत लेखिएको पुस्तक) | " | १९०/= |

| | | |
|---|---|------|
| १४. सिद्धगणेशस्तोत्रम् (श्रीगणेशस्तोत्रावली) | " | ६०/= |
| १५. पाञ्चायन स्तोत्राञ्जलि | " | ५५/= |
| १६. धर्मोपदेशमाला (पद्यमा) | " | २५/= |
| १७. अग्निस्थापना पद्धति (ने.भा.टी. सहित) | " | ५०/= |
| १८. चूटकिला (चुटका) भजन संग्रह | " | |
| श्रीकृष्ण चरित्र र हरितालिका महात्म्य (तीजको गीतको भाकामा) | " | १५/= |
| १९. तिलक रहस्य दर्पण | " | ५५/= |
| २०. गजेन्द्रमोक्षस्तोत्रम् (ने.भा.टी.) | " | २५/= |
| २१. गोदान, तुलादान र दशदानपद्धति (ने.भा.टी.) | " | --/= |
| २२. सत्यनारायण पूजाविधि (ने.भा.टी.) | " | --/= |
| २३. कलियुग (हास्य व्यङ्ग्य) साथमा सूचीपत्र | " | ६२/= |
| यी पुस्तकहरू वाराणसीका कुनै पनि नेपाली पुस्तक विक्रेता-सँगबाट पनि प्राप्त गर्न सक्नुहुनेछ। पत्राचारको लागि ठेगाना : ओमप्रकाश अधिकारी जिल्ला नवलपरासी, गा.वि.स. + हुलाक अग्यौली, वडा नं. ८ ढण्डा, गोर्खतीचोक, (नवलपुर), लु.अ. (नेपाल) | | |

पापांशाः -श ७, रा १
के ७, २८ ग सू १२, ३१
ग सू १ मं ३,
वक्रमार्गोदयास्तः - मं मा उ, बु मा
२९ उ, बु मा उ, शु ३० मा उ, शव उ,
ग्रहाणां राशिप्रवेशः ३१ ग सू १,

| १ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| चै | ० | १० | ० | १ | १० | ४ | ९ |
| ३१ | ० | २७ | १४ | २९ | २९ | २२ | १० |
| ग | ० | ११ | ६ | २ | २६ | ३३ | ४८ |
| २ | ० | १८ | ५२ | ५२ | २४ | १३ | २१ |
| ५१ | ५८ | ४५ | ११ | १० | २ | ३ | ३ |
| ५५ | ४३ | ४७ | १४ | २१ | ३७ | ३६ | ११ |

| | | | |
|---------|---|-------|-------|
| ३ | २ | १२ | ११ मं |
| सू १ बु | | | शु |
| ४ के | | बृ १० | |
| ५ श | ७ | रा | ९ |
| ६ | | ८ | |

दक्षिण एशियाली ज्योतिष महासंघ राष्ट्रिय समिति नेपालको सूचना-यस समितिले ज्योतिषविद्यालाई प्राज्ञिक तथा व्यावसायिक विषयको रूपमा स्थापित गर्ने उद्देश्यले विभिन्न गतिविधिहरू संचालन गरिरहेको छ। यस सन्दर्भमा सबै ज्योतिषीहरू संगठित हुनुपर्ने आवश्यकता रहेकाले महासंघको सदस्यता लिई आफ्नो हक-हितको संरक्षणका लागि ऐक्यबद्धता जनाउन नेपाल अधिराज्यभरि क्रियाशील सबै ज्योतिषकर्मीहरूलाई हार्दिक आह्वान गरिन्छ। इच्छुक व्यक्तिहरूलाई ज्योतिष प्रशिक्षणको पनि व्यवस्था छ। पो.व.नं. २५३०० पुतलीसडक, काठमाण्डौ